मूल्य :- अमूल्य

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका

TEACHERS OF BIHAR

प्रज्ञानिका

देश की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्यूनिटी

7 साल का बेमिसाल सफ़र

शिक्षक गाथा

विद्यालय गाथा

डिजिटल दुनिया

नवाचार

छात्र गाथा

NEP : नया सवेरा

ई-पत्रिका प्राप्त करने के लिए QR कोड को स्कैन या क्लिक करें|

अस्वीकरण / कॉपीराइट सूचना

प्रज्ञानिका एक त्रैमासिक ई-शैक्षिक पत्रिका है, जिसका प्रकाशन टीचर्स ऑफ़ बिहार (Teachers of Bihar) द्वारा किया जाता है। इस पत्रिका का उद्देश्य शिक्षा से जुड़े अनुभवों, नवाचारों तथा शिक्षकों की रचनात्मक अभिव्यक्तियों को पाठकों तक पहुँचाना है।

इस पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख, कहानियाँ, चित्र तथा अन्य सामग्री के सर्वाधिकार संबंधित लेखक एवं प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। टीचर्स ऑफ़ बिहार की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस पत्रिका के किसी भी भाग को किसी भी रूप में—जैसे इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य माध्यम से—पुनः प्रकाशित, संग्रहित या प्रसारित करना प्रतिबंधित है।

यह पत्रिका केवल पठन एवं शैक्षिक उद्देश्यों के लिए निःशुल्क उपलब्ध कराई गई है। इसका किसी भी प्रकार से व्यावसायिक उपयोग या विक्रय करना वर्जित है।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखक/ रचनाकार के व्यक्तिगत विचार हैं। इनके लिए पूर्णतः लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं; इन विचारों से प्रकाशक या संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शुभकामना संदेश

कौशल कुमार
राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्
पटना

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता और गर्व का विषय है कि 'टीचर्स ऑफ बिहार' मंच द्वारा शैक्षिक ई-पत्रिका 'प्रज्ञानिका' का निरंतर एवं सफल प्रकाशन किया जा रहा है। शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों और कक्षाओं के सीमित दायरे तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह निरंतर सीखने, नवाचार करने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की एक जीवंत यात्रा है। 'प्रज्ञानिका' ने बिहार के शैक्षिक परिदृश्य में हो रहे इसी सकारात्मक बदलाव, जमीनी प्रयासों और रचनात्मकता को एक सशक्त पहचान प्रदान की है।

राज्य के दूर-दराज के विद्यालयों में घटित हो रही प्रेरणादायी कहानियों, शिक्षकों के अनूठे प्रयासों और विद्यार्थियों की उपलब्धियों को जिस आत्मीयता से इस पत्रिका में प्रस्तुत किया जाता है, वह अत्यंत सराहनीय है। इसके साथ ही साहित्य, खेल, स्वास्थ्य, समसामयिक गतिविधियों तथा ज्ञान-विज्ञान के विविध विषयों का समावेश इसे पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रासंगिक बनाता है।

'प्रज्ञानिका' के माध्यम से बिहार के शिक्षकों की रचनात्मकता, नवाचार और अनुभवों को एक साझा मंच मिल रहा है। मेरा विश्वास है कि ऐसे प्रयास शिक्षकों को एक-दूसरे से सीखने, अपने अनुभव साझा करने तथा विद्यालयी शिक्षा में नए प्रयोग करने के लिए प्रेरित करते हैं।

मैं 'टीचर्स ऑफ बिहार' की पूरी संपादकीय टीम, समर्पित शिक्षकों एवं सभी सहयोगी सदस्यों को इस उत्कृष्ट एवं निष्ठापूर्ण प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'प्रज्ञानिका' का यह अंक भी बिहार के शिक्षकों, शिक्षार्थियों एवं शिक्षा से जुड़े सभी लोगों के बीच नई ऊर्जा और प्रेरणा का संचार करेगा तथा शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार एवं सकारात्मक बदलाव को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

'प्रज्ञानिका' के सफल प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

शुभकामना संदेश

अमरेंद्र कुमार पाण्डेय
जिला शिक्षा पदाधिकारी
गोपालगंज

'टीचर्स ऑफ बिहार' की शैक्षणिक ई–पत्रिका 'प्रज्ञानिका' के नवीन अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।
विद्यालय केवल ज्ञान देने के केंद्र नहीं हैं, बल्कि ये भावी समाज की नींव गढ़ते हैं। 'प्रज्ञानिका' ने हमारे ज़िले और राज्य की कक्षाओं में प्रतिदिन जन्म ले रहे नए विचारों, प्रयोगों और सफलताओं को हर किसी तक पहुँचाने का अद्भुत कार्य किया है।
जब किसी एक विद्यालय की सफलता या किसी शिक्षक का नया प्रयोग इस पत्रिका के माध्यम से सामने आता है, तो वह पूरे ज़िले के शैक्षणिक वातावरण में एक सकारात्मक प्रतिस्पर्धा और उत्साह भर देता है। ज्ञान, कला और अनुशासन का यह संगम हमारे शिक्षकों को पढ़ाते रहने और विद्यार्थियों को सीखते रहने की नई प्रेरणा देता है।

ज़मीनी धरातल पर बदलाव ला रहे इस सशक्त प्रयास के लिए 'टीचर्स ऑफ बिहार' की पूरी टीम साधुवाद की पात्र है।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह अंक भी हर पाठक के चिंतन को नई दिशा देगा और शिक्षा की गुणवत्ता को और मजबूत बनाएगा। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं सफल प्रकाशन हेतु ढेरों शुभकामनाएँ।

सुजीत कुमार दास
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी
सीतामढ़ी

सीतामढ़ी की पावन एवं ऐतिहासिक धरा से 'टीचर्स ऑफ बिहार' की संपूर्ण टीम को ई–पत्रिका 'प्रज्ञानिका' के नवीन अंक हेतु हार्दिक बधाई!
शैक्षणिक गतिविधियों का मूल ध्येय केवल पाठ्यक्रम पूरा कराना नहीं, बल्कि हर बच्चे के भीतर छिपी प्रतिभा को तराशना और उसे सही दिशा देना है। 'प्रज्ञानिका' ने हमारे ज़िले और राज्य के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में भी इस विचार को जीवंत किया है।
जब किसी साधारण सी कक्षा से निकला कोई नया विचार या किसी कर्मठ शिक्षक का प्रयास इस पत्रिका के पन्नों तक पहुँचता है, तो वह पूरे राज्य के शैक्षणिक तंत्र के लिए प्रेरणास्रोत, आत्मबल और गौरव का विषय बन जाता है। जीवन–मूल्य, कला, खेल और बौद्धिक चेतना का यह अनूठा समावेश हमारे शिक्षकों के मार्गदर्शन और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में एक उत्प्रेरक का काम कर रहा है।
इस रचनात्मक और समर्पित पहल के लिए संपादकीय मंडल का हर सदस्य बधाई का हकदार है।

ईश्वर से प्रार्थना है कि 'प्रज्ञानिका' निरंतर इसी प्रकार हर विद्यालय की आवाज़ बनती रहे और ज्ञान का प्रकाश फैलाती रहे। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी अशेष शुभकामनाएँ!

समीक्षा

रमेश चन्द्र
विशेष कार्य पदाधिकारी
(सेवानिवृत्त) , बिहार राज्य
पाठ्यपुस्तक निगम लिमिटेड तथा
लेखक एवं शिक्षाविद् , पटना

शिक्षक से निरीक्षक और निरीक्षक से निदेशालय स्तर तक का सफर अपने आप में चुनौती भरा रहा। विभिन्न स्तरों पर जो सीख मिली वह अनुभवों के दस्तावेजीकरण से हो पाई। वर्तमान में कहें तो ' प्रज्ञानिका ' से बड़ी उम्मीद जगती है। 'राज्य की शिक्षा व्यवस्था में वास्तविक सुधार केवल कागज़ी निर्देशों से नहीं, बल्कि विद्यालयीय स्तर पर घटने वाले रोज़मर्रा के अनुभवों से आता है। इस दृष्टिकोण से यदि 'प्रज्ञानिका' ई–शैक्षणिक पत्रिका का आकलन किया जाए, तो यह बिहार के सरकारी विद्यालयों के धरातलीय स्वरूप का एक प्रामाणिक विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

इस पत्रिका का सबसे सबल और महत्त्वपूर्ण पक्ष इसका त्रिआयामी दृष्टिकोण है—जहाँ एक ओर सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों में हो रहे ढांचागत व शैक्षणिक परिवर्तनों को दर्शाया गया है, वहीं दूसरी ओर उन समर्पित शिक्षकों के व्यक्तिगत योगदान और संघर्ष को सामने लाया गया है जो शिक्षा की अलख जगा रहे हैं। इसके साथ ही, सरकारी स्कूलों में नामांकित विद्यार्थियों की प्रतिभा, नेतृत्व क्षमता और उपलब्धियों का रेखांकन इस प्रयास को पूरी तरह जीवंत और सार्थक बनाता है।

इसके अतिरिक्त, शिक्षकों एवं बच्चों के स्वास्थ्य–कल्याण, संक्षिप्त ज्ञानवर्धक तथ्यों और आगामी गतिविधियों के समयबद्ध आलेखों जैसे अनुपूरक अंश पत्रिका की पठनीयता को बढ़ाते हैं और शैक्षणिक सत्र की पूर्व–योजना बनाने में सहायता प्रदान करते हैं।

संक्षेप में, 'प्रज्ञानिका' का यह प्रयास बिहार के सरकारी शिक्षा तंत्र में विद्यालय, शिक्षक और छात्र की वास्तविक क्षमताओं व जमीनी उपलब्धियों को दर्ज करने वाला एक अत्यंत प्रामाणिक और उपयोगी दस्तावेज सिद्ध हो रहा है।

लेकिन क्या इतने मात्र से प्रज्ञानिका का सफ़र पूरा मान लिया जाय ? नहीं, हमें चलना होगा, लगातार चलते रहना होगा। याद रहे, शिखर पर पहुंचना आसान है, शिखर पर बने रहना मुश्किल है।

"इस सफ़र में नींद ऐसी खो गई,
हम न सोए,
रात थक कर सो गई।"

परिकल्पना से प्रकाशन तक:

हमारे मार्गदर्शक

शिव कुमार
(फाउंडर : टीचर्स ऑफ बिहार)
उ० म० वि० नारायणपुर, विक्रम, पटना

इंजि० शिवेंद्र प्रकाश सुमन
(टेक्निकल लीड : टीचर्स ऑफ बिहार)
मुज़फ्फरपुर

केशव कुमार
(स्टेट टीम कोऑर्डिनेटर : टीचर्स ऑफ बिहार)
प्रा० वि० मोहनपुर उर्दू, मुरौल, मुज़फ्फरपुर

स्मिता ठाकुर
(फोटो कोऑर्डिनेटर)
उच्च माध्यमिक विद्यालय
कर्णपुर, सुपौल

गगन कुमार (शिक्षक स्रष्टा)
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय मथुरा मंडल
नगर निगम, समस्तीपुर

निवेदिता रानी (अंकुर कथाकार)
उ०म०वि०पुपरी, कुढ़नी, मुजफ्फरपुर

बिपिन कुमार चौधरी (शब्द शिल्पी)
प्राथमिक विद्यालय बैसागोबिंदपुर, बरारी, कटिहार

अंजली आनंद (शब्द शिल्पी)
मध्य विद्यालय सिंघाड़ी हाट, कोचाधामन, किशनगंज

अमृता चंद्रा (शब्द शिल्पी)
उत्क्रमित मध्य विद्यालय मौजीपुर, फतुहा, पटना

मुकेश कुमार शर्मा (पहेली मास्टर एवं नवोन्मेष लेखक)
उच्च माध्यमिक विद्यालय हाँसा, वारिसनगर, समस्तीपुर

बेबी अर्चना (काव्य संयोजक एवं विविध विमर्शकार)
मध्य विद्यालय कुआड़ी, कुर्साकांटा, अररिया

चंद्रकांत कुमार (विविध विमर्शकार)
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मोख्तियारपुर
भगवानपुर, बेगूसराय

आशीष अम्बर
(विविध विमर्शकार)
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
केवटी, दरभंगा

मृत्युंजय कुमार
समाचार संयोजक
एन.पी.एस. खुटौना यादव टोला, पताही, पूर्वी चंपारण

डॉ० विनोद कु० उपाध्याय
पाठ शोधक
रा० आदर्श मध्य विद्यालय अहियापुर, अरवल

शुभम कुमार
डिजाइनिंग सहायक एवं खेल विशेषज्ञ
उ० म० वि० विश्वम्भरपट्टी पश्चिमी, कटरा, मुज़फ़्फ़रपुर

हमारी टीम

हमारे संपादक मंडल

डॉ० चंदन श्रीवास्तव (प्रधान संपादक)
सहायक आचार्य (शिक्षा)
काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

शुभी श्रीवास्तव (संपादक)
मध्य विद्यालय जांता पछियारी
गायघाट, मुज़फ्फरपुर

डॉ० पूनम कुमारी (संपादक)
उ० वि० सह इंटर कॉलेज
निखती कलां, रघुनाथपुर, सिवान

डॉ० विनोद कु० उपाध्याय
(पाठ - शोधक)
रा० आदर्श मध्य विद्यालय
अहियापुर, अरवल

नेहा कुमारी (कैलेंडर कोऑर्डिनेटर)
रा. स. हरावत राज उच्च माध्यमिक विद्यालय
गणपतगंज, राघोपुर, सुपौल

राकेश कुमार (आरोग्यम दूत) :
मध्य विद्यालय बलुआ, मनेर, पटना

राघवेंद्र कुमार झा (नीति चिंतक)
मध्य विद्यालय लखपुरा (बालक), बाराहाट, बाँका

बिनोद कुमार मंडल
(काव्य संयोजक एवं पर्यटन लेखक)
उ० म० वि० वाणीपुर, मनिहारी, कटिहार

मधु कुमारी (काव्य संयोजक)
प्रा०वि० बंधकट्टाबेलवारी, आजमनगर, कटिहार

दुर्गमांगे (पर्यटन लेखक)
प्राथमिक विद्यालय विठ्ठलपुर, बक्सर

सोनी वर्षा (प्रेरक प्रसंग)
उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय कदवा, नोखा, रोहतास

ब्रजेश कुमार वर्मा
(काव्य संयोजक)
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
पानापुर गोसाई टोला, मीनापुर,
मुजफ्फरपुर

पुरुषोत्तम कुमार
(विद्यालय सूत्रधार)
उर्दू प्राथमिक
विद्यालय लोदीपुर
अंचल : गोलघर,
पटना सदर, पटना

रंजेश कुमार
प्रा0 वि0
छुरछुरिया,
फारबिसगंज,
अररिया
प्रमुख सलाहकार

अनुपमा प्रियदर्शिनी
रा० उ० म०
वि० दुधहन,
रघुनाथपुर,
सीवान
तकनीकी सहयोग

अनुक्रमणिका

पेज संख्या

संपादक — 10-11

प्रधान संपादक की कलम से : डॉ० चंदन श्रीवास्तव — 10
संपादकीय दृष्टिकोण : शुभी श्रीवास्तव — 11
: डॉ० पूनम कुमारी — 11

शिक्षक गाथा — 12-17

कक्षा से वैश्विक मंच तक : केशव कुमार की शिक्षकीय यात्रा - गगन कुमार

विद्यालय गाथा — 18-21

स्वच्छ और हरित विद्यालय -पुरुषोत्तम कुमार

छात्र गाथा — 22-24

जागृति: रंगों से रची प्रेरणा की कहानी -निवेदिता रानी

डिजिटल दुनियाँ — 25-27

Runway AI , ElevenLabs और Gemini Notebook से पहचान
-इं० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

आलेख — 28-33

निपुण बिहार में FLN की भूमिका, महत्व और ज्ञान — 28-29
-अंजली आनंद
नौकरी देने की मानसिकता का सृजन करना होगा — 30-32
-विपिन वियान ' हिंदुस्तानी '
शिक्षा और संस्कृति — 33
-अमृता चंद्रा

नवाचार — 34-35

पारंपरिक सीमाओं से परे: भाषा शिक्षण में कला, संगीत और तकनीक का संगम
-मुकेश कुमार शर्मा

NEP: नया सवेरा — 36-37

NEP 2020 और उपचारात्मक शिक्षण
-राघवेंद्र कुमार झा

विविध — 38-42

चॉक से क्लिक तक: शिक्षकों की जनगणना यात्रा — 38-40
-चंद्रकांत कुमार
ऊर्जा और जल संरक्षण: सतत् भविष्य की आधारशिला — 41
-बेबी अर्चना
वैश्विक जल संकट की समस्या और हम — 42
-आशीष अम्बर

अनुक्रमणिका

पेज संख्या

यात्रा वृत्तांत 43-47

नीले समंदर की लहरों पर : मेरी गोवा यात्रा -दुर्गमांगे 43-47

काव्य रंग 48-43

पर्यावरण -ब्रजेश कुमार वर्मा 48
संघर्ष -बेबी अर्चना 49
हाँ, मैं अब शिक्षिका बन गई हूँ -(कीर्ति सौम्य) 50
सरकारी स्कूल का शिक्षक -बिनोद कुमार मंडल 51
बचपन -डॉ० उषा किरण 52
शक्ति स्वरूपा नारी -मधु कुमारी 53
चिड़िया रानी -अमरेन्द्र कुमार उन्मेष 53

योग एवं साधना 54-55

हठयोग : शरीर, श्वास और मन के संतुलन की साधना - राकेश कुमार

खेल जगत 56

हॉकी की दुनिया से परिचय : शुभम कुमार (खेल विशेषज्ञ)

प्रेरक प्रसंग 57

निजी सुंदरता और आत्म-संतोष (अपनी तुलना किसी से न करें) - सोनी वर्षा

ज्ञान की पोटली 58-61

रोचक तथ्य : मुकेश कुमार शर्मा 58
Word of the edition, Thought for morning assembly 59
: मुकेश कुमार शर्मा
दिमागी कसरत : मुकेश कुमार शर्मा 60
हैक्स व ट्रिक्स : मुकेश कुमार शर्मा 61

आगामी कैलेंडर 62-63

-नेहा कुमारी

सुर्खियाँ 64-65

-मृत्युंजय कुमार

चित्र वीथिका 66-67

-स्मिता ठाकुर

सिसकियां: डॉ० पूनम कुमारी 68

हमारी अन्य लोकप्रिय पत्रिकाएँ 69

प्रधान संपादक की कलम से

डॉ० चंदन श्रीवास्तव
सहायक आचार्य (शिक्षा)
काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एवं
शैक्षिक समन्वयक, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार

प्रिय पाठकगण,
'प्रज्ञानिका' के इस नवीन अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह अंक शिक्षा, सृजन, अनुभव, नवाचार और सामाजिक सरोकारों की विविध धाराओं को एक साथ जोड़ने का विनम्र प्रयास है।

हमारा उद्देश्य केवल सामग्री का संकलन करना नहीं, बल्कि विद्यालय, शिक्षक, विद्यार्थी और समाज के बीच विचारों का ऐसा संवाद स्थापित करना है जो प्रेरित करे, प्रश्न जगाए और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को समृद्ध बनाए।

इस अंक में 'शिक्षक गाथा', 'विद्यालय गाथा' और 'छात्र गाथा' जैसी प्रस्तुतियाँ शिक्षा-जगत के जीवंत अनुभवों को सामने लाती हैं। 'डिजिटल दुनिया' आधुनिक तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करती है, जबकि 'आलेख', 'नवाचार' और 'NEP: नया सवेरा' जैसे रोचक खंड, समकालीन शैक्षिक विमर्श, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, भाषा-शिक्षण, संस्कृति और नई शैक्षिक संभावनाओं पर विचार का अवसर प्रदान करते हैं।

पत्रिका का स्वर केवल अकादमिक विषयों तक सीमित नहीं है। यात्रा-वृत्तांत, काव्य-रंग, योग एवं साधना, खेल-जगत, प्रेरक प्रसंग, ज्ञान की पोटली, आगामी कैलेंडर, सुर्खियाँ और चित्र-वीथिका जैसे स्तंभ इस अंक को बहुआयामी बनाते हैं। हमें विश्वास है कि इस पत्रिका की विविध सामग्री, हमारे पाठकों के ज्ञान के साथ-साथ उनकी संवेदना, कल्पना और रचनात्मकता को भी समृद्ध करेगी।

'प्रज्ञानिका' की शक्ति उसके लेखक, सहयोगी, शिक्षक, विद्यार्थी और सजग पाठक हैं। इस अंक को आकार देने वाले सभी रचनाकारों, संपादकीय सहयोगियों तथा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े प्रत्येक साथी के प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। आपकी प्रतिक्रियाएँ, सुझाव और रचनात्मक सहभागिता ही इस पत्रिका को निरंतर बेहतर बनाने की प्रेरणा हैं।

आशा है कि यह अंक आपके लिए उपयोगी, प्रेरक और पठनीय सिद्ध होगा तथा ज्ञान और सृजन की हमारी इस सामूहिक यात्रा को नई ऊर्जा देगा।

शुभकामनाओं के साथ

चंदन श्रीवास्तव

सादर,
डॉ. चंदन श्रीवास्तव
प्रधान संपादक, प्रज्ञानिका

संपादकीय दृष्टिकोण

प्रज्ञानिका का यह अंक केवल शब्दों और पृष्ठों का संग्रह नहीं, बल्कि शिक्षा की उस जीवंत दुनिया की कहानी है, जिसमें शिक्षक, विद्यार्थी और विद्यालय मिलकर भविष्य गढ़ते हैं। शिक्षक गाथा में समर्पण की कहानियाँ हैं, विद्यालय गाथा में बदलाव की आहट और छात्र गाथा में सपनों को पंख देने वाली प्रेरणाएँ।

डिजिटल दुनिया के नए उपकरणों से परिचय यह विश्वास जगाता है कि तकनीक शिक्षा की संवेदना का विकल्प नहीं, बल्कि उसका सशक्त साथी बन सकती है। आलेखों में शिक्षा, FLN, रोजगार, संस्कृति और नवाचार जैसे सरोकार हमारे वर्तमान को समझने और भविष्य को बेहतर बनाने की राह दिखाते हैं।

NEP, यात्रा, कविता, योग, खेल और ज्ञान की पोटली इस अंक को विविध रंगों से सजाते हैं। यह अंक हर उस शिक्षक को समर्पित है, जो सीमित संसाधनों के बीच बच्चों की आँखों में छिपे सपनों को पढ़ता है और उन्हें उड़ान देने का प्रयास करता है। यही प्रज्ञानिका की आत्मा है।

डॉ० पूनम कुमारी
उ० वि० सह इंटर कॉलेज
निखती कलां, रघुनाथपुर, सिवान

शुभी श्रीवास्तव
राजकीय मध्य विद्यालय जांता पछियारी
गायघाट ,मुज़फ्फरपुर

प्रिय पाठकों ,
प्रज्ञानिका केवल कागज़ के पन्नों पर छपे अक्षरों का समुच्चय नहीं है; यह उन तमाम वेदनाओं और उपलब्धियों का जीवंत दस्तावेज़ है, जिन्हें अक्सर दुनिया की भीड़ में अनसुना कर दिया जाता है।

इन पृष्ठों में आपको वह सत्य दिखाई देगा जो अभावों के अंधेरे में भी उम्मीद की मशाल जलाए हुए है। जब मैं देखती हूँ कि कैसे एक साधारण शिक्षक अपनी हर विपत्ति को ताक पर रखकर बच्चों का भविष्य सँवार रहा है, तो मेरा अन्तस् श्रद्धा से भर जाता है।

मैं जब उन मासूम बच्चों की आँखों में झांकती हूँ जो संघर्षों के बावजूद अपनी नन्हीं अँगुलियों से किस्मत की लकीरें नए सिरे से खींच रहे हैं, तो हृदय में गर्व और करुणा का ज्वार उमड़ पड़ता है।इस व्यवस्था का वास्तविक प्राण वातानुकूलित कक्षों में नहीं, बल्कि हमारे इन ग्रामीण विद्यालयों की खुरदरी दीवारों और कच्चे फर्श पर बसती है।

यह पत्रिका उन आँसुओं की थाती है जिन्हें हौसलों ने संबल दिया है और उन टूटे सपनों की गवाही है जिन्हें शिक्षकों ने अपने हाथों की छाँव देकर बचाया है।

यह हम सबकी साझा तपस्या का प्रतिफल है। आइए, इस सफर में एक-दूसरे का हाथ थामे रहें क्योंकि आपकी यह बेजोड़ साधना ही प्रज्ञानिका की ताकत और आपका अटूट विश्वास ही इस पत्रिका की पहचान है।

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका
प्रज्ञानिका

- गगन कुमार

नवाचार, नेतृत्व और जनसहभागिता से सरकारी विद्यालय में बदलाव की एक प्रेरक कहानी

'प्रज्ञानिका' के प्रस्तुत अंक के शिक्षक गाथा स्तम्भ में एक ऐसे शिक्षक की कहानी को शामिल किया गया है जिनके शिक्षकीय कार्यों की चर्चा अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी हुई है। स्वीटजरलैंड, कनाडा, यूके से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के प्रतिनिधिगण विद्यालय का भ्रमण करके शिक्षक के कार्यों से काफी प्रभावित हुए।

यहां बात हो रही है मुजफ्फरपुर जिले के मुरौल प्रखंड अंतर्गत बिशनपुर बखरी पंचायत स्थित राजकीय बुनियादी विद्यालय बखरी से वर्ष 2014 में शिक्षकीय यात्रा आरंभ करनेवाले शिक्षक केशव कुमार की जो वर्तमान में इसी जिले के मुरौल प्रखंड अंतर्गत मीरापुर पंचायत स्थित प्राथमिक विद्यालय मोहनपुर उर्दू में प्रधान शिक्षक के पद पर कार्यरत हैं।

वर्ष 2014 में नियोजित शिक्षक के रूप में योगदान के साथ ही बच्चे को शिक्षा के केन्द्र में रखकर लगातार कुछ नया करने की दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर सीमित संसाधन में ही उन्होंने वर्गकक्ष को 'प्रयोगशाला' और विद्यालय को 'परिवर्तन का केन्द्र' के रूप में परिणत किया। विद्यालय में की गई अनेक पहल व उसके क्रियान्वयन की शैली को आगा खां फाउंडेशन के साथ जुड़कर पुर्तगाल में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक मंच पर साझा किया गया, जहां काफी सराहना मिली।

शिक्षक के वर्गकक्ष-प्रयोग को वैश्विक मंच पर मिली सराहना

"शिक्षक के नवाचारों से प्रभावित अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि पहुंचे विद्यालय, शैक्षिक प्रयोगों और उत्कृष्ट पहल का किया अवलोकन"

"सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में छोटी-छोटी पहल से पल्लवित हुई बदलाव की कहानी"

"शिक्षक केशव कुमार अक्सर निजी कोष से भी करते हैं विद्यालय की बेहतरी का प्रबंध"

"राजकीय शिक्षक पुरस्कार 2026 के अलावा विभिन्न दर्जनाधिक मंचों पर हुए हैं सम्मानित"

विभागीय व सामाजिक कर्तव्यों को बनाया संसाधन

बच्चे का सीखना, उसका व्यक्तित्व व भविष्य निर्माण की प्रक्रिया केवल शिक्षक के द्वारा पाठ्यपुस्तक तक सिमटने से पूरी नहीं की जा सकती है। इसके लिए समुदाय व संस्थागत साझेदारी भी आवश्यक है। इसको लेकर शिक्षक केशव कुमार ने विभागीय व सामाजिक कर्त्तव्यों को परिवर्तन का संसाधन बनाया। इन्हें जब भी किसी आयोजन या अभियान में प्रतिभागिता करने का अवसर मिला, उसे बच्चों के हितार्थ रूप में परिणत किया।

शिक्षक केशव कुमार के नेतृत्व कौशल व कार्य के प्रति समर्पण को देखते हुए उन्हें समय-समय पर विभागीय विभिन्न कार्यक्रमों व अभियानों का हिस्सा बनाया गया। जिला तकनीकी टीम, जिला साधन सेवी, पीबीएल, राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर, टी.ओ.बी. इवेंट लीडर, डिजीटल सामग्री निर्माण, दीक्षा एप्प व पीएम ई विद्या DTH चैनल हेतु ई-कंटेंट निर्माण, पाठ्यपुस्तक परिमार्जन, शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल निर्माण, टीएलएम निर्माण एवं अन्यान्य नवाचारी गतिविधि सहित कई अन्य कार्यक्रमों में इन्होंने हमेशा बच्चे को केन्द्र में रखकर अपनी कार्य योजना को मूर्त रूप दिया।

विभागीय अभियान 'जल जीवन हरियाली', सुरक्षित शनिवार, बैगलेस शनिवार, पोषण प्रदर्शनी, मानव श्रृंखला सहित सामाजिक स्तर पर आयोजित दुर्गापूजा जैसे कार्यक्रम व विद्यालय वार्षिक उत्सव जैसे कार्यों में बच्चों को सांस्कृतिक मंच उपलब्ध कराते हुए इन्होंने विभिन्न ज्वलंत सामाजिक मुद्दों पर संवाद करने व समाज तक संदेश पहुंचाने का साधन साबित किया।

शिक्षक के कार्यों के कुछ अविस्मरणीय क्षण

शिक्षक केशव कुमार अपने निजी कोष से भी राशि खर्च करने में हमेशा आगे रहे। स्वयं के जन्मदिन और अपने पुत्र शिवानंद के जन्मदिन पर विद्यालय में तिथि भोज का आयोजन करके पदस्थापित विद्यालय में बच्चों के साथ खुशियां बांटने की परंपरा का सूत्रपात करते हुए समाज को विद्यालय से जोड़ने का प्रयास किया।

फलस्वरूप स्वयंसेवी संस्थाओं से विद्यालय को स्मार्ट टी.वी., टैबलेट, कम्प्यूटर सेट, बैट्री-इनवर्टर, प्रोजेक्टर, साउण्ड सिस्टम, खेल सामग्री सहित कई अन्य महत्वपूर्ण संसाधन प्राप्त हुए। पंचायत प्रतिनिधियों के सहयोग से विद्यालय परिसर मे खेल मैदान का निर्माण कराया गया।

राष्ट्रीय केस स्टडी के रूप में चयनित हुआ विद्यालय

शिक्षक केशव कुमार द्वारा परंपरागत शिक्षण शैली के साथ अभिनव प्रयोग भी लगातार जारी रखे गए। इन्होंने विद्यालयी वातावरण तैयार करके बच्चों को सीखने का अवसर प्रदान किया। इसके लिए वे टीएलएम, खेल आधारित गतिविधि, स्मार्ट टीवी, प्रोजेक्टर, टैबलेट व अन्य आईसीटी का उपयोग, अनुभवात्मक व परियोजना आधारित शैली को दैनिक वर्गकक्ष का हिस्सा बनाया। इसके अलावा उन्होंने विद्यालय परिसर को सीखने के संसाधन के रूप में उपयोग करते हुए संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकार व कर्तव्य को दीवारों पर अंकित कराने एवं गांव के स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृति में शिलापट्ट बनवाने में योगदान दिया। प्रमुख दिवस, जयंती व अन्य जन-जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से सीखने-सिखाने का वातावरण बनाने का प्रयास किया गया। पीबीएल, एफएलएन कॉर्नर, रीडिंग कॉर्नर, टीएलएम कॉर्नर सहित अन्य अभिनव पहल विकसित करने, बच्चों को नेतृत्वकर्ता बनाने आदि के परिणाम स्वरूप एन.सी.एस.एल. एन.आई.ई.पी.ए. नई दिल्ली द्वारा इनके केस स्टडी को राष्ट्रीय स्तर पर चयनित किया गया।

नेतृत्व, निर्णय, अधिकार, कर्तव्य व अनुशासन की सीख

शिक्षक केशव कुमार यह मानते हैं कि सीखना तब प्रभावी माना जाएगा जब वह बच्चों के व्यवहार में दिखे। बच्चों के व्यवहार-अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, अधिकारों व कर्त्तव्यों के प्रति सजगता विकसित करने हेतु कई पहल किए गए।

अवसर एवं प्रेरणा

बच्चों को प्रेरित करने के लिए उन्हें विद्यालयी वातावरण से अवसर प्राप्त हुआ। परिणामतः तरंग कार्यक्रम, खेल व अन्य प्रतियोगिता के विभिन्न अवसरों पर विद्यालय के बच्चों ने राज्य स्तर तक अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। इसके अलावा राष्ट्रीय आय सह मेधा छात्रवृति परीक्षा में विद्यालय के नौ बच्चों को सफलता प्राप्त हुई।

स्वच्छता दूत

प्रत्येक कक्षा से बच्चों को 'स्वच्छता दूत' बनाया गया जो विद्यालय परिसर को स्वच्छ रखने व शौचालय का उपयोग करने के बाद अन्य के लिए उपयोगी छोड़ने की परंपरा विकसित किया। बच्चों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने वाले 'स्वच्छता दूत को शिक्षक केशव कुमार द्वारा गांधी जयंती के अवसर पर सम्मानित किया जाता है।

बाल नेतृत्व

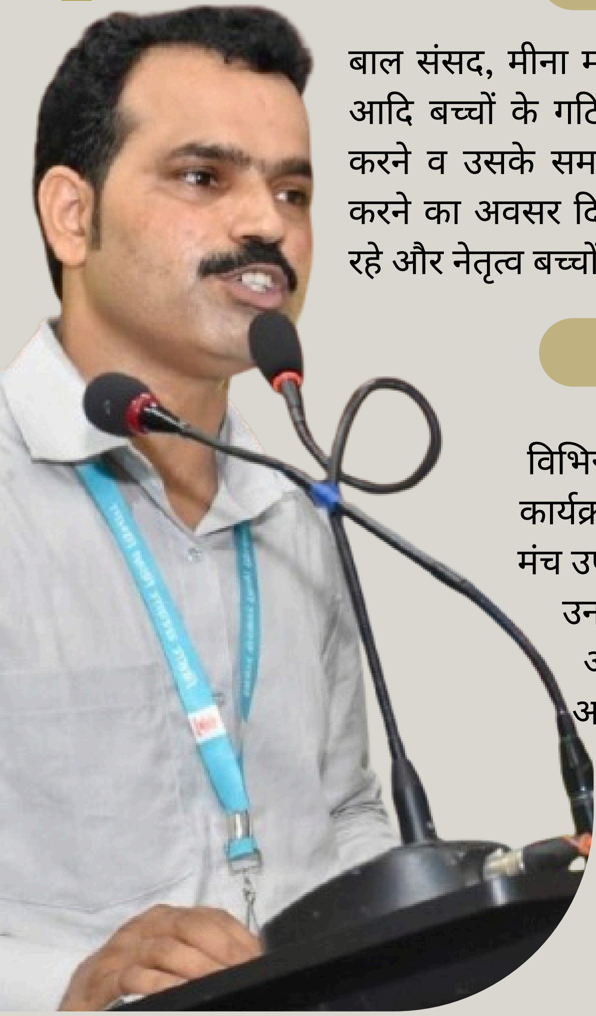

बाल संसद, मीना मंच, यूथ क्लब, ईको क्लब, आपदा प्रबंधन आदि बच्चों के गठित समूह को निर्णय लेने, समस्या पहचान करने व उसके समाधान पर चिंतन करने व समूह का नेतृत्व करने का अवसर दिया गया। शिक्षक मार्गदर्शक की भूमिका में रहे और नेतृत्व बच्चों द्वारा किया गया।

सांस्कृतिक मंच

विभिन्न अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से बच्चों को मंच उपलब्ध कराया गया जिससे उनमें कला के साथ-साथ आत्मविश्वास बढ़ाने व अभिव्यक्ति का अवसर मिल सके।

हालांकि आरंभ में कुछ अभिभावकों को कला के संदर्भ में धारणा स्पष्ट कराने में शिक्षक को चुनौती का सामना करना पड़ा। कला के संदर्भ में धारणा स्पष्ट होने के बाद समाज का पूरा सहयोग मिला। प्रवेशोत्सव के दौरान विद्यालय की एक छात्रा अंजली की सांस्कृतिक प्रस्तुति को बिहार के माननीय शिक्षा मंत्री द्वारा भी सराहना मिली। छात्रा को ग्रामीण द्वारा भी प्रोत्साहन हेतु पुरस्कृत किया गया।

व्यक्तिगत सहयोग मॉडल

कोविड 19 के बाद विद्यालय खुलने पर बच्चों की अधिगम क्षति की भरपायी के लिए व्यक्तिगत सहयोग मॉडल विकसित किया गया। इसके तहत प्रत्येक शिक्षक द्वारा तीन-तीन बच्चों को शैक्षणिक सहयोग प्रदान किया गया।

शिक्षकीय जीवन को व्यक्त करता पुरस्कारों की श्रृंखला

शिक्षक केशव कुमार के लगभग 12 वर्षों की शिक्षकीय यात्रा के क्रम में कई ऐसे अवसर उन्हें प्राप्त हुए जिससे वे हमेशा अपना शत-प्रतिशत योगदान देने के लिए प्रेरित होते रहे। विभागीय व सामाजिक स्तर पर उन्हें दर्जनाधिक मंचों पर सम्मानित व पुरस्कृत किया गया। उन्हें अब तक प्रखण्ड, जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त पुरस्कारों की श्रृंखला में से यहां प्रस्तुत है कुछ पुरस्कारों का परिचय-

बिहार के माननीय शिक्षा मंत्री श्री मिथिलेश तिवारी जी के कर-कमलों से राजकीय शिक्षक पुरस्कार-2026 प्राप्त करते हुए।

डी० पी० ओ०, प्रारंभिक शिक्षा एवं सर्व शिक्षा अभियान, बिहार शिक्षा परियोजना, मुजफ्फरपुर श्री सुजीत कुमार दास के कर-कमलों से जिला स्तरीय उत्कृष्ट तकनीकी सेवा सम्मान-2025 प्राप्त करते हुए।

डी०ई०ओ०, मुजफ्फरपुर श्री अब्दुस सलाम अंसारी के कर-कमलों से जिला शिक्षक पुरस्कार-2021 प्राप्त करते हुए।

जिलाधिकारी, मुजफ्फरपुर श्री सुब्रत कुमार सेन के कर-कमलों से जिला शिक्षक पुरस्कार-2024 प्राप्त करते हुए।

टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर श्री शिव कुमार की गरिमामयी उपस्थिति में बिहार दिवस-2026 के अवसर पर पटना के गांधी मैदान स्थित शिक्षा विभाग के पवेलियन में उत्कृष्ट योगदान हेतु प्राथमिक शिक्षा निदेशक श्री विक्रम विरकर के कर-कमलों से सम्मान प्राप्त करते हुए।

जिला सशक्तिकरण कार्यक्रम के अंतर्गत मुजफ्फरपुर जिले के शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापकों को जिला तकनीकी दल के सदस्य के रूप में तकनीकी अनुसमर्थन प्रदान करने हेतु एससीईआरटी के श्री स्नेहाशीष दास के कर-कमलों से सम्मान-पत्र प्राप्त करते हुए।

NCSL-NIEPA, नई दिल्ली द्वारा 17 से 19 जनवरी 2026 तक नई दिल्ली स्थित इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बिहार का प्रतिनिधित्व करने के उपलक्ष्य में आदरणीय श्री धीरज साहू, (भा. प्र. से.), अपर सचिव, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के कर-कमलों से प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए।

PBL कार्यक्रम के DTT के सदस्य के रूप में अन्य जिलों को तकनीकी सहयोग एवं उत्कृष्ट कार्य-पद्धतियाँ साझा करने हेतु 'सर्वाधिक अनुशंसा प्राप्त सम्मान' श्रेणी में प्रशस्ति-पत्र आदरणीय श्री कौशल कुमार, रा० का० पदा० , BEPC, पटना के कर-कमलों से प्राप्त करते हुए।

शिक्षक की इस यात्रा में टीचर्स ऑफ बिहार की भूमिका

शिक्षक केशव कुमार की विद्यालय से लेकर वैश्विक मंच तक की उपलब्धियों की यात्रा में बिहार की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी 'टीचर्स ऑफ बिहार' के संस्थापक श्री शिव कुमार जी का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके कुशल नेतृत्व, निरंतर मार्गदर्शन और प्रोत्साहन ने केशव कुमार को विद्यालय की सीमाओं से बाहर अपनी शैक्षिक पहल, नवाचार और अनुभवों को व्यापक मंच पर साझा करने के अनेक अवसर प्रदान किए। उनके सहयोग और मार्गदर्शन ने इस यात्रा को नई दिशा और व्यापक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

राजकीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित होकर अपने छात्रों के बीच खुशियाँ बांटते प्रधान शिक्षक केशव कुमार

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका

- पुरुषोत्तम कुमार

स्वच्छ और हरित विद्यालय

एक प्रसिद्ध कहावत है कि स्वच्छ तन में स्वस्थ मन का वास होता है। तन की स्वच्छता के लिए केवल शुद्ध-पौष्टिक भोजन ही नहीं आवश्यक है बल्कि स्वच्छ वातावरण की भी उतनी ही आवश्यकता है। यदि कोई विद्यालय इस स्तर पे अपनी भूमिका निभाता है तो निश्चित तौर पे वहां के बच्चों के अधिगम में व्यापक तौर पे बदलाव आ सकता है। ऐसा ही एक विद्यालय है बेगूसराय जिले के बरौनी प्रखंड में स्थित राजकीय मध्य विद्यालय बीहट। इस विद्यालय की स्थापना अंग्रेजों के शासन कल में 1935 मे सामूहिक सहभागिता से हुई। लंबे समय तक समाज के सहयोग से यह विद्यालय निरन्तर अपनी विस्तृत उपलब्धियों से बिहार में एक अलग पहचान बनाने में सक्षम रहा। विद्यालय की उपलब्धि का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि यहां प्रवेश के लिए कभी प्रवेश परीक्षा भी देनी होती थी। लेकिन एक समय ऐसा भी आया कि यह विद्यालय गुमनामी के अंधेरे में खोने लगा। जिस सामाजिक सहयोग से विद्यालय की स्थापना हुई थी वहीं समाज इस से विमुख होने लगा। ऐसे ही समय में 2016 में यहां रंजन कुमार प्रधानाध्यापक बनकर आए और विद्यालय की स्थिति में सुधार और उसकी पुरानी पहचान लौटाने का संकल्प लिया। एक बार फिर से उन्होंने समाज को विद्यालय से जोड़ने का अथक प्रयास किया। उन्हें उनके सहकर्मियों का भी भरपूर सहयोग मिला और सबकी सहभागिता से विद्यालय पुनः जिले में ही नहीं बल्कि बिहार में अपनी एक अलग पहचान बनाने में समर्थ हुआ है। आज इस विद्यालय की चर्चा हर जगह हो रही है। इस विद्यालय ने अपनी उपलब्धि से न केवल बेगूसराय जिले का मानवर्धन किया है बल्कि राष्ट्रीय स्तर पे पूरे बिहार का गौरव बढ़ाया है। स्वच्छ एवं हरित विद्यालय रेटिंग(SHVR) 2025-26 में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। विद्यालय ने 96.8% अंक अर्जित कर फाइव स्टार रेटिंग के साथ पूरे बिहार के सिरमौर होने का ताज अपने माथे पे सजाया है। साथ ही शहरी श्रेणी में राष्ट्रीय स्तर पर पूरे भारत वर्ष में 4th रैंकिंग प्राप्त कर राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी एक अलग पहचान बनाई है।

इस राष्ट्रीय पहल के अंतर्गत विगत 2025 के जुलाई से देशभर के 11,81,086 विद्यालय प्रारंभिक चरण में शामिल हुए थे। इनमें से 11,54,898 विद्यालयों ने पंजीकरण कराया तथा 10,47,859 विद्यालयों ने स्वमूल्यांकन प्रक्रिया पूर्ण कर अपनी दावेदारी अंतिम रूप से SHVR पोर्टल पे दर्ज की। इनमें से अंतिम रूप से 550 विद्यालयों को राष्ट्रीय मूल्यांकन के लिए फाइव स्टार रेटिंग दे कर नामित किया गया। अनेक चरणों की स्क्रीनिंग, दस्तावेज, परीक्षण एवं भौतिक सत्यापन की कठोर प्रक्रिया के बाद शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार ने पूरे देश से केवल 191 विद्यालयों की अंतिम सूची जारी की, जिसमें चौथे स्थान पे राजकीय मध्य विद्यालय बीहट ने अपना स्थान सुनिश्चित किया।

पूर्व अपर मुख्य सचिव डॉ० एस. सिद्धार्थ

इस विद्यालय के बच्चों का कॉन्फिडेंस लेवल एकदम हाई लेवल का है। शिक्षकों के नवाचार एवं उनके द्वारा बनाया गया टीचिंग लर्निंग मैटेरियल काफी सुंदर, आकर्षक एवं बच्चों लिए काफी उपयोगी है।

विद्यासागर सिंह क्षेत्रीय शिक्षा, उपनिदेशक मुंगेर प्रमडल

विद्यालय की शैक्षणिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था उत्कृष्ट है। समाज के लिए इस विद्यालय का योगदान निश्चित रूप से काबिलेतारीफ है। स्वच्छता के मापदंड पर इस विद्यालय ने राज्य में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है।

शहरी श्रेणी में बिहार में सर्वोच्च स्थान पे रहते हुए 96.8%अंक के साथ इस विद्यालय ने पूरे बिहार का गौरव बढ़ाया है। विद्यालय को प्राप्त यह स्थान विद्यालय में विकसित स्वच्छ, सुरक्षित, समावेशी, पर्यावरण अनुकूल एवं गुणवतापूर्ण शैक्षिक वातावरण का राष्ट्रीय प्रमाण है।
विद्यालय की इस उपलब्धि का श्रेय निश्चित तौर पर विद्यालय के कर्णधार विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री रंजन कुमार को जाता है।

परंतु वे स्वयं को इसका श्रेय न दे कर इस सम्मान के हकदार विद्यालय के शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों, विद्यालय शिक्षा समिति, स्थानीय समुदाय और शिक्षा...

पूर्व अपर मुख्य सचिव के. के. पाठक

राजकीय मध्य विद्यालय बीहट, बेगूसराय ही नहीं पूरे बिहार के पैमाने पर एक मॉडल स्कूल है, ऐसे स्कूलों की संख्या बढ़नी चाहिए।

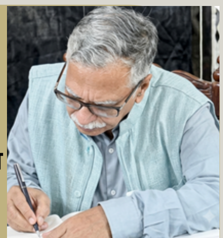

अरुण कुमार सिंह उप महालेखा परीक्षक एवं नियंत्रक भारत सरकार

इस विद्यालय ने समग्रता में हर क्षेत्र पढ़ाई, खेलकूद, कला, विज्ञान आदि में उल्लेखनीय प्रगति की है। विशेष रूप से खेलकूद के क्षेत्र में जिला एवं राज्य स्तर पर कई उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की है।

एस०सी०ई०आर०टी०, पटना की संयुक्त निदेशक डॉ० रश्मि प्रभा, राजकीय मध्य विद्यालय बीहट में

विभाग के साझा प्रयासों को देते हैं। उनके कथनानुसार विद्यालय में निरन्तर बच्चों के अभिरुचि के सापेक्ष सीखने, नेतृत्व करने, जिम्मेदारी निभाने और बेहतर नागरिक बनने के लिए निरन्तर अभ्यास से जोड़ने के प्रयास किया गया है। यह उपलब्धि विद्यालय के समर्पित शिक्षकों की प्रतिबद्धता, अनुशासित विद्यार्थियों के संकल्प, अभिभावकों के भरोसे और समुदाय की अपने विद्यालय से जुड़ी श्रद्धा का प्रतिफल है। आज यह विद्यालय दूर से ही अपने सौंदर्य के कारण लोगों को आकर्षित करता है। इस विद्यालय में प्रवेश पा कर एक छात्र को ऐसा लगता है,

जैसे उसके जीवन का एक बड़ा सपना साकार हो गया हो। एक गरीब घर के विद्यार्थी कभी यह सपना नहीं देख पाता कि वो हर तरह की सुविधाओं से सम्पन्न विद्यालय में पढ़ पाएगा भले ही वो कितना भी मेधावी क्यूं न हो, परंतु बीहट का यह विद्यालय ऐसे हजारों सपनों को साकार करने में साकार हुआ है। मध्य विद्यालय बीहट की प्रशंसा सुन कर शिक्षा विभाग के लगभग सभी बड़े पदाधिकारी विद्यालय का भ्रमण कर चुके हैं और विद्यालय की विधि व्यवस्था को देखकर फूले नहीं समाए।

पूर्व अपर मुख्य सचिव शिक्षा विभाग, बिहार सरकार डॉ० एस. सिद्धार्थ का मानना है कि यहां का लर्निंग मॉडल बिल्कुल अलग तरह का है।
वहीं पूर्व अपर मुख्य सचिव शिक्षा विभाग, बिहार सरकार श्री के. के. पाठक का मानना था कि बिहार में बीहट जैसे मॉडल स्कूल की संख्या बढ़नी चाहिए।

यहाँ की मॉर्निंग एसेंबली और इवनिंग एसेंबली भी नवाचारों से परिपूर्ण है
विद्यालय पिछले कई वर्षों से नवाचारों से परिपूर्ण शैक्षिक, खेल-कूद एवं विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ सामुदायिक सहभागिता, स्वच्छता एवं विद्यालय विकास के क्षेत्र में राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर निरन्तर अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करता रहा है। SHVR 2025-26 का यह परिणाम विद्यालय की उसी विकास यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है।
विद्यालय ने अपनी इस उपलब्धि को बिहार के सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों मनोयोग और निस्वार्थ भाव से काम कर रहे शिक्षको एवं सरकारी विद्यालय के प्रति अटूट विश्वास रखने वाले समुदाय को समर्पित किया है। इस विकास यात्रा के सहभागी यहां के पूर्ववर्ती छात्र भी रहे हैं, जिन्होंने समय-समय पर विद्यालय को कई प्रकार से मदद दे कर इस विद्यालय के प्रति अपनी अटूट आस्था को प्रकट किया है।

11 लाख से अधिक विद्यालयों की राष्ट्रीय स्पर्धा से निकल कर देश के सर्वश्रेष्ठ 191 विद्यालयों में अपना स्थान बनाना और राज्य स्तर पर सर्वोच्च स्थान पाना केवल सम्मान नहीं बल्कि लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता और सतत प्रयासों की राष्ट्रीय स्वीकृति है।

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका

प्रज्ञानिका

- निवेदिता रानी

जागृति: रंगों से रची प्रेरणा की कहानी

"सफलता केवल बड़े संसाधनों से नहीं, बल्कि बड़े सपनों और अटूट हौसले से हासिल होती है। जब मेहनत रंगों से मिलती है, तब साधारण जीवन भी प्रेरणा की एक सुंदर तस्वीर बन जाता है। "यह कहानी ऐसी ही एक बेटी की है, जिसने अपने सपनों को मधुबनी कला के रंगों से नई पहचान दी।"

मुजफ्फरपुर जिले के गायघाट प्रखंड स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालय, बेरुआ की कक्षा 12 की छात्रा जागृति कुमारी एक साधारण परिवार से हैं। उनके परिवार में कुल आठ सदस्य हैं। उनकी माता पूनम कुमारी गृहिणी हैं तथा पिता अन्जेय पटेल सरकारी शिक्षक हैं। सीमित संसाधनों के बावजूद परिवार ने हमेशा शिक्षा, संस्कार और मेहनत को सबसे बड़ा धन माना। यही मूल्य आगे चलकर जागृति की सफलता की नींव बने।

**जागृति की सफलता की कहानी जानने से पहले आइए,
मधुबनी चित्रकला के बारे में संक्षेप में जानें**

मधुबनी चित्रकला, जिसे मिथिला कला भी कहा जाता है, बिहार के मिथिला क्षेत्र की एक प्राचीन और विश्वविख्यात लोक कला है। लोक परंपराओं के अनुसार इसका संबंध रामायण काल से माना जाता है, जब मिथिला के राजा जनक ने माता सीता के विवाह अवसर पर पूरे राज्य को चित्रों से सजाने का आदेश दिया था। इस कला में देवी-देवताओं, सूर्य, चंद्रमा, मछली, मोर, वृक्ष तथा लोकजीवन के विविध दृश्यों को आकर्षक रंगों के माध्यम से चित्रित किया जाता है। अपनी विशिष्ट शैली और सांस्कृतिक विरासत के कारण मधुबनी चित्रकला को GI Tag प्राप्त है तथा आज यह कला राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की पहचान बन चुकी है।

मधुबनी चित्रकला की इसी समृद्ध परंपरा ने जागृति को गहराई से प्रभावित किया। अपनी बड़ी बहन को मधुबनी पेंटिंग बनाते हुए देखकर उनके मन में भी इस कला को सीखने की इच्छा जागी। उन्होंने बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण के, केवल स्व-अध्ययन, निरंतर अभ्यास और दृढ़ संकल्प के बल पर मधुबनी पेंटिंग बनाना शुरू किया। धीरे-धीरे उनकी कला निखरती गई और उनकी बनाई गई पेंटिंग्स लोगों का ध्यान आकर्षित करने लगीं।

उनकी प्रतिभा को पहला बड़ा मंच तब मिला, जब प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी के विदाई सह सम्मान समारोह के अवसर पर उन्हें अपनी बनाई हुई मधुबनी पेंटिंग भेंट करने का अवसर प्राप्त हुआ। उनकी कलाकृतियों ने वहाँ उपस्थित सभी अतिथियों, अधिकारियों और शिक्षकों को प्रभावित किया। सभी ने उनकी कला की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। इस सम्मान ने जागृति के आत्मविश्वास को नई ऊर्जा प्रदान की।

इसके बाद ELC (Electoral Literacy Club), मतदाता साक्षरता क्लब के द्वारा जिले के विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करवाकर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जागृति ने इस प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी प्रतिभा के बल पर जिला स्तर पर अपनी पहचान बनाई। उनकी उत्कृष्ट प्रस्तुति के आधार पर उन्हें राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयनित किया गया। ECI (Election Commission of India) के उदघाटन के अवसर पर जिला स्तर पर चयनित विद्यार्थियों का राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन पटना के प्रतिष्ठित ज्ञान भवन में हुआ। यहाँ पूरे राज्य से आए विद्यार्थियों के बीच जागृति ने मुजफ्फरपुर जिले से "88 गायघाट विधानसभा क्षेत्र" का प्रतिनिधित्व किया।

पिता श्री अन्जेय पटेल के साथ

बिहार के विभिन्न जिलों से आए प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के बीच अपनी कला का प्रदर्शन करना उनके लिए गर्व और उत्साह का क्षण था। इस यात्रा के दौरान उनके पिता ने हर कदम पर उनका हौसला बढ़ाया और विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने भी निरंतर मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान किया। उनके साथ मुजफ्फरपुर जिले से "जिला कार्यक्रम पदाधिकारी", "अवर निर्वाचन पदाधिकारी मुजफ्फरपुर पूर्वी " मौजूद थे।

ज्ञान भवन के विशाल मंच पर अपनी कलाकृतियों को प्रदर्शित करते समय जागृति को अपनी वर्षों की मेहनत, परिवार का विश्वास और शिक्षकों का सहयोग याद आ रहा था। उस क्षण उन्होंने महसूस किया कि सफलता अचानक प्राप्त नहीं होती, बल्कि उसके पीछे अनुशासन, समर्पण, निरंतर अभ्यास और कठिन परिश्रम की लंबी यात्रा होती है।

आगे जागृति पढ़ाई के साथ-साथ मधुबनी पेंटिंग के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाने के लिए इसका कोर्स करना चाहती हैं, जिसमें उनके पिता और परिवार का पूरा सहयोग है। वह भविष्य में इसी क्षेत्र में अपना कैरियर बनाकर मिथिला की गौरवशाली कला और संस्कृति को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाना चाहती हैं।

संदेश

"जागृति की कहानी हमें सिखाती है कि प्रतिभा तभी सफलता में बदलती है, जब उसके साथ मेहनत, लगन और निरंतर अभ्यास जुड़ जाए। माता-पिता का विश्वास, गुरुजनों का मार्गदर्शन और अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण व्यक्ति को हर मंजिल तक पहुँचा सकता है।"

"जागृति ने रंगों से केवल चित्र नहीं बनाए, बल्कि अपने हौसले और संघर्ष से सफलता की ऐसी तस्वीर रची, जो दूसरे बच्चों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गई है।"

हम जागृति के उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं कि इसी तरह तुम्हारी मेहनत तुम्हारी पहचान बने और तुम्हारी सफलता सबके लिए प्रेरणा।

जागृति द्वारा बनाई गई मधुबनी चित्रकला की एक झलक

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका

प्रज्ञानिका

-इंजी० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

Runway AI , ElevenLabs और Gemini Notebook से पहचान

Runway AI – वीडियो बनाने के लिए
ElevenLabs – ऑडियो और आवाज़ के लिए
Gemini Notebook – शिक्षा एवं अध्ययन के लिए

1. Runway AI – वीडियो बनाने के लिए

runway

Runway एक आधुनिक AI आधारित वीडियो निर्माण प्लेटफॉर्म है, जिसकी मदद से टेक्स्ट या फोटो से आकर्षक वीडियो बनाए जा सकते हैं। यह शिक्षकों, विद्यार्थियों, कंटेंट क्रिएटर्स और डिजाइनरों के लिए उपयोगी है। Runway में Text-to-Video और Image-to-Video जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

✅ टेक्स्ट से वीडियो बनाने की सुविधा।
✅ फोटो को AI की मदद से वीडियो में बदलना।
✅ शैक्षणिक और रचनात्मक वीडियो बनाने में सहायता।
✅ वीडियो में अलग-अलग प्रकार के दृश्य और गति तैयार करना।
✅ विज्ञापन, प्रस्तुति और सोशल मीडिया वीडियो बनाने में उपयोगी।
✅ AI की मदद से वीडियो एडिट और बेहतर करने की सुविधा।

Runway AI का उपयोग कैसे करें?

1️⃣ वेबसाइट पर जाएँ – https://runwayml.com/
2️⃣ अपना अकाउंट बनाएँ और लॉगिन करें।
3️⃣ Text-to-Video या Image-to-Video विकल्प चुनें।
4️⃣ अपना Prompt लिखें या फोटो अपलोड करें।
5️⃣ Generate पर क्लिक करके वीडियो तैयार करें।

उदाहरण Prompt:

“एक भारतीय सरकारी विद्यालय की कक्षा में शिक्षक बच्चों को विज्ञान पढ़ा रहे हैं, बच्चे ध्यान से पढ़ रहे हैं, कक्षा का वातावरण उज्ज्वल और प्रेरणादायक है।”

शिक्षकों के लिए उपयोग

शिक्षक Runway की मदद से कठिन विषयों को समझाने के लिए, छोटे शैक्षणिक वीडियो, कहानी आधारित वीडियो और विषय से संबंधित दृश्य सामग्री तैयार कर सकते हैं।

वेब प्लेटफॉर्म: https://runwayml.com/

2. ElevenLabs – ऑडियो और आवाज़ के लिए

ElevenLabs एक AI आधारित ऑडियो और Voice Generation प्लेटफॉर्म है। इसकी मदद से लिखे हुए टेक्स्ट को प्राकृतिक और मानवीय आवाज़ में बदला जा सकता है। इसमें Voice Generation, Text-to-Speech, Voice Cloning, Dubbing और अन्य ऑडियो सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

✅ टेक्स्ट को प्राकृतिक AI आवाज़ में बदलने की सुविधा।
✅ हिंदी सहित अनेक भाषाओं में आवाज़ तैयार करना।
✅ अलग-अलग प्रकार की AI आवाज़ों का चयन।
✅ Voice Cloning और Voice Design की सुविधा।
✅ वीडियो और Presentation के लिए Voice-over बनाना।
✅ Podcast, Audiobook और शैक्षणिक ऑडियो तैयार करने में सहायता।

ElevenLabs की वर्तमान सेवाओं में 70+ भाषाओं में expressive speech और बड़ी Voice Library उपलब्ध है।

Runway AI का उपयोग कैसे करें?

1️⃣ वेबसाइट पर जाएँ – https://elevenlabs.io/
2️⃣ अपना अकाउंट बनाएँ।
3️⃣ Text-to-Speech विकल्प चुनें।
4️⃣ अपना टेक्स्ट लिखें या पेस्ट करें।
5️⃣ अपनी पसंद की आवाज़ चुनें।
6️⃣ Generate करके ऑडियो तैयार करें।

शिक्षकों के लिए उपयोग

शिक्षक अपने पाठ, कहानी, कविता, प्रश्नोत्तरी और अध्ययन सामग्री को ऑडियो में बदलकर विद्यार्थियों के लिए सुनने योग्य शिक्षण सामग्री तैयार कर सकते हैं।

वेब प्लेटफॉर्म: https://eleven labs.io/

3. Gemini Notebook – शिक्षा एवं अध्ययन के लिए

Gemini Notebook

Gemini Notebook Google का AI आधारित Research और Learning Assistant है। इसमें विद्यार्थी और शिक्षक अपनी PDF, Notes, Documents, Web Pages और अन्य अध्ययन सामग्री जोड़कर उनसे प्रश्न पूछ सकते हैं और अध्ययन सामग्री को सरल रूप में समझ सकते हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

✅ अपनी PDF और अध्ययन सामग्री से प्रश्न पूछने की सुविधा।
✅ कठिन विषयों को सरल भाषा में समझने में सहायता।
✅ Notes और महत्वपूर्ण बिंदुओं का सारांश तैयार करना।
✅ अध्ययन सामग्री से प्रश्नोत्तरी और अध्ययन सामग्री तैयार करने में सहायता।
✅ Web URLs, PDFs, Documents और अन्य स्रोतों के साथ काम करने की सुविधा।
✅ विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए Research में उपयोगी।

Google के अनुसार Gemini Notebook PDF, Google Docs, Slides, text, Markdown, web URLs, YouTube URLs और audio files जैसे स्रोतों के साथ काम कर सकता है।

Gemini Notebook का उपयोग कैसे करें?

1️⃣ वेबसाइट पर जाएँ – https://notebooklm.google/
2️⃣ अपने Google Account से लॉगिन करें।
3️⃣ नया Notebook बनाएँ।
4️⃣ अपनी PDF, Notes या अन्य अध्ययन सामग्री जोड़ें।
5️⃣ सामग्री से संबंधित अपना प्रश्न पूछें।
6️⃣ AI की सहायता से विषय को समझें और अध्ययन करें।

शिक्षकों के लिए उपयोग

शिक्षक अपनी पाठ्य सामग्री, PDF, पाठ योजनाओं और अन्य शैक्षणिक दस्तावेजों को Notebook में जोड़कर सारांश, प्रश्नोत्तर और विद्यार्थियों के लिए अध्ययन सामग्री तैयार कर सकते हैं।

वेब प्लेटफॉर्म: https://notebooklm. google/

आलेख: निपुण बिहार में FLN की भूमिका, महत्व और ज्ञान

- अंजली आनंद

शिक्षा किसी भी समाज के विकास की आधारशिला होती है, लेकिन शिक्षा की यह इमारत तभी मजबूत बन सकती है, जब उसकी नींव मजबूत हो। बच्चे के शैक्षिक जीवन की यही मजबूत नींव बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान (Foundational Literacy and Numeracy–FLN) है। प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चे पढ़ना, लिखना, समझना और संख्याओं का सार्थक प्रयोग करना सीखते हैं। यही क्षमताएँ आगे चलकर उसके ज्ञान, आत्मविश्वास और व्यक्तित्व विकास का आधार बनती हैं। निपुण बिहार इसी सोच को विद्यालयी शिक्षा के केंद्र में रखते हुए बच्चों को उनकी प्रारंभिक कक्षाओं में अपेक्षित बुनियादी दक्षताएँ प्राप्त कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इसका उद्देश्य केवल बच्चों को अक्षर और संख्या पहचानना सिखाना नहीं, बल्कि उन्हें इस योग्य बनाना है कि वे पढ़ी हुई बात को समझ सकें, अपने विचार व्यक्त कर सकें, सरल गणितीय समस्याओं को हल कर सकें और अपने ज्ञान का उपयोग वास्तविक जीवन में कर सकें।

बुनियादी साक्षरता का अर्थ बच्चे की उस क्षमता से है, जिसके माध्यम से वह सरल शब्दों और वाक्यों को पढ़कर उनका अर्थ समझ सके, अपनी बात बोल सके तथा आवश्यकता के अनुसार लिख सके। इसी प्रकार बुनियादी संख्यात्मक ज्ञान केवल गिनती बोल लेने तक सीमित नहीं है। इसमें संख्या की पहचान, संख्या-बोध, तुलना, क्रम, जोड़-घटाव, मापन, आकृतियों की पहचान तथा दैनिक जीवन से जुड़ी गणितीय परिस्थितियों को समझने की क्षमता शामिल है।अर्थात् FLN का मूल उद्देश्य “याद करना” नहीं, बल्कि “समझकर प्रयोग करना” है। जब कोई बच्चा कहानी पढ़कर उसका भाव अपने शब्दों में बता पाता है या दुकानदार को दिए गए पैसे का हिसाब स्वयं कर पाता है, तब उसके लिए शिक्षा वास्तविक अर्थों में उपयोगी बनती है।

“मजबूत नींव, सार्थक शिक्षा और निपुण बालक–यही विकसित बिहार की ओर बढ़ता हुआ कदम है।”

निपुण बिहार की सफलता का सबसे महत्वपूर्ण आधार FLN है। प्रारंभिक कक्षाओं में यदि बच्चों की भाषा और गणित संबंधी बुनियादी समझ मजबूत हो जाती है, तो आगे की कक्षाओं में विषयों को समझना उनके लिए आसान हो जाता है। इसके विपरीत, यदि प्रारंभिक स्तर पर ही सीखने की कमी रह जाए तो वह धीरे-धीरे बच्चे के पूरे शैक्षिक जीवन को प्रभावित कर सकती है। इसलिए बच्चों की सीखने की क्षमता को केवल परीक्षा के अंकों से नहीं, बल्कि उनकी वास्तविक दक्षताओं से समझने पर बल देना आवश्यक है। बच्चा कितना पढ़ सकता है, कितना समझ सकता है, अपनी बात कितनी स्पष्टता से कह सकता है, संख्याओं को कितना समझता है और सीखी हुई बात को व्यवहार में कितना ला सकता है–ये सभी उसकी प्रगति के महत्वपूर्ण संकेतक हैं।

FLN को सफल बनाने में शिक्षक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। शिक्षक केवल ज्ञान देने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि बच्चे की सीखने की यात्रा का मार्गदर्शक और सहयोगी है। प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों को सीखने के लिए भय या दबाव की नहीं, बल्कि खुशी, गतिविधि और अनुभव की आवश्यकता होती है। कहानी, कविता, गीत, खेल, चित्र, स्थानीय वस्तुएँ, संवाद, पहेलियाँ, कार्ड, संख्या सामग्री और अन्य TLM के माध्यम से सीखने को रोचक बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, बाजार, खेत, घर, आंगन, पेड़-पौधे और आसपास उपलब्ध वस्तुएँ भी गणित एवं भाषा सीखने के प्रभावी साधन बन सकती हैं। बच्चे अपने स्थानीय परिवेश से जुड़ी चीजों को जल्दी समझते हैं। इसलिए FLN में स्थानीय संदर्भ और बाल-केंद्रित शिक्षण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

FLN के संदर्भ में आकलन का उद्देश्य केवल यह जानना नहीं होना चाहिए कि बच्चा सफल हुआ या असफल। इसका उद्देश्य यह पहचानना होना चाहिए कि बच्चा क्या जानता है, क्या कर सकता है और उसे आगे सीखने के लिए किस प्रकार के सहयोग की आवश्यकता है।नियमित एवं सरल आकलन से शिक्षक प्रत्येक बच्चे की सीखने की स्थिति को समझ सकता है। इसके आधार पर बच्चों के लिए अलग-अलग स्तर की गतिविधियाँ तैयार की जा सकती हैं। इससे कक्षा में प्रत्येक बच्चे को सीखने का अवसर मिलता है और कोई बच्चा सीखने की प्रक्रिया से पीछे नहीं छूटता।

“हर बच्चा पढ़े, हर बच्चा समझे, हर बच्चा आगे बढ़े—यही निपुण बिहार की सच्ची पहचान है।”

बच्चे की शिक्षा केवल विद्यालय की चारदीवारी तक सीमित नहीं होती। घर और समुदाय भी बच्चे की पहली पाठशाला हैं। अभिभावक यदि प्रतिदिन कुछ समय बच्चे के साथ पढ़ने, कहानी सुनने, बातचीत करने, वस्तुओं की गिनती करने और दैनिक जीवन से जुड़े छोटे-छोटे सवाल पूछने में लगाएँ, तो बच्चे की सीखने की क्षमता तेजी से मजबूत हो सकती है। बिहार जैसे विविध सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश वाले राज्य में स्थानीय समुदाय की भागीदारी FLN को और प्रभावी बना सकती है। बच्चे की भाषा, परिवेश, लोककथाएँ, स्थानीय खेल और जीवन से जुड़े अनुभव सीखने को सहज और अर्थपूर्ण बना सकते हैं।

FLN बच्चे के पूरे शैक्षिक भविष्य को प्रभावित करता है। यदि बच्चा प्रारंभिक स्तर पर पढ़ना और समझना सीख जाता है, तो वह आगे चलकर अपनी पाठ्यपुस्तकों को स्वयं समझने की दिशा में बढ़ता है। इसी प्रकार संख्यात्मक ज्ञान उसे दैनिक जीवन में निर्णय लेने, गणना करने और समस्याओं का समाधान खोजने में सक्षम बनाता है। FLN बच्चों में केवल शैक्षिक दक्षता नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, तार्किक सोच, जिज्ञासा, अभिव्यक्ति और समस्या-समाधान की क्षमता भी विकसित करता है। यही कारण है कि FLN को केवल प्राथमिक शिक्षा का एक हिस्सा न मानकर बच्चे के संपूर्ण विकास की आधारशिला के रूप में देखना चाहिए।
निपुण बिहार को सफल बनाने की जिम्मेदारी केवल शिक्षक की नहीं है। इसमें विद्यालय प्रधान, शिक्षक, अभिभावक, समुदाय और शिक्षा व्यवस्था से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि विद्यालय आने वाला प्रत्येक बच्चा केवल उपस्थिति दर्ज कराने वाला विद्यार्थी न हो, बल्कि वास्तव में सीखने और आगे बढ़ने वाला बच्चा बने। इसके लिए कक्षा में ऐसा वातावरण आवश्यक है जहाँ बच्चा प्रश्न पूछने से न डरे, गलती करने पर हतोत्साहित न हो और अपनी गति से सीखने का अवसर पाए। बच्चे की छोटी-सी प्रगति भी बड़ी उपलब्धि है, यदि वह उसे सीखने के अगले चरण तक ले जाती है।

निपुण बिहार केवल एक शैक्षिक लक्ष्य नहीं, बल्कि बिहार के बच्चों के बेहतर भविष्य की दिशा में एक व्यापक संकल्प है। FLN इस संकल्प की आधारशिला है। जब कोई बच्चा शब्दों को केवल पढ़ता नहीं, बल्कि उनका अर्थ समझता है; जब वह संख्याओं को केवल गिनता नहीं, बल्कि उनका जीवन में प्रयोग करता है; जब वह अपनी बात आत्मविश्वास से कहता है और समस्या का समाधान स्वयं खोजने का प्रयास करता है—तभी शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करती है। निपुण बिहार की असली सफलता उस दिन होगी, जब बिहार का प्रत्येक बच्चा पढ़ने में सक्षम, समझने में समर्थ, गणना में दक्ष और अपने भविष्य के प्रति आत्मविश्वासी होगा। इसलिए आज आवश्यकता है कि हम FLN को केवल एक कार्यक्रम न समझें, बल्कि इसे हर बच्चे के सीखने के अधिकार और उज्ज्वल भविष्य की बुनियाद के रूप में स्वीकार करें।

“मजबूत नींव, सार्थक शिक्षा और निपुण बालक—यही विकसित बिहार की ओर बढ़ता हुआ कदम है।”

आलेख : नौकरी देने की मानसिकता का सृजन करना होगा

- विपिन वियान ' हिंदुस्तानी '

हमारे समाज में एक लंबे अरसे तक नौकरी को निकृष्टम माना जाता था और इस संबंध में एक कहावत भी प्रचलित है
"उत्तम खेती, मध्यम बान, निकृष्ट चाकरी (नौकरी), भीख निदान।"

अर्थात कृषि कार्य को उत्तम आजीविका का साधन माना जाता था। कृषि कार्य के लिए प्रकृति पर निर्भरता अधिक थी, इसलिए आय के नियमित साधन का आभाव था। इसके बावजूद संयुक्त परिवार की सुदृढ़ संकल्पना अपने अस्तित्व में थी। जीवनस्तर अपेक्षाकृत साधारण था। खाद्य सामग्री हेतु आनाज अथवा सब्जी का उत्पादन अपने कृषि भूमि में करने का प्रयास होता था। एक किसान परिवार के द्वारा विवाह अथवा उत्सव के अतिरिक्त अनाज अथवा सब्जी खरीदना प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझा जाता था। जीवन निर्वाह हेतु पक्का मकान, वर्ष में परिवार के सभी सदस्यों को दो जोड़ी कपड़ा और द्वार पर बंधे दुधारु जानवरों से प्राप्त दूध दही और घी के साथ, दो वक्त नियमित रूप से भोजन प्राप्त कर लेना, धनाढ्य परिवारों की श्रेणी में आता था। हमारा समाज और राष्ट्र कृषि प्रधान था। परिवार के बच्चे आस पास मौजूद गुरुजी से अक्षर ज्ञान और अंक ज्ञान के साथ जीवन निर्वाह हेतु जरूरी ज्ञान प्राप्त कर अपने पुस्तैनी कृषि अथवा व्यवसाय व्यापार संबंधी कार्य को पीढ़ी दर पीढ़ी सीख कर, उसे आगे बढ़ाने में गौरव महसूस करते थे।

वक्त के साथ इंसानी जरूरतों और मानसिकता में व्यापक बदलाव आया। अंग्रेजों की वर्षों की गुलामी और लगान की भयानक बोझ से व्याकुल राष्ट्र के नागरिकों का कृषि कार्य एवं पारंपरिक व्यवसाय के प्रति मोहभंग होने लगा। अंग्रेजों की चाकरी से एक नवीन धनाढ्य समुदाय का जन्म हुआ। यह लोग खुद को सत्ता का भागीदार समझते थे, इसलिए नियोक्ता के प्रति इनका खास समर्पण होता था। अंग्रेजों की चाकरी करने वाले लोगों का जीवन स्तर सामान्य की अपेक्षा बेहतर था। अंग्रेजी अफसरों अर्थात प्रभावशाली लोगों के करीबी होने के कारण इन्हें अपने लोगों के बीच खास रुतबा प्राप्त था। धीरे धीरे संयुक्त परिवार से नए पढ़े लिखे लोगों का मोहभंग होने लगा। न्यूक्लियर फैमिली के साथ शहरी जिंदगी के प्रति युवाओं में क्रेज बढ़ने लगा। इस बीच कृषि कार्य के साथ साथ पुस्तैनी व्यवसाय के प्रति निकृष्टता की भावना का जन्म हुआ और अकादमिक डिग्री में अव्वल अंक प्राप्त करने का होड़ बढ़ना प्रारंभ हो गया। आजादी के बाद इस परंपरा ने विशेष गति प्राप्त किया। शिक्षा का ध्येय ज्ञान प्राप्त करने की जगह ज्यादा से ज्यादा वेतन और सुविधाओं वाली नौकरी प्राप्त करना हो गया। एक वक्त के पश्चात पढ़े लिखे बेरोजगार युवाओं की एक बड़ी भीड़ खड़ी हो गई। कुछ सरकारों के द्वारा इस समस्या की गंभीरता को देखते हुए, पढ़े लिखे बेरोजगार युवाओं के तुष्टिकरण हेतु बेरोजगारी भत्ता दिए जाने की अजीबोगरीब परंपरा की शुरुआत हुई लेकिन हमारे नीति नियंता समस्या की जड़ अर्थात कारणों के प्रति अनभिज्ञ होकर गंभीर निंद्रा में सोए रहे।

वक्त के साथ यह समस्या बेहद गंभीर हो गई। पढ़े लिखे युवाओं के बेरोजगारी के समस्या के निदान हेतु स्व रोजगार को बढ़ावा देने हेतु केंद्र और राज्य सरकार के द्वारा कई योजनाओं की शुरूआत की गई। इस बीच इस गंभीर मुद्दे ने शिक्षा व्यवस्था की खामियों के प्रति कई बुद्धिजीवियों का ध्यान आकृष्ट किया। आखिर एक पढ़ा लिखा युवा, अगर अपने जीवन यापन हेतु सिर्फ और सिर्फ नौकरी की तलाश में रहता है अथवा समाज और राष्ट्र के लिए आर्थिक रूप से बोझ बन जाए तो यह वाकई चिंताजनक है और बेरोजगारी अपने आप में कई गंभीर समस्याओं का जनक होता है।

एक राष्ट्र जो अर्थशास्त्र की दुनियां में कृषि प्रधान देश था, वास्तव में हुनर प्रधान देश था। अपनी पुस्तैनी व्यापार व्यवसाय के प्रति नई पीढ़ी के मन में सम्मान था और बिना किसी अतिरिक्त प्रयास के इस कार्य में दक्ष होते थे। माता पिता और संयुक्त परिवार के सभी बड़े सदस्य बच्चों को बातों ही बातों में अपनी पुस्तैनी कृषि व्यवसाय की बारीकियों का ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाते थे। हालांकि यह हमारे समाज का दुर्भाग्य था कि अलग अलग कार्य करने वाले लोग, अलग अलग जातियों में बंटी हुई थी। इसके बावजूद एक दूसरे की जरूरत पूरा करते हुए, एक मधुर सामाजिक जीवन का पारंपरिक ताना बाना इंसान के जीवन को कम भौतिक सुविधाओं के बावजूद खास सुकून देता था। लकड़ी का काम करने वाले बढ़ई, लोहा से बरतन और अन्य औजार बनाने वाले लोहार, बाल काटने वाले नाई, कपड़ा धोने वाले धोबी, दूध दही घर घर तक पहुंचाने वाले ग्वाला, मिठाई और स्वादिष्ट भोजन बनाने वाले हलवाई, तेल निकालने वाले तेली, व्यापार व्यवसाय में दक्ष बनिया, धर्मकांडो में पारंगत विद्वान पंडित आदि अलग अलग प्रकार के समुदाय के लोग किसी खास स्किल में स्वाभाविक रूप से दक्ष होते थे। जातियों में बंटने वाले यह समुदाय राष्ट्रीय एकता की दृष्टिकोण से थोड़ा घातक थे, लेकिन बिना किसी उच्च शिक्षा के बावजूद इनके पास अलग अलग समुदाय से आने वाले इन बच्चों के पास एक खास प्रकार की दक्षता होती थी और कम आय के बावजूद इनके पास जीवनयापन के लिए काम चलाऊ आय के स्त्रोत आसानी से उपलब्ध होते थे। सबसे आश्चर्य की बात कि इनमें से अधिकांश कार्यों के दक्ष लोगों के लिए आज भी रोजगार आसानी से उपलब्ध हैं। मगर सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि उच्च शैक्षणिक योग्यता वाले युवा पीढ़ी का अपने पुस्तैनी व्यवसाय के प्रति सम्मान समाप्त हो चुका है। अधिकांश युवाओं को क्लर्क की शूट बूट वाली सरकारी या प्राइवेट नौकरी चाहिए। कंप्यूटर पर बैठकर किसी दूसरे के व्यवसाय का हिसाब जोड़ना एक पढ़े लिखे युवा के लिए एक प्रतिष्ठित रोजगार बन चुका है जबकि उससे कम पढ़ा लिखा इंसान जूता बनाने की कंपनी खड़ा कर ले रहा है। कल तक भोजन बनाने का सर्वाधिकार महिलाओं के पास सुरक्षित था, आज महिलाओं से ज्यादा पुरुष बड़े बड़े होटल और रेस्टोरेंट में सेफ का कार्य कर रहे हैं। बड़े बड़े ब्यूटी पार्लर में संभ्रांत परिवार के बच्चे काम कर रहे हैं जबकि नाई के बच्चों को इस कार्य से घृणा महसूस होने लगी थी।

इस प्रकार स्पष्ट है कि वक्त के साथ तकनीकी कुशलता के समावेश ने कार्य के स्वरूप में बदलाव ला दिया है, इसके बावजूद परंपरागत व्यवसाय आज भी अपने अस्तित्व में कायम है। उच्च शिक्षा के साथ साथ बचपन से किसी खास कार्य में दक्षता का प्रशिक्षण देकर युवाओं को स्वावलबीं और आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास नितांत जरूरी है। इसके साथ ही विविध प्रकार के कार्यों में इस्तेमाल होने वाले नई तकनीकों का व्यवहारिक प्रशिक्षण को भी

स्किल डेवलपमेंट का अंग बनाकर, शिक्षित युवाओं का नौकरी के प्रति निर्भरता वाली मानसिकता में व्यापक बदलाव लाया जा सकता है। सरकारी सेवा के अंतिम उम्र की सीमा पार कर जाने तक फॉर्म भरने वाले युवाओं के माइंड सेट में बदलाव

मध्य विद्यालय जगदीशपुर, भागलपुर

लाना, इतना आसान कार्य नहीं है लेकिन अगर उसके अंदर निहित स्किल से उसे यह आत्मविश्वास प्राप्त होगा कि वह सरकारी नौकरी के बगैर भी कुछ अच्छा कर सकता है तो शायद समाज में एक चमत्कारी बदलाव संभव है। स्किल के व्यवहारिक ज्ञान के साथ साथ उच्च शिक्षा और स्टार्ट अप के लिए आवश्यक इनीशियल कैपिटल की सरलता से व्यवस्था, इस दिशा में मिल का पत्थर साबित हो सकता है। भारत में लघु और कुटीर उद्योगों का जाल बिछाकर, इसे औद्योगिक हब बनाया जा सकता है। नौकरी के पीछे भागने वाली संघर्षशील युवा पीढ़ी अपने भाग्य का निर्माण अपनी दक्षता और सामर्थ्य के दम पर करने को अगर ठान ले, तो देश में युवा नेताओं की बाढ़ पर बांध लगाकर, युवा शक्ति के असीम ऊर्जा और इच्छा शक्ति की बदौलत विकास की एक नई गाथा का सृजन संभव है। खाली दिमाग शैतान का घर होता है, जिसमें जाती धर्म और अन्य नकारात्मक विचारों को डाल कर आसानी से कॉकरेच पार्टी का गठन संभव है, जहां युवा खुद की तुलना कॉकरोच से कर आनंद की अनुभूति करने लगते हैं लेकिन अगर थोड़ा सा इच्छा शक्ति दिखा कर राष्ट्र का धनबल और सरकारी मिशनरी का उपयोग युवा उद्यमियों की फ़ौज खड़ी करने में किया जाए तो निश्चित रूप से एक ऐसे ताकतवर राष्ट्र का सृजन संभव है, जहां विकसित राष्ट्र के युवा भी नौकरी में सलेक्शन को लालायित होंगे। आज लोगों को मेरी यह कौड़ी कल्पना मुर्खतापूर्ण लग सकती है लेकिन पंद्रह बीस वर्षों की कठिन पढ़ाई के पश्चात उसकी मासिक कीमत अगर औसतन पंद्रह से पचास हजार है, वाली बात युवाओं को समझ आ जाए तो उसके माइंड सेट में एक न एक दिन बदलाव जरूर आयेगा। उस दिन दस में से पांच युवा जरूर कहेंगे कि मैं नौकरी करने नहीं, नौकरी देने के लिए पैदा लिया हूं, भले उनसे लाभान्वित होने वाले युवाओं की संख्या एक अंक में ही क्यों न हो लेकिन यह बदलाव भारत की लग्नशील और कर्मठ युवाओं के द्वारा राष्ट्र के स्वर्णिम अध्याय का संरचना करेगा। बस इसके लिए हमारी सरकार को थोड़ी सी ईमानदारी से ईमानदार प्रयास करना होगा।

आलेख : शिक्षा और संस्कृति

- अमृता चंद्रा

भूमिका –शिक्षा और संस्कृति किसी भी भाषा किसी भी समाज की पहचान और विकास के दो महत्वपूर्ण आधार है।शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान ,विवेक और कौशल प्रदान करती है जबकि संस्कृति उसे अपने जड़ो परंपराओं ,मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारियों से जोड़ती है।केवल शिक्षित होना पर्याप्त नही है ,शिक्षा का उद्देश्य ऐसे मनुष्य बनाना है जो संवेदनशील, जिम्मेदार, और संस्कारवान नागरिक हो ।

शिक्षा और संस्कृति में सम्बंध–शिक्षा संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक पहुचाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है ।हमारी भाषा,लोक कला,लोकगीत परंपराएं ,नैतिक मूल्य ,और सामाजिक व्यवहार बच्चो को शिक्षा के माध्यम से पहुचाते है।और संस्कृति यह समझाती है कि ज्ञान का उपयोग समाज के हित में कैसे किया जाए । यदि शिक्षा में संस्कृति का समावेश न हो तो शिक्षा केवल परीक्षा और रोजगार प्राप्त करने का साधन मात्र बन सकती है।दूसरी ओर यदि संस्कृति में शिक्षा और वैज्ञानिक दृश्टिकोण का समावेश न हो तो समाज रूढ़ियों में फस कर रह जायेगा।

विद्यालय की भूमिका– संस्कृति और शिक्षा का मिलन में विद्यालय अहम भूमिका निभाता है।सालों से जहाँ विद्यालय में बच्चो को विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती है वही विद्यालयों में समय समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रमो का भी आयोजन कर बच्चो को अपनी संस्कति से परिचय कराया जाता है। कभी लोकगीत लोकनृत्य के माद्यम से तो कभी स्थानीय इतिहास के बारे में जानकारी दे उनके लिए चित्रकला ,कहानी प्रतियोगिता आदि का आयोजन कर ।इससे बच्चो को अपने संस्कृति के प्रति रुचि और उनकी रचनात्कमकता भी विकसित होती है।

संस्कृति का अर्थ केवल परंपरा नही– संस्कृति को केवल पहनावे,त्योहारों,लोकगीत,लोकनृत्य,आदि तक ही सीमित नही होना चाहिए ।संस्कति से हमारा व्यवहार ,भाषा,सोच,दुसरो के प्रति सम्मान,प्रकृति के प्रति सवेदनशीलता,और समज़ज के प्रति जिम्मेदारी भी शामिल है।

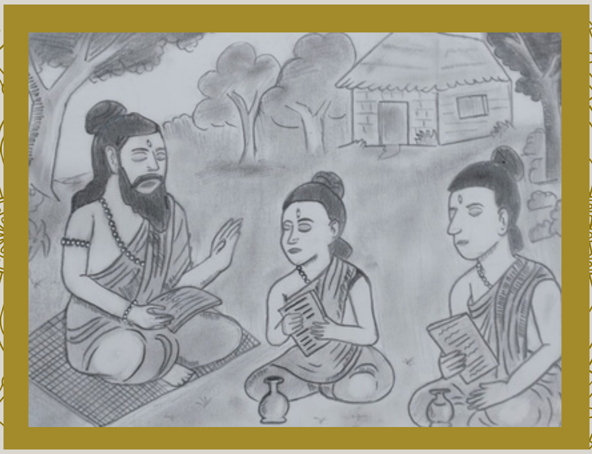

एक बच्चा यदि अपने से अलग भाषा, समुदाय,या परम्पराओ वाले व्यक्ति का सम्मान करना जनता है तो वह वास्तव में सांस्कृतिक शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

आधुनिक शिक्षा और सांस्कृतिक मूल्य- आज विज्ञान एवम तकनीक बहुत तेजी से बदल रहे है। डिजिटल माध्यम से बच्चे दुनिया के विभिन्न संस्कृतियों से जुड़ रहे है। अगर देखा जाए तो यह एक अवसर भी है और एक बहुत बड़ी चुनोति भी। हमे बच्चो को आधुनिक ज्ञान से तो जोड़ना है पर साथ साथ उसे अपनी संस्कृति से भी जोड़े रखना भी आवश्यक है। यह समझाना जरूरी है कि आधुनिक होने के साथ साथ हमे अपनी संस्कति से भी जुड़ना भी आवश्यक है।आधुनिकता का अर्थ वैज्ञानिक सोच के साथ मानवीय मूल्यों को अपनाना और सांस्कृतिक विरासत का सम्मान करना है।

शिक्षक की भूमिका- शिक्षक शिक्षा और संस्कृति के बीच सेतु का कार्य कर सकते है ।शिक्षक अपने व्यवहार से बच्चो को सम्मान, सहयोग, अनुशासन, और सवेदनशीलता सिखा सकते है। कक्षा में स्थानीय उदाहरणों और बच्चो के अनुभवों को स्थान दे कर शिक्षा को और जीवंत बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष– शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान देती है और संस्कृति जीवन जीने की दिशा । शिक्षा हमे सिखाती है कि हमे क्या और कैसे सोचना है जबकि संस्कति हमे यह समझाती है अपने ज्ञान और व्यवहार का उपयोग किस प्रकार और कैसे करना है । इसलिए हमें ऐसी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है जो बच्चो को केवल अच्छे अंक प्राप्त करने वाला विद्यार्थी नही बल्कि सवेदनशील विवेकशील वैज्ञानिक दृश्टिकोण वाला जिम्मेदार नागरिक बने।

तभी हम एक स्वस्थ समावेशी ओर मजबूत समाज की नींव रख सकेंगे।

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका
प्रज्ञानिका

पारंपरिक सीमाओं से परे: भाषा शिक्षण में कला, संगीत और तकनीक का संगम

- मुकेश कुमार शर्मा

भूमिका

"जब भाषा केवल व्याख्यान न रहकर संगीत, दृश्य और तकनीक का रूप ले लेती है, तो कक्षा का नीरस वातावरण जीवंत अधिगम में बदल जाता है।"

ग्रामीण परिवेश के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में परंपरागत 'व्याख्यान विधि' के कारण भाषा की कक्षाएं अक्सर उबाऊ हो जाती थीं, जिससे छात्रों की उपस्थिति और ठहराव प्रभावित होता था। इस चुनौती को अवसर में बदलते हुए भाषा शिक्षण को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए किए गए प्रमुख नवाचारों का व्यवस्थित प्रारूप नीचे दिया गया है:

प्रमुख शिक्षण नवाचार एवं उनका प्रभाव

क्र० सं०	नवाचार का क्षेत्र	क्रियान्वयन की विधि	शैक्षणिक प्रभाव	चित्र
1.	गेय शैली एवं संगीतमय पद्य शिक्षण	सूरदास, तुलसीदास आदि के पदों तथा पाठ्यक्रम की कविताओं को धुन बनाकर संगीतबद्ध वाचन करना।	•अवधी एवं ब्रजभाषा के प्रति भय समाप्त होना। •छंद-पंक्तियाँ स्वतः कंठस्थ होना। •भावार्थ एवं परीक्षा प्रश्नों के उत्तर सहजता से लिखना।	
2.	दृश्य पहचान चार्ट	पाठ्यक्रम में शामिल सभी साहित्यकारों/रचनाकारों के चित्र मय नाम चार्ट पेपर पर कक्षा में प्रदर्शित करना।	• रटने के बजाय दृश्य स्मृति (VISUAL MEMORY) का विकास। • साहित्यकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व से सीधा जुड़ाव।	
3.	संस्कृत श्लोकों का रागबद्ध वाचन	शिक्षक की अनुपलब्धता की स्थिति में 9वीं-10वीं के छात्रों के लिए श्लोकों का लयबद्ध सस्वर पाठ व अनुवाचन।	• उच्चारण दोष का निवारण। • श्लोकों का सरलीकरण तथा अर्थ को आत्मसात करने में सुगमता। • छात्र ठहराव में अप्रत्याशित वृद्धि।	
4.	आईसीटी (ICT) एवं स्मार्ट टीवी का समन्वय	स्मार्ट टीवी पर शैक्षिक वीडियो, बोर्ड उत्तर-पुस्तिका मूल्यांकन पैटर्न एवं अंक-विभाजन का लाइव प्रदर्शन।	• उत्तर-लेखन की सटीक शैली का विकास। • परीक्षा-भय समाप्त होकर आत्मविश्वास और सफलता दर में वृद्धि।	
5.	शनिवारीय गतिविधि आधारित भाषा प्रयोगशाला	प्रत्येक शनिवार को कहानी-लेखन, अनुच्छेद, निबंध-लेखन व समूह प्रस्तुति सत्रों का आयोजन।	• पठन, लेखन एवं अभि-व्यक्ति कौशल का संवर्धन। • तार्किक क्षमता का विकास। • विद्यालय के समग्र अधिगम परिवेश और उपस्थिति में गुणात्मक सुधार।	

नवाचार का सार-निष्कर्ष

शिक्षण दृष्टि: भाषा का अधिग्रहण केवल व्याकरणिक नियमों से नहीं, बल्कि अनुभूतियों, लय और गतिविधियों के माध्यम से सहज होता है।

प्रमुख संदेश: संसाधनों के अभाव के बावजूद शिक्षक की प्रबल इच्छाशक्ति और रचनात्मक प्रयोग विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की राह आसान बना सकते हैं।

शिक्षक का परिचय जिन्होंने ये पहल की

नीरज कुमार झा
विद्यालय अध्यापक (11-12)
उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय, भवानीपुर
प्रखंड - नारायणपुर, जिला - भागलपुर (बिहार)

NEP 2020 और उपचारात्मक शिक्षण

- राघवेन्द्र कुमार झा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूल में "कोई भी बच्चा पीछे ना छूटे (NO CHILD LEFT BEHIND)" है। इसी वजह से NEP में उपचारात्मक शिक्षण को "शिक्षण का बोझ नहीं" बल्कि "सेवा का आधार" माना गया है।

उपचारात्मक शिक्षण एक नैदानिक व्यवस्था है। इसे इस रूप में समझा जाना चाहिए कि जो बच्चा किसी कारण से निर्धारित समय में सीखने से चूक गया; उसकी पूर्ति उपचारात्मक शिक्षण दद्वारा करना। यह पीछे छूटे बच्चों को साथ लाता है तथा उनके छीजन को रोकता भी है।

उपचारात्मक शिक्षण कोई नया शब्द नहीं है। अमेरिकी मनोवैज्ञानिक डॉक्टर सैमुअल आर्टन ने 1925 में सबसे पहले शिक्षा में DIAGNOSE (निदान) और REMEDY (उपचार) जैसे शब्द शिक्षा में लाया। "हर बच्चे की सीखने की गति अलग है।" इसलिए भारत में 1964-66 के कोठारी आयोग ने कमजोर बच्चों के लिए अतिरिक्त व्यवस्था की बात की। 1986 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति में OPERATION BLACKBOARD और

MIL : MINIMUM LEVEL OF LEARNING

प्रत्येक बच्चे के लिए MLL (MINIMUM LEVEL OF LEARNING) अर्थात न्यूनतम अधिगम स्तर की बात की और नहीं सीखने वाले बच्चों के लिए उपचार की बात कही। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अनुसार "कोई बच्चा फेल नहीं होगा लेकिन उसे विशेष सहायता दी जाएगी" यहीं से उपचारात्मक शिक्षण की जरूरत कानूनी हुई। परन्तु, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उपचारात्मक शिक्षण को सबसे ज्यादा बल दिया गया।

सामान्यत: DIAGNOSE में कमी खोजने, REMEDY में खेल, कहानी, शिक्षण अधिगम सामग्री (TLM) दवारा उपचार करने एवं RETEST में यह जांचना कि कितना सुधार हुआ; की प्रक्रिया अपनाई जाती है।

यहां निपुण भारत मिशन और मिशन दक्ष अभियानों द्वारा इसका क्रियान्वयन किया जा रहा है। बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (FLN) के लिए पीयर लर्निंग कक्षाओं का संचालन विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों जैसे इन्वॉल्व लर्निंग सॉल्यूशंस फाउंडेशन, मंत्रा4चेंज, प्रथम आदि के सहयोग से किया जा रहा है।

इसके तीन चरण को D-R-R अर्थात्

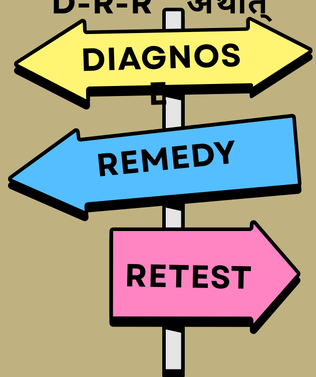

के रूप में समझा जा सकता है

पीयर लर्नर भाषा और गणित के दृष्टिकोण से टेस्टिंग टूल के आधार पर उच्चतम स्तर पर होते हैं। इससे इनका खुद का ज्ञान भी पक्का होता है। शिक्षक अवलोकनकर्ता और सहयोगकर्ता की भूमिका में रह रहे हैं।

कक्षा 5 एवं 6 के बच्चों के साथ गर्मी की छुट्टियों में स्वयंसेवकों एवं समुदाय की सहभागिता से समर कैंप का आयोजन किया गया ।

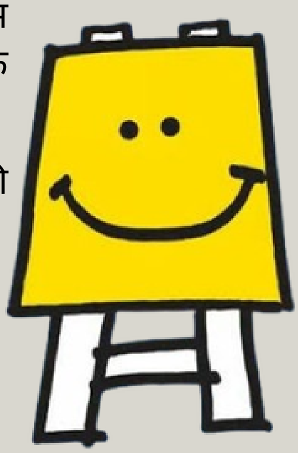

चौथी से आठवीं तक के बच्चों के लिए प्रथम संस्था के सहयोग से बच्चों के सीखने के स्तर अनुसार समूह बनाकर TARL (TEACHING AT THE RIGHT LEVEL) पद्धति से प्रतिदिन एक घंटा भाषा एवं एक घंटा गणित कल 60 दिनों तक अर्थात 120 घंटे या 12 सप्ताह का शिक्षण योजना बनाकर क्रियान्वयन की प्रक्रिया प्रगति पर है। इसमें शिक्षण अधिगम सामग्री (TLM) एवं FLN किट का उपयोग उपचारात्मक शिक्षण को प्रभावी बनाएगा। शिक्षक मेंटर की भूमिका में होंगे।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सामान्य शिक्षण सबके लिए है किन्तु उपचारात्मक शिक्षण हर एक के लिए। NEP 2020 का उपचारात्मक शिक्षण डर हटाकर हर बच्चे में आत्मविश्वास जगाएगा। साथ ही इस प्रक्रिया में जब बच्चा साथी से सीखता है तो "मैं कर सकता है। यह भाव उसके सीखने की शुरुआत है। यही असली निपुणता है।

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका

प्रज्ञानिका

- चंद्रकांत कुमार

चॉक से क्लिक तक : शिक्षकों की जनगणना यात्रा
33 सवाल और 140 करोड़ लोगों के सपने

भूमिका :-

“यदि कोई आपके घर आकर आपसे कुछ प्रश्न पूछे कि आपके घर की छत पक्की है या फूस की? घर में कितने लोग रहते हैं? मुख्य भोजन कौन-सा अनाज है? पानी कहाँ से आता है? घर में मोबाइल या इंटरनेट है?”

सवाल सुनकर शायद लगे–भला इन बातों से देश की तस्वीर कैसे बनेगी? लेकिन यही छोटे-छोटे सवाल भारत की बड़ी तस्वीर तैयार करते हैं। आखिर जनगणना केवल लोगों की गिनती है या देश की जिंदगी का आईना? इन्ही बातों को समझने के लिए हम समाज के लोगों से जुड़े जनगणना की कुछ वास्तविक तस्वीर और शिक्षकों के द्वारा किए गए अथक प्रयासों की कहानी को साझा करता हूँ।

किन्ही विद्वानों का कहना है कि “आँकड़ों के बिना आपकी बात केवल एक राय है।”

इसीप्रकार भारत में जनगणना-2027 इसी सवाल का जवाब खोजने वाला दुनिया का सबसे बड़ा प्रशासनिक-सांख्यिकीय अभ्यास बनी है। पिछली जनगणना 2011 में हुई थी। कोविड-19 के कारण 2021 की जनगणना नहीं हो सकी। अब 2027 की जनगणना भारत की 16वीं और स्वतंत्रता के बाद 8वीं जनगणना अग्रसर है। सरकारी जानकारी के अनुसार इसमें पहली बार व्यापक रूप से डिजिटल माध्यम का प्रयोग, स्व-गणना की सुविधा और जनसंख्या गणना के चरण में जातिगत आंकड़ों का संग्रह किया गया है।

स्वाभाविकत: आपलोगों को मन में प्रश्न आएगा कि आखिर जनगणना जरूरी क्यों है?

क्योंकि किसी गाँव में कितने बच्चे स्कूल जाने की उम्र के हैं? कितने परिवारों को पक्के घर की जरूरत है? कहाँ पानी और शौचालय की सुविधा कम है? किस क्षेत्र से कितने लोग रोजगार के लिए बाहर जाते हैं? कितने बुजुर्ग अकेले रह रहे हैं? शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा की योजनाएँ आखिर किस आधार पर बनेंगी? तो इन प्रश्नों का उत्तर किसी विश्वसनीय आँकड़ों के आधार पर ही होगी।

अत: सर्वविदित है कि "जनगणना में दर्ज हर सही उत्तर केवल एक संख्या नहीं होता है, बल्कि आने वाले भारत की योजना में दर्ज एक जरूरी तथ्य बन जाता है।”

जनगणना इसी विश्वसनीय आधार का निर्माण करती है। सरकार के अनुसार जनगणना से प्राप्त सामाजिक, आर्थिक और जनसांख्यिकीय आँकड़े योजनाकारों, प्रशासकों और शोधकर्ताओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं।

जनगणना का ऐतिहासिक सफर :-

भारत में जनगणना की परंपरा बहुत पुरानी है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र और अबुल फजल की आइन-ए-अकबरी में भी इसके संकेत मिलते हैं। आधुनिक भारत में 1865 से 1872 के बीच प्रारंभिक जनगणना प्रयास किए गए और 1881 में पहली समकालिक राष्ट्रव्यापी जनगणना आयोजित की गई। तब से यह देश की प्रशासनिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार बनी हुई है।

वर्तमान में कागज से मोबाइल तक–जनगणना का बदलता स्वरूप :-

तो इस बार जनगणना कार्य में क्या बदला है? सबसे बड़ा बदलाव है–कागज से मोबाइल तक का सफर। इस बार गणनाकर्मी मोबाइल ऐप के माध्यम से आंकड़े दर्ज किए और आगे भी करेंगे। स्व-गणना की सुविधा के माध्यम से नागरिक स्वयं भी ऑनलाइन जानकारी भरे। इसके बाद प्राप्त

Self-Enumeration ID (SE ID) गणनाकर्मी को दी जाती थी जिससे वे जानकारी का सत्यापन करते थे। साथ ही, जनगणना प्रबंधन एवं निगरानी प्रणाली के माध्यम से कार्य की प्रगति पर लगभग वास्तविक समय में नजर रखी जा रही थी। यानी गाँव की गली से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक—डेटा डिजिटल रास्ते से आगे बढ़ा। पर एक सवाल फिर भी है—क्या मोबाइल ऐप से जनगणना आसान हो जाएगी? नही, शायद तकनीक काम को तेज कर दे, लेकिन घर का दरवाजा खटखटाने वाला इंसान आज भी जरूरी है। सरकार ने भी स्पष्ट किया कि स्व-गणना अतिरिक्त सुविधा है; पर घर-घर जाकर गणनाकर्मियों द्वारा सत्यापन और कवरेज आवश्यक है।

शिक्षकों के माथे पर रहा जनगणना कार्य :-

जनगणना की चर्चा शिक्षक के बिना अधूरी है। देशभर में लाखों शिक्षक और सरकारी कर्मचारी इस महाअभियान में अपनी भूमिका निभाए। सरकारी व्यवस्था के अनुसार करीब 31 लाख गणनाकर्ता और पर्यवेक्षक प्रशिक्षण के बाद इस विशाल कार्य में लगाए गए। इन आदरणीय शिक्षकों के लिए यह केवल अतिरिक्त सरकारी ड्यूटी नहीं अपितु राष्ट्र-निर्माण की जिम्मेदारी भी थी।

नैपुर विद्यालय के एक गणित के शिक्षक सौरव सर कहते हैं– "स्कूल में हम बच्चों को गणितीय सूत्र-अंक आदि समझाते हैं, लेकिन जनगणना में घर-घर जाकर हमें समाज के आर्थिक अंक व जीवन सूत्र को करीब से देखने का मौका मिला। कौन परिवार किस परिस्थिति में जी रहा है, यह किताब से नहीं, जमीन पर जाकर हकीकत समझ में आता है।"

इसी प्रकार मकदमपुर (मंसूरचक) के शिक्षक विकास सर अपने जनगणना का अनुभव बताते कहते हैं कि– "पहिले लगता था कि मोबाइल में डेटा भरना ही काम है। लेकिन जब किसी बुजुर्ग से उसकी जानकारी पूछते थे या किसी परिवार के बंद दरवाजे पर दो-तीन बार जाना पड़ता था, तब समझ में आया कि सही आंकड़ा जुटाना कितनी जिम्मेदारी वाला काम है।"

इसी प्रकार मोख्तियारपुर भगवानपुर विद्यालय के शिक्षक अनुपम सर बताते हैं कि– "गाँव में लोग पूछते थे–'सर, ई जानकारी से हमरा का फायदा होई?' तब उन्हें समझाना पड़ता था कि आज दी गई सही जानकारी ही कल की योजना का आधार बन सकती है।" इस प्रकार से समझ सकते हैं कि जनगणना कार्य कितना जटिल था और इस जटिल कार्यों का निष्पादन सरकारी कर्मचारियों ने कितने समस्याओं को झेलते हुए पहला फेज को पूरा किए। यही तो शिक्षक की असली भूमिका है—केवल फॉर्म भरना नहीं, बल्कि लोगों में विश्वास पैदा करना भी इनका परमदायित्व है।

"दरवाजे पर खड़ा शिक्षक यदि विश्वास का परिचय दे और भीतर से समाज सहयोग का हाथ बढ़ाए, तो आँकड़े केवल संख्या नहीं रहते—वे राष्ट्र की तस्वीर बन जाते हैं।"

धूप, दूरी और डेटा—तीनों की परीक्षा :-

जनगणना का काम कागज पर जितना सरल दिखाई देता है, मैदान में उतना ही आसान नहीं होता। भीषण गर्मी, नेटवर्क की समस्या, बंद घर, लोगों की व्यस्तता, कभी-कभी सुरक्षा की चिंता—इन सबके बीच गणनाकर्मी अपने दायित्व का निर्वहन करते रहे। कई महिला शिक्षिकाओं के सामने सुरक्षा और समय की अतिरिक्त चुनौती भी रही।

बिहार के गाँवों में तो यह अनुभव और भी अपना-सा है। कहीं कोई कहेगा—"सर, ई सब काहे पूछ रहे हैं?" कहीं बुजुर्ग कहेंगे—"बाबू, पहिले भी तो गिनती हुई थी, का फायदा!" और कहीं कोई उत्सुक बच्चा पूछ बैठेगा—"सर, हमहूँ गिनने जाएँ?" इन सवालों को मुस्कुराकर जवाब देना भी जनगणना कर्मी की जिम्मेदारी बन जाती है।

बिहार जैसे युवा और बड़ी आबादी वाले राज्य में जनगणना के आंकड़ों का महत्व और बढ़ जाता है। यहाँ शिक्षा, पलायन, रोजगार, आवास, परिवार की संरचना और सामाजिक परिस्थितियों को समझने में अद्यतन आंकड़े बेहद उपयोगी होते हैं। ताकि भविष्य में सही डेटा को आकलन करने के बाद सरकारी सहायता प्राप्त हो सके। खास बात यह रहा कि स्व-गणना को लेकर बिहार के लोगों की भागीदारी भी उत्साहजनक रही है। उपलब्ध राज्यस्तरीय आंकड़ों में जिलों के बीच स्व-गणना में उल्लेखनीय अंतर दिखाई दिया। मधुबनी, वैशाली और दरभंगा जैसे जिलों की अच्छी भागीदारी यह बताती है कि डिजिटल माध्यम गाँव-घर तक पहुँच रहा है।

जाति गणना–एक संवेदनशील अध्याय :-

जनगणना-2027 की सबसे चर्चित विशेषताओं में जातिगत गणना भी शामिल है। 30 अप्रैल 2025 को राजनीतिक मामलों की कैबिनेट समिति के निर्णय के बाद इसे जनगणना में शामिल करने का निर्णय लिया गया। यह विषय सामाजिक और राजनीतिक दोनों दृष्टि से संवेदनशील रहा है। इसलिए यहाँ सबसे जरूरी है–सही जानकारी, निष्पक्ष व्यवहार और गोपनीयता। इससे यह पता चलेगा कि आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों की संख्यां कितनी है और ये लोग सबसे ज्यादा किस क्षेत्र के हैं, जिससे सरकार इनकी समस्याओं का समाधान आसानी से कर सके।

जनगणना : सरकार और नागरिक की साझा जिम्मेदारी —

क्या जनगणना सिर्फ सरकार की जिम्मेदारी है? नहीं। यह सरकार और नागरिक–दोनों की साझा जिम्मेदारी है। सरकार को प्रशिक्षित, निष्पक्ष और सुरक्षित व्यवस्था देनी होती है। गणनाकर्मी को ईमानदारी और सावधानी से जानकारी दर्ज करनी होती है और नागरिक को सही सूचना देकर सहयोग करना होता है। क्योंकि गलत जानकारी से गलत आंकड़ा बनेगा और गलत आंकड़े से गलत योजना। इसलिए अगली बार जब कोई शिक्षक, कर्मचारी या गणनाकर्मी आपके दरवाजे पर आए तो उन्हें केवल 'सरकारी आदमी' समझकर न टालें। समझें कि वह आपके घर की जानकारी के साथ-साथ देश के भविष्य का एक छोटा-सा पन्ना लिखने आया है।

निष्कर्ष : 33 सवालों में भारत की तस्वीर —

अंत में मैं सुधि प्रज्ञानिका पाठक को आग्रहपूर्वक यह बताना चाहूँगा कि जनगणना में हम केवल यह नहीं गिन रहे कि भारत में कितने लोग हैं। हम यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि वे लोग कैसे रहते हैं, क्या खाते हैं, कहाँ पढ़ते हैं, कहाँ काम करते हैं, कहाँ से आते हैं और किस तरह के भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं।

एक शिक्षक के लिए जनगणना इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि वह समाज व समाज के बच्चों के लिए कक्षा से बाहर निकलकर समाज की वास्तविक पाठशाला और जीवन की वास्तविकता से जुड़कर लाभ पहुंचाने का पुनीत कार्य कर सके। कभी गर्मी में पसीना बहाते हुए, कभी नेटवर्क के इंतजार में, कभी बंद दरवाजे पर दस्तक देते हुए और कभी किसी बुजुर्ग के पास बैठकर जानकारी लिखते हुए–हम महसूस करते हैं कि राष्ट्र-निर्माण केवल बड़े भाषणों से नहीं, छोटे-छोटे कर्तव्यों के ईमानदार निर्वहन से होता है।

तो अगली बार सवालों को इसे महज 33 सवाल मत समझिए। इन सवालों में भारत का आज भी है और आने वाले भारत के भविष्य का नक्शा भी।

क्योंकि सही गिनती ही सही नीति की पहली सीढ़ी है और सही आंकड़ा ही विकसित, समावेशी और आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव है।

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका
प्रज्ञानिका

- बेबी अर्चना

ऊर्जा और जल संरक्षण: सतत भविष्य की आधारशिला

आज मानव सभ्यता भले ही तकनीकी एवं औद्योगिक विकास के चरमोत्कर्ष पर है पर इस प्रगति ने हमारे प्राकृतिक संसाधनों पर अप्रत्याशित दबाव डाला है। ग्लोबल वार्मिंग,जल संकट, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन हमारे अस्तित्व के लिए बहुत बड़ा खतरा बन चुका है।

ऐसे में सतत् भविष्य की कल्पना तब तक अधूरी है जबतक हम ऊर्जा और जल संरक्षण को अपनी रोजमर्रा की जिंदगी का अनिवार्य हिस्सा नहीं बना लेते। ये दोनों संसाधन इस तरह से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं कि इन्हें अलग- अलग करके देखा ही नहीं जा सकता। दोनों ही संसाधन सिर्फ हमारी वर्तमान जरुरतों को ही पूरा नहीं करते बल्कि हमारी आनेवाली पीढ़ी के अस्तित्व की भी रक्षा करते हैं। नदियों पर बांध बनाकर जलविद्युत तैयार करने या थर्मल पावर प्लांट को ठंडा करने में भारी मात्रा में पानी की जरूरत होती है वहीं भूजल को बाहर निकालकर उसे पीने योग्य बनाने और हमारे घरों तक पाइपलाइनों के जरिए पहुंचाने में ढेर सारी बिजली की खपत होती है।

इससे स्पष्ट है कि जब हम पानी बचा रहे होते हैं तो परोक्ष रूप से बिजली भी बचा रहे होते हैं और बिजली को बचाने के साथ ही पानी की भी बचत होती है। बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण और जलवायु परिवर्तन के इस दौर में इन दोनों अमूल्य संसाधनों का उचित प्रबंधन कर हम अपनी पृथ्वी को बचा सकते हैं और एक उज्जवल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

ऊर्जा संरक्षण वर्तमान समय की बहुत बड़ी मांग है क्योंकि हमारी पृथ्वी पर ऊर्जा के पारंपरिक स्रोत जैसे कोयला, पेट्रोलियम आदि सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं । अतः हमें ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा आदि को अपनाने पर जोर देना चाहिए। हमें कम खपत वाले LED उपकरणों का उपयोग करना चाहिए तथा साथ ही अपनी आदतों में भी कुछ सुधार करना चाहिए जैसे जहां जरूरत ना हो वहां बल्ब और पंखे को बंद ही रखना चाहिए।

उसी प्रकार जल संरक्षण कर हम जीवन की बूंद -बूंद को सहेज सकते हैं। पृथ्वी हमारी भले ही दो तिहाई पानी से घिरी है पर पीने योग्य पानी 1 प्रतिशत से भी कम है।

अतः इसके संरक्षण के लिए हम सभी को मिलकर हरसंभव प्रयास करना होगा। इसके लिए रेन वाटर हार्वेस्टिंग, ड्रिप सिंचाई और जल के पुनर्चक्रण आदि को अपना सकते हैं।

सतत् विकास का अर्थ वास्तव में एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जहां आर्थिक प्रगति और प्रकृति के बीच पूर्ण संतुलन हो। जबतक यह प्रत्येक नागरिक की दिनचर्या का हिस्सा नहीं बन जाता तबतक हम एक सुरक्षित भविष्य की नींव नहीं रख पाएंगे। अतः हमें इन दोनों संसाधनों का हरसंभव सदुपयोग करना चाहिए ताकि आनेवाली पीढ़ी को एक सुरक्षित, हरा-भरा और समृद्ध कल प्रदान कर सकें।

**जल है तो कल है ,
ऊर्जा है तो बल है**

- आशीष अम्बर

वैश्विक जल संकट की समस्या और हम

" रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून ,
पानी गए न ऊवरै मोती मानुस चून" ।

पृथ्वी पर रहने वाले सभी प्राणियों , वनस्पतियों के लिए जल की महत्ता को रेखांकित करता रहीम का यह दोहा जितना सटीक आज से 400 वर्ष पहले था उतना ही आज भी है, बल्कि विगत शताब्दी में औद्योगिक एवं कृषि क्रांतियों के अन्तर्गत जिस प्रकार से मानव मानव द्वारा जल - विशेष रूप से भूमिगत जल का विदोहन किया गया है, उससे स्वच्छ पेय जल की उपलब्धता दिनों - दिन कम होती जा रही है l विश्व के अनेक भागों में भूमिगत जल स्रोतों का स्तर इस सीमा तक नीचे चला गया है कि पारम्परिक साधनों से उसकी निकासी सम्भव ही नहीं है l जनसंख्या वृद्धि , सामाजिक - आर्थिक विकास तथा लगातार बदलते उपभोग पैटर्न के परिणामस्वरूप विगत 40 वर्षों में वैश्विक स्तर पर जल के उपभोग में 1% वार्षिक की दर से वृद्धि हो रही है l ऐसे अनुमान है कि वर्ष 2050 तक जल उपभोग में वृद्धि की दर यही रहेगी l निम्न, मध्यम और उच्च आय वाले सभी देशों में पानी की गुणवत्ता से सम्बन्धित जोखिमों के संकेत दिखाई देने लगे हैं l

जल की कमी सतत् विकास के लिए प्रमुख चुनौतियों में से एक है, क्योंकि जल न केवल मानवता के लिए , बल्कि कृषि उत्पादन, खाद्य सुरक्षा के लिए भी आवश्यक है और हमारे पारिस्थितिक तंत्र की जीवनधारा है, फिर भी जनसंख्या वृद्धि और जलवायु परिवर्तन के कारण हमारे मीठे पानी के संसाधन चिंताजनक दर से कम हो रहे हैं l घरेलू एवं वैश्विक स्तर पर मीठे एवं पीने योग्य जल की माँग और पूर्ति में निरन्तर बढ़ता अंतराल मानव - जीव - जन्तुओं - वनस्पतियों के जीवित रहने तथा विकसित होने के समक्ष संकट उत्पन्न कर रहा है l कृषि और औद्योगिक विकास की गति प्रदान करने के लिए भूमिगत जलस्त्रोतों के अंधाधुंध विदोहन ने जल स्तर को इस सीमा तक नीचे धकेल दिया है कि अनेक क्षेत्रों में इसकी निकासी भी संभव नहीं है l नदियों, प्राकृतिक झरनों और जलाशयों में लगातार गिरते अनुपचारित दूषित जल जो कई क्षेत्रों के नालों तथा औद्योगिक इकाइयों से आता है से आता है - ने इन जल स्रोतों के पानी की बात तो बहुत दूर है l असामयिक और अनियमित वर्षा से प्रति वर्ष नदियों में आने वाली विनाशकारी बाढ़ों का पानी बह कर समुद्रों में चला जाता है l आर्थिक शब्दावली में पानी सर्वोपकारी वस्तु(मेरिट गुड) है , इसलिए यह ' मुफ्तखोरी' की समस्या से ग्रसित है l

जल की वैश्विक समस्या को देखते हुए इसकी कमी को दूर करने के निम्न उपाय किये जा सकते हैं l

- **जल निस्पंदन प्रणाली का विकास करना**
- **जलाशयों में जल - भंडारण बढ़ना**
- **जल प्रबंधन को बढ़ावा देना**
- **वर्षा जल को संरक्षित करना**
- **आर्द्र भूमियों की रक्षा करना**
- **जल का उचित प्रयोग एवं इसे प्रकृति का अनुपम देन समझकर इसकी महत्ता बताना**

निष्कर्ष :- हमारी आनेवाली पीढ़ी को जल संकट की समस्या से दो - चार होनी पर सकती है l इसलिए हमें यह निश्चय करना होगा कि इस वैश्विक समस्या से निजात पाने हेतु जल संसाधनों का संरक्षण किया जाए l

- दुर्गमांगे

नीले समंदर की लहरों पर : मेरी गोवा यात्रा

दिसंबर की वह सुबह आज भी स्मृतियों में ताज़ा है। IT गांधीनगर में माँच दिनों तक गली वर्कशॉप समाप्त हो चुकी थी। अकादमिक चर्चाओं, प्रोजेक्ट रिपोटी और तकनीकी सत्रों के बीच मन कहीं थक-सा गया था। उसी थकान में एक इच्छा बार-बार सिर उठाती रही जब गुजरात आ ही गए है, तो उस प्रतिमा को क्यों न देखा जाए जिसने पूरे देश की कल्पना को एक साथ बाँध दिया है? वह प्रतिमा, जो केवल धातु और कंक्रीट का ढाँचा नहीं, बल्कि भारत की अखंड चेतना का प्रतीक है स्टैचू ऑफ यूनिटी।

अगली सुबह मैं अहमदाबाद स्टेशन पर था। प्लेटफ़ॉर्म पर यात्रियों की चहल-पहल थी, लेकिन मेरे भीतर एक अलग ही उत्सुकता थी। ट्रेन एकता नगर की ओर चल पड़ी। शहर पीछे छूटता गया और गुजरात का ग्रामीण विस्तार खिड़की के बाहर खुलने लगा।दूर-दूर तक कपास के खेत फैले थे, जिनकी सफ़ेद रूई धूप में ऐसे चमक रही थी मानो धरती पर बादल उतर आए हों। कहीं मूंगफली की फसल थी, कहीं छोटे-बड़े कारखानों की ऊँची चिमनियाँ। चौड़ी सड़कें, व्यवस्थित गाँव और उद्योगों की निरंतरता देखकर सहज ही समझ में आता था कि विकास केवल ऑकडों में नहीं, जीवन के ढंग में दिखाई देता है।

मेरे सामने बैठे एक बुजुर्ग यात्री ने मुस्कुराकर पूछा, "पहली बार जा रहे हैं?"

"जी, दूसरी बार गुजरात आया हूँ, लेकिन एकता नगर पहली बार, मैंने उत्तर दिया।

वे बोले, "जब पहली बार सरदार को सामने देखोगे, तो लगेगा आदमी कितना छोटा है और उसका सपना कितना बड़ा हो सकता है।"उनकी बात मेरे मन में उतर गई। ट्रेन आगे बढ़ती रही और उत्सुकता भी।करीब पहुँचते-पहुँचते डिब्बे का वातावरण बदल गया। अधिकांश यात्री अब खिड़कियों से बाहर झाँक रहे थे। बच्चों के हाथों में मोबाइल थे, लोग तस्वीरें लेने को तैयार बैठे थे। जैसे कोई तीर्थ निकट आ रहा हो।एकता नगर स्टेशन पर उतरते ही यह एहसास और गहरा हो गया। पूरा स्टेशन मानो एक ही उद्देश्य से धड़क रहा था-स्टैचू ऑफ यूनिटी की ओर बढ़ना। बाहर निकलते ही लंबी कतार दिखाई दी। पहले लगा कोई टिकट काउंटर होगा, पर पता चला कि यह निःशुल्क बस सेवा के लिए है।

यही वह बात थी जिसने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया। इतने विशाल पर्यटन क्षेत्र में हर प्रमुख स्थल तक पहुँचाने के लिए बसें बिल्कुल मुफ्त थीं। कतार लंबी थी, फिर भी न धक्का-मुक्की, न शोर। अनुशासन का ऐसा दृश्य बड़े शहरों में कम ही देखने को मिलता है।

बस में बैठे तो एक गाइड ने हँसते हुए कहा, "यहाँ आप अपनी इच्छा से किसी भी स्थल पर उतर सकते हैं। पूरा क्षेत्र एक ही परिवार की तरह जुड़ा हुआ है।"

बस श्रेष्ठ भारत भवन की ओर बढ़ी। रास्ते में सुंदर बाग, चौड़ी सड़कें और जगह-जगह लिखे नारे-'एक भारत, श्रेष्ठ भारत'-मन में एक अलग ही भाव जगा रहे थे।

लेकिन वहाँ पहुँचते ही पहली चुनौती सामने थी-टिकट।

नए साल की छुट्टियों का मौसम था। पर्यटकों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। मुझे जून-जुलाई की अपनी पिछली यात्रा याद आई, जब टिकट आसानी से मिल गया था। इस बार ऑनलाइन टिकट पहले ही समाप्त हो चुके थे। लोग काउंटर के सामने बेचैन खड़े थे। कुछ पैरिवार लौटने की चर्चा कर रहे थे कुछ वैकल्पिक टिकट के बारे में पूछ रहे थे।

आख़िरकार हमें ₹150 वाला टिकट मिल गया, जिससे फुट एरिया और नीचे की गैलरी देखी जा सकती थी। व्यूइंग गैलरी का टिकट उपलब्ध नहीं था। क्षण भर के लिए मन में हल्का-सा अफ़सोस आया कौन नहीं चाहता कि 153 मीटर ऊपर जाकर नर्मदा और सरदार सरोवर को देखा जाए? लेकिन फिर लगा कि यात्रा में जो मिल जाए, उसी को पूरी श्रद्धा से देखना चाहिए।

बस से उतरकर जैसे ही आगे बढ़े, दूर क्षितिज पर एक आकृति उभरती दिखाई दी।

पहले वह केवल धुंधली-सी थी। फिर धीरे-धीरे उसका आकार स्पष्ट होने लगा। सड़क के दोनों ओर फूलों की क्यारियाँ थीं, सुव्यवस्थित उद्यान थे और बीच में वह विराट आकृति लगातार ऊँची होती जा रही थी। प्रवेश द्वार से आगे बढ़ते हुए हम एक्सीलेटर पर पहुँचे।

वह अनुभव आज भी शब्दों में बाँधना कठिन है। ऐसा लग रहा था मानो हम स्थिर खड़े हों और धरती स्वयं हमें आगे ले जा रही हो। धीरे-धीरे प्रतिमा पास आती जा रही थी। उसके साथ-साथ मन में सरदार पटेल का व्यक्तित्व भी विशाल होता जा रहा था।

चारों ओर लिखे नारे केवल सजावट नहीं लग रहे थे। वे उस ऐतिहासिक सत्य की याद दिला रहे थे कि जिस व्यक्ति ने 562 रियासतों को एक सूत्र में बाँध दिया, उसका स्मारक भी भारत को एकता का पाठ पढ़ाने के लिए बना है।

और फिर वह क्षण आया।

हम स्टैचू ऑफ यूनिटी के ठीक सामने खड़े थे।

182 मीटर ऊँची वह प्रतिमा सचमुच मनुष्य की कल्पना की सीमा को चुनौती देती है।

नीचे खड़े होकर ऊपर देखने पर गर्दन थक जाती है, पर दृष्टि नहीं भरती। सरदार का चेहरा गंभीर, शांत और दृढ़ दिखाई देता है-मानो वे आज भी भारत की एकता की रखवाली कर रहे हों।

मैंने वहीं खड़े-खड़े निर्माण से जुड़े आँकड़े पढ़े देशभर से एकत्रित लोहा, हजारों टन स्टील, कांस्य की परतें, भूकंपरोधी संरचना। लेकिन उन आँकड़ों से अधिक प्रभावशाली था वह भाव, जो प्रतिमा के सामने खड़े होकर भीतर पैदा होता है-गर्व।

पास ही दूर क्षितिज पर सरदार सरोवर डैम दिखाई दे रहा था। एक ओर लौह पुरुष की प्रतिमा, दूसरी ओर नर्मदा पर बना वह विशाल बाँध जिसने गुजरात के सूखे इलाकों तक पानी पहुँचाया। उस दृश्य में इतिहास और विकास एक साथ उपस्थित थे। ।

मुझे लगा जैसे यह केवल संयोग नहीं, एक प्रतीक है-विचार और कर्म का संगम

मूर्ति के नीचे बनी गैलरी में प्रवेश करते ही वातावरण बदल गया। कहाँ सरदार पटेल के जीवन की झांकियों यी वारडोली सध्याग्रह, किसानों का संघर्ष, स्वतंत्रता आंदोलन और रियासतों के विलय की गाथा। तस्वीरें और कलाकृतियाँ किसी संग्रहालय की वस्तुएँ नहीं लग रही थीं; वे एक ऐसे व्यक्ति की कहानी कह रही थीं जिसने व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा से ऊपर राष्ट्र को रखा।

गैलरी से बाहर निकलकर जब हम प्रतिमा के बिल्कुल निकट पहुँचे, तब उसकी वास्तविक विशालता का अहसास हुआ। मैं सचमुच उनके पैर के अंगूठे के बराबर भी नहीं था। उस क्षण मन में अनायास विचार आया-

"सचमुच सरदार केवल आकार में नहीं, अपने व्यक्तित्व में भी विराट थे।"

दोपहर हो चुकी थी। भूख लग आई थी। पास के रेस्टोरेंट में भोजन किया। स्वाद अच्छा था, हालाँकि कीमतें पर्यटन स्थल के अनुरूप कुछ अधिक लगीं। भोजन के बाद हमने आसपास लगे स्वदेशी मेले का रुख किया। वहाँ गुजरात की स्थानीय हस्तकलाएँ, कच्छ की कढ़ाई, बॉस और मिट्टी की वस्तुएँ, तथा पारंपरिक व्यंजनों की सुगंध वातावरण में घुली हुई थी।

सूरज अब पश्चिम की ओर झुकने लगा था। दूर प्रतिमा पर पड़ती सुनहरी रोशनी उसे और भी भव्य बना रही थी।

मुझे तब तक यह एहसास हो चुका था कि एकता नगर की यात्रा केवल किसी ऊँची प्रतिमा को देखने की यात्रा नहीं है। यह उस विचार तक पहुँचने की यात्रा है जिसने भारत को टुकड़ों से उठाकर एक राष्ट्र बनाया। और उस शाम, सरदार के चरणों से लौटते हुए मेरे भीतर एक प्रश्न लगातार गूँज रहा था- क्या किसी मनुष्य की सबसे बड़ी ऊँचाई उसकी प्रतिमा की ऊँचाई होती है, या उसके सपनों की?

दोपहर का सूरज अब पश्चिम की ओर झुकने लगा था। स्टैचू ऑफ यूनिटी की कांस्य आभा सुनहरी रोशनी में और भी दिव्य लग रही थी। दिन भर की भीड़, टिकट की भागदौड़ और विशाल प्रतिमा के सामने खड़े होने का रोमांच अभी मन में ताज़ा ही था, लेकिन एकता नगर की यात्रा का सबसे शांत और गहरा अध्याय अभी बाकी था।

शाम होते-होते प्रतिमा परिसर में हलचल और बढ़ गई। लोग अपने-अपने मोबाइल और कैमरे सँभाल रहे थे, क्योंकि रात का लेजर शो यहाँ की सबसे लोकप्रिय गतिविधियों में गिना जाता है। रंगों, प्रकाश और ध्वनि के माध्यम से सरदार पटेल के जीवन और भारत के एकीकरण की कहानी दिखाई जाती है।

हमने लेजर शो का टिकट नहीं लिया था। पहले क्षण लगा कि शायद कुछ छूट जाएगा, पर फिर विचार आया कि हर यात्रा में कुछ अनदेखा रह जाना भी अच्छा होता है, वही अगली यात्रा का निमंत्रण बन जाता है। हमने निर्णय किया कि आज की शाम नर्मदा आरती को समर्पित होगी।स्टैचू परिसर से बस पकड़कर हम नर्मदा घाट की ओर चल पड़े। रास्ता लगभग चार-पाँच किलोमीटर का था। बस की खिड़की से बाहर अँधेरा धीरे-धीरे उतर रहा था। दूर पहाड़ियों की रूपरेखा धुँधली होती जा रही थी और कहीं-कहीं रोशनियों की कतारें नर्मदा के जल में काँपती हुई दिखाई दे रही थीं।

घाट पहुँचते-पहुँचते संध्या पूरी तरह उतर चुकी थी।

आरती शुरू होने में अभी समय था, इसलिए हमें पहले घाट के पास स्थित शिव मंदिर की ओर बढ़े। मंदिर तक पहुँचने के लिए लगभग सौ से अधिक सीढ़ियों चढ़नी थीं। दिन भर घूमने के बाद पैरों में थकान थी, पर ऊपर से दिखाई देने वाले दृश्य का आकर्षण हमें बधता चला गया।

सीढ़ियों चढ़ते समय नीचे बहती नर्मदा बार-बार दिखाई देती। कहीं उसका जल चाँदनी की हल्की आभा में चमकता, कहीं अंधेरे में विलीन हो जाता। ऊपर पहुँचकर जो दृश्य सामने था, उसने सारी थकान भुला दी।

चारों तरफ पहाड़ियों की शांत परिधि, बीच में बहती नर्मदा, दूर कहीं स्टैचू ऑफ यूनिटी की रोशन आकृति, और ऊपर फैला गहरा नीला आकाश-मानो प्रकृति ने स्वयं ध्यानस्थ होकर यह दृश्य रथा हो।

मंदिर छोटा था, लेकिन उसकी सादगी में एक अद्भुत पवित्रता थी। घंटियों की ध्वनि और धूप की हल्की सुगंध वातावरण को और भी शांत बना रही थी। शिवलिंग के सामने खड़े होकर मुझे लगा कि दिन भर की बाहरी भव्यता अब भीतर की निस्तब्धता में बदल रही है।

मंदिर से उतरकर हम पुनः घाट पर आ गए।

धीरे-धीरे वहाँ लोगों की भीड़ बढ़ने लगी। कोई परिवार बच्चों के साथ आया था, कोई वृद्ध दंपती हाथों में पूजा की थाली लिए बैठा था, कुछ श्रद्धालु दूर-दराज़ से केवल नर्मदा आरती देखने पहुँचे थे। घाट की सीढ़ियाँ रंग-बिरंगे वस्त्रों से भर गई, लेकिन उस भीड़ में भी एक अनुशासित श्रद्धा थी।

मैं सीढ़ियों पर बैठ गया और हाथ बढ़ाकर नर्मदा के जल को छुआ। वह पानी आश्चर्यजनक रूप से शीतल था। नदी से उठती हवा चेहरे को छूती हुई भीतर तक उतर रही थी। उस क्षण ऐसा लगा जैसे कई दिनों की भागदौड़, कार्यशाला का मानसिक तनाव, यात्रा की थकान और जीवन की छोटी-बड़ी चिंताएँ सब धीरे-धीरे बहती जा रही हों।

तभी मुझे समझ आया कि नर्मदा को केवल नदी नहीं, गुजरात की जीवन रेखा क्यों कहा जाता है। जिस जल ने सूखे प्रदेशों को हरियाली दी, वही जल उस शाम मन को भी एक अनकही हरियाली दे रहा था।

कुछ ही देर में आरती आरंभ हुई।

परंपरागत वेशभूषा में सुसज्जित पुरोहितों ने बड़े दीप प्रज्वलित किए। शंखध्वनि गूँजी, घंटियाँ बज उठीं और पूरा वातावरण 'जय नर्मदे हर" के उद्घोष से भर गया।

दीपों की लौ जब हवा में गोलाई बनाती हुई नर्मदा की ओर झुकती, तो उनका प्रतिबिंब जल में थरथराता हुआ दिखाई देता। लहरों पर तैरती रोशनी ऐसी लग रही थी मानो स्वयं नदी ने तारों को अपनी गोद में उतार लिया हो।

उस क्षण मुझे लगा कि भारत की आत्मा इसी विविधता में बसती है-सुबह सरदार पटेल की आधुनिक भव्यता, शाम नर्मदा की प्राचीन आध्यात्मिकता; एक ओर विकास का विराट प्रतीक, दूसरी ओर प्रकृति और श्रद्धा का शांत आलोक।

आरती समाप्त होते-होते रात गहरा चुकी थी।
लोग प्रसाद लेकर लौटने लगे। हमें भी स्टेशन पहुंचने की चिंता थी, इसलिए हम जल्दी-जल्दी बस की ओर बढ़े। बस पहले से यात्रियों से भरी थी, लेकिन किसी के चेहरे पर झुँझलाहट नहीं थी। सब अपने-अपने अनुभवों में डूबे हुए थे।
बस जब एकता नगर स्टेशन की ओर लौट रही थी, तब दूर अँधेरे में स्टैचू ऑफ यूनिटी की रोशनी फिर दिखाई दी। वह अब पहले जैसी पर्यटक आकर्षण वाली वस्तु नहीं लग रही थी, वह किसी प्रहरी की तरह नर्मदा घाटी पर निगाह रखे खड़ी थी।

स्टेशन पहुँचे तो हमारी ट्रेन प्लेटफ़ॉर्म पर तैयार खड़ी थी। डिब्बे में बैठते ही एक अजीब-सी ख़ामोशी भीतर उतर आई। दिन भर के दृश्य आँखों के सामने एक-एक कर गुजरने लगे एक्सीलेटर पर धीरे-धीरे पास आती प्रतिमा, सरदार सरोवर का विस्तृत जल, गैलरी में जीवित होता इतिहास, शिव मंदिर की सीढ़ियाँ, और नर्मदा आरती की कॉपती ली।
ट्रेन ने सीटी दी और अहमदाबाद की दिशा में चल पड़ी।
खिड़की से बाहर अँधेरा दौड़ रहा था, लेकिन मन में एक उजाला था।
मैं सोच रहा था यह यात्रा केवल किसी पर्यटन स्थल को देखने की यात्रा नहीं थी। यह एक विचार से मिलने की यात्रा थी।
सरदार पटेल ने जिन रियासतों को जोड़कर भारत को एक राष्ट्र बनाया, उनकी प्रतिमा हमें याद दिलाती है कि एकता केवल राजनीतिक शब्द नहीं, बल्कि साझा जिम्मेदारी है। और नर्मदा की शांत धारा यह सिखाती है कि महानता का अर्थ केवल ऊँचा उठना नहीं, बल्कि निरंतर देते रहना भी है।
जब ट्रेन रात के सन्नाटे में आगे बढ़ती रही, तब मेरे भीतर एक ही वाक्य बार-बार गूंजता रहा- स्टैचू ऑफ यूनिटी सरदार की प्रतिमा भर नहीं, उस भारत का स्वप्न है जो विविधताओं के बावजूद एक है, और नर्मदा उस स्वप्न की धड़कन, जो हर पीढ़ी को सेवा, धैर्य और दृढ़ संकल्प का अर्थ समझाती रहेगी।

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका

प्रज्ञानिका

- ब्रजेश कुमार वर्मा

पर्यावरण के लिए हम,
क्या कुछ कर पाएंगे?
आओ सोचें मिलजुलकर,
कैसे इसे बचाएंगे?

अंधाधुंध पेड़ों को काट,
जंगल हमने नष्ट किया।
आखिर हमने खुद को ही,
ऐसे क्यों विनष्ट किया?

भूमिगत जल का भी हमने,
इतना खूब उपयोग किया।
क्या कारण था इस तरह से,
इसका दुरुपयोग किया?

नदी के मार्ग को भी तो,
हमने ही अवरुद्ध किया।
खड़ी इमारत कर-करके,
हमने उसे क्रुद्ध किया।।

कल-कारखानों के द्वारा,
प्रदूषण प्रसार किया।
भोग रहे उसके परिणाम,
तन-मन में विस्तार किया।

केमिकल उर्वरक के द्वारा,
फसलों को लहला लिया।
पर हम अपने खान-पान में,
विष को ही मिला लिया।।

जहर मिले भोजन को खाकर,
तन-मन हमने रोग लिया।
वातावरण को दूषित कर,
कष्ट हमने भोग लिया।।

सूखे, बाढ़, अनियंत्रित
वर्षा को अब झेल रहे।
इसलिए पेड़-पौधों का,
धरती पर सदा मेल रहे।।

हरी-भरी हो धरा हमारी,
आच्छादित इसपर वन रहे।
जीव-जंतु से भरा-पूरा,
जंगल और उपवन रहे।।

ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाकर,
आओ धरती को बचाएं।
पर्यावरण सुरक्षित करके,
जीवन अपना हम बचाएं।।

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका

काव्य रंग : संघर्ष

- बेबी अर्चना

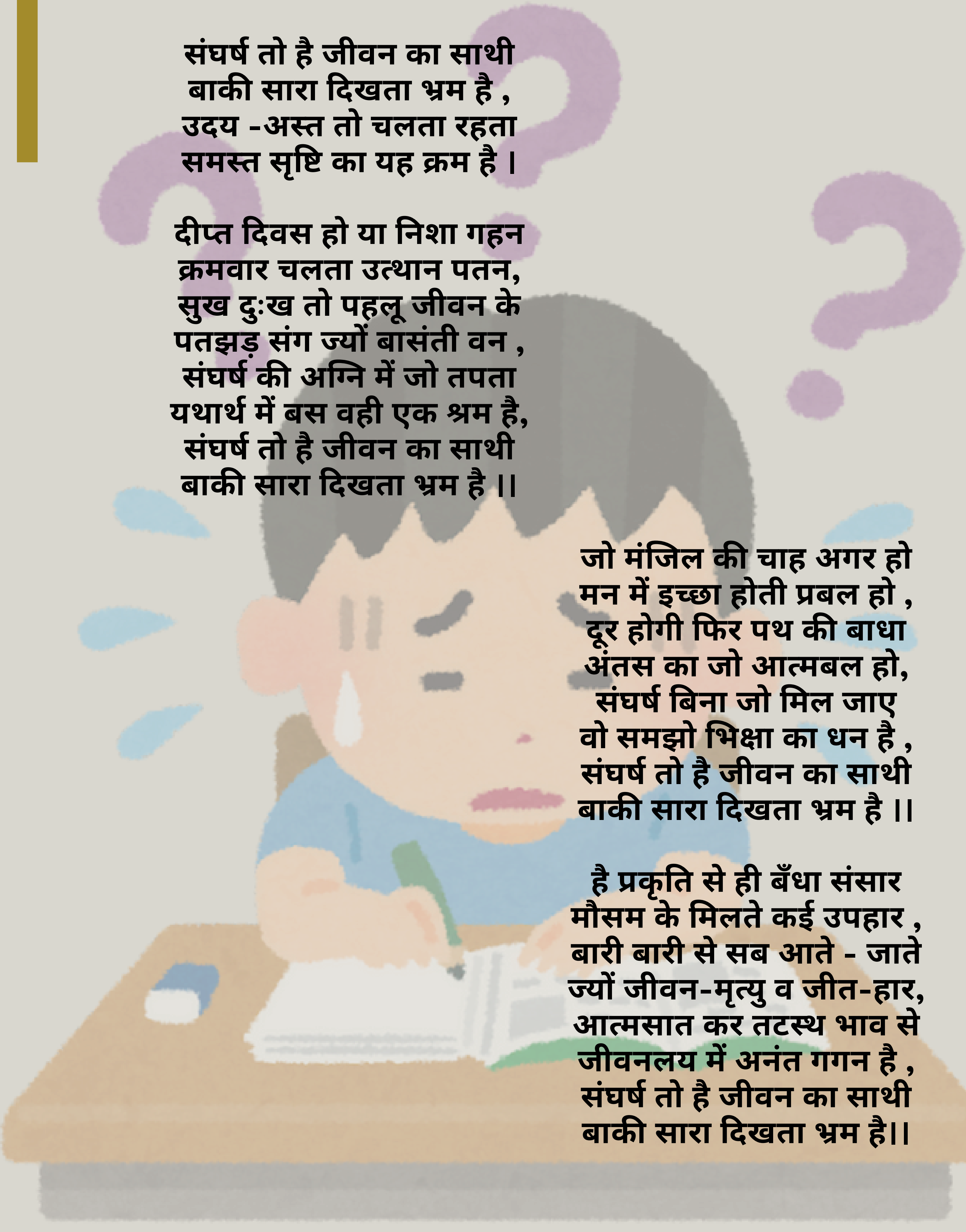

संघर्ष तो है जीवन का साथी
बाकी सारा दिखता भ्रम है ,
उदय -अस्त तो चलता रहता
समस्त सृष्टि का यह क्रम है ।

दीप्त दिवस हो या निशा गहन
क्रमवार चलता उत्थान पतन,
सुख दुःख तो पहलू जीवन के
पतझड़ संग ज्यों बासंती वन ,
संघर्ष की अग्नि में जो तपता
यथार्थ में बस वही एक श्रम है,
संघर्ष तो है जीवन का साथी
बाकी सारा दिखता भ्रम है ।।

जो मंजिल की चाह अगर हो
मन में इच्छा होती प्रबल हो ,
दूर होगी फिर पथ की बाधा
अंतस का जो आत्मबल हो,
संघर्ष बिना जो मिल जाए
वो समझो भिक्षा का धन है ,
संघर्ष तो है जीवन का साथी
बाकी सारा दिखता भ्रम है ।।

है प्रकृति से ही बँधा संसार
मौसम के मिलते कई उपहार ,
बारी बारी से सब आते - जाते
ज्यों जीवन-मृत्यु व जीत-हार,
आत्मसात कर तटस्थ भाव से
जीवनलय में अनंत गगन है ,
संघर्ष तो है जीवन का साथी
बाकी सारा दिखता भ्रम है।।

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका

प्रज्ञानिका

हाँ, मैं अब शिक्षिका बन गई हूँ

- कीर्ति सौम्य
विद्यालय अध्यापिका
म० वि० हलीमपुर जमालपुर

हाँ, अब मैं एक शिक्षिका बन गई हूँ
हाँ, अब मैं एक शिक्षिका बन गई हूँ,
सपनों को हकीकत का रूप देने चल पड़ी हूँ।
कल तक जो किताबें सिर्फ मेरा इम्तिहान लेती थीं,

आज उन किताबों से किसी का भविष्य संवारने चल पड़ी हूँ।
हाथ में चॉक और दिल में नए अरमान हैं,
सामने बैठी मासूम आँखें ही अब मेरा जहान हैं।

सिर्फ क ख ग या ABCD सिखाना मेरा काम नहीं,
हर बच्चे के भीतर छुपे हुनर को जगाना ही मेरी पहचान है।

कोरे कागज़ जैसे मन पर ज्ञान के रंग बिखेरूँगी,अंधेरे रास्तों पर जलता हुआ दीप बनूँगी।
गलतियाँ सुधारूँगी, पर हौसला कभी टूटने न दूँगी,
गिरकर संभलना और मुस्कुराकर लड़ना सिखाऊँगी। हाँ, ज़िम्मेदारी बड़ी है और राहें भी नई हैं,

पर मेरे संकल्प में भी एक नई रोशनी जगी है।
राष्ट्र के निर्माता को गढ़ने की पावन राह पर,
गर्व से कहती हूँ, मैं एक शिक्षिका बन गई हूँ ।।

सरकारी स्कूल का शिक्षक

- बिनोद कुमार मंडल

धूल भरे गाँवों में जाकर, आशा का दीप जलाता है,
सरकारी स्कूल का शिक्षक, भारत-भविष्य बनाता है।

हर शिक्षक आदर्श नहीं है, यह सच भी स्वीकार करें,
कुछ चेहरों की भूलों पर, सबका क्यों तिरस्कार करें?
अब भी लाखों गुरु ऐसे हैं, जो निस्वार्थ निभाता है,
अपने जीवन का हर क्षण, बच्चों पर ही लुटाता है।

कागज, पोर्टल, फाइल, बैठक–दिन का सारा मानचित्र,
फिर भी कक्षा में गढ़ देता, बच्चों के भविष्य का चित्र।
व्यस्त व्यवस्था के जंगल में, शिक्षा-पथ अपनाता है,
सरकारी स्कूल का शिक्षक, चुपचाप देश बनाता है।

कभी चुनाव, कभी सर्वेक्षण, कभी योजनाओं का भार,
शिक्षा के संग ढोता रहता, शासन का सारा संसार।
फिर भी हर मासूम हृदय में, ज्ञान-ज्योति जलाता है,
सरकारी स्कूल का शिक्षक, भारत-भविष्य बनाता है।

कर्तव्यों के बोझ तले भी, जिसका साहस झुके नहीं,
शिक्षा-पथ का दीप लिए वह, कठिन समय में रुके नहीं।
नन्हीं आँखों में हर पल वह, कल का विश्वास जगाता है,
सरकारी स्कूल का शिक्षक, भारत-भविष्य बनाता है।

जिसके अपने साधन सीमित, जिसके अपने दर्द बड़े,
फिर भी हर निर्धन बच्चे के, मन में साहस-बीज जड़े।
जाति, धर्म या धन न देखे, सबको एक समान पढ़ाता,
मानवता की सच्ची भाषा, अपने आचरण से सिखलाता।

न पदकों की चाह उसे है, न यश का कोई शोर मिले,
उसकी सबसे बड़ी कमाई, शिष्य सफल होकर खिलें।
जब कोई विद्यार्थी आगे बढ़कर ऊँचा नाम कमाता है,
तब शिक्षक का मौन हृदय भी, गर्व से भर-भर जाता है।

जो अक्षर-अक्षर बोता है, आने वाले कल के नाम,
जो चुपके-चुपके गढ़ता है, भारत का नव अभियान।
उसके श्रम का हर एक कण, राष्ट्र का मान बढ़ाता है,
सरकारी स्कूल का शिक्षक, भारत-भविष्य बनाता है।

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका

प्रज्ञानिका

बचपन

- डॉ उषा किरण
प्रधान शिक्षक
प्रा० वि० बवरिया, पहाड़पुर

बारिश वो कश्ती
नहीं भूले जाते ।
बीते वे लम्हें
हमें याद आते !

नहीं भूल पाते ओ
अलबेली टोली,
मस्ती में डूबी वो
हमजोली भोली।

कभी जैसे बंदर
कभी हों कलंदर,
जहां अपने थे हम
जहां के सिकंदर।

करती थी बातें
हवा आते-जाते !

हमे खूब भाती थी,
सावन की रिमझिम ।
हमको लुभाती वो,
जुगनू की टिम-टिम।

अपनी मन चली थी,
गली हर गली में।
खिलते हमीं थे,
कली हर कली में ।

पास अपने बुलाती,
कोयल गाते गाते ।

खेतों की पगडंडी,
रस्ता हमारा ।

पढ़ता था पेड़ों पर,
बस्ता हमारा।
दरिया सी मस्ती थी,
कश्ती से सपने।
हम थे जहां के,
जहां सारे अपने

घर आते-जाते थे
छुपते-छुपाते !

सरसों के खेतों में,
तितली पकड़ना।
अपनी बादशाही में,
खुद ही अकड़ना।
बीता वो बचपन,
वो गुजरा जमाना।
मुश्किल बड़ा है,
उसे भूल जाना।

कब मंजर वो भूले,
भुलाते-भुलाते !

काव्य रंग

-मधु कुमारी

शक्ति स्वरूपा नारी

नित कर नव श्रृंगार तुम
नारी जीवन पूर्ण कर देती हो
शक्ति स्वरूपा होकर भी तुम
ना जाने क्यूँ नीर बहाती हो.....

देकर नव जीवन तुम
सृष्टि को पूर्ण कर देती हो
जब स्वयं की बारी आती है तो
जाने क्यूँ औरों से गुहार लगाती हो.......

क्या दुर्योधन, क्या दुशासन
तुम स्वयं काल पर भारी हो
खुद को ना कमजोर समझ
तुम जगदंबा की अवतारी हो......

जागो, अब डरो नहीं
ना बेबस, ना लाचारी हो
कोई नहीं आएगा तुम्हें बचाने
तुम स्वयं शक्ति की अधिकारी हो.....

हे चपला ! भरो हुंकार
ले रण चंडी का अवतार
हर युग में तुम ही तो,
राक्षसों का संहार करने वाली हो.....

इस युग में भी तुम शक्ति की अवतारी हो
हर युग में तुम शक्ति स्वरूपा नारी हो।

चिड़िया रानी

-अमरेंद्र कुमार उन्मेष
(शिक्षक)
स्वतंत्रता सेनानी सदन
शेखपुर ,मुजफ्फरपुर

माँ! सुन आज मेरी जुबानी !
चिड़िया की बस एक कहानी !

सुबह करती दिन की शुरुआत!
गर्मी या जाड़ा हो या हो बरसात !
पौ फटने के पहले चीं-चीं कर,
जपती हो जैसे -राम-कहानी !

चिड़िया आई चुग गई दाना !
लोभ-लालच न उसने जाना !
ले उड़ती कुछ चूजा खातिर ,
छूटे दानों पर नहीं मरजानी !

चिड़िया रानी है बड़ी सयानी !
दिनभर करती खूब मनमानी !
नहीं चिंता कभी रात की करती,
ले खुश रहती कुछ दाना-पानी !

नहीं गम, ना शिकायत करती !
अपने कामो में मगन वह रहती !
साथ में उड़ना, मिलकर खाना,
न लड़ती किसी से जंग जुबानी !

चिड़ियों के हैं रंगे हजार !
करती वह तो प्रेम-व्यापार !
मधुर सुरीली तान निकाले,
सुन दुनिया है जिसकी दिवानी !

छू आती नभ का कोना-कोना !
शांति का न कभी रोती रोना !
गोधूलि में कलरव करती आती,
अपने घर फिर चिड़िया रानी !

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका

प्रज्ञानिका

- राकेश कुमार

हठयोग : शरीर, श्वास और मन के संतुलन की साधना

हठयोग का अर्थ

हठयोग योग की ऐसी परंपरा है जिसमें शरीर को स्वस्थ, स्थिर और साधना के योग्य बनाने के लिए आसन, प्राणायाम, मुद्राएँ, बंध और शुद्धि-क्रियाओं का अभ्यास किया जाता है। इसका उद्देश्य केवल शरीर को लचीला बनाना नहीं, बल्कि श्वास पर नियंत्रण, मन की एकाग्रता और आत्म-अनुशासन को विकसित करना भी है। हठयोग की प्रसिद्ध परंपरा में हठयोग प्रदीपिका जैसे ग्रंथ का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अतिरिस्त घेरंड संहिता और शिव संहिता भी हठयोग की परंपरा से जुड़े प्रमुख ग्रंथ माने जाते हैं।

हठयोग का प्रमुख उद्देश्य

1) शरीर को स्वस्थ और सक्रिय बनाना।
2) शरीर में लचीलापन एवं स्थिरता विकसित करना।
3) श्वसन प्रक्रिया को नियंत्रित एवं संतुलित करना।
4) मन को शांत और एकाग्र करने में सहायता करना।
5) आत्म-अनुशासन और नियमितता की भावना विकसित करना।
6) ध्यान एवं उच्चतर योग-साधना के लिए शरीर-मन को तैयार करना।
7) जीवन में संतुलन और सकारात्मकता विकसित करना।
8) ऊर्जा, उत्साह और आत्मविश्वास में वृद्धि करना।

विद्यार्थियों के लिए हठयोग का महत्व

विद्यार्थियों के जीवन में योग का विशेष महत्व है। पढ़ाई के साथ नियमित, सुहृधित और आयु-अनुकूल योगाभ्यास से उनमें -

1)एकाग्रता बढ़ाने की आदत
2)अनुशासन
3)शारीरिक सक्रियता।
4)आत्म-जागरूकता
5)सकारात्मक सोच

जैसे गुण विकसित करने में सहायता मिल सकती है।

आधुनिक जीवन में हठयोग की प्रासंगिकता

आज मनुष्य तकनीक और सुविधाओं से घिरा हुआ है, लेकिन शारीरिक सक्रियता और मानसिक शांति के लिए समय कम होता जा रहा है। लंबे समय तक बैठना, अनियमित दिनचर्या और लगातार डिजिटल उपकरणों का उपयोग जीवनशैली को प्रभावित कर सकता है। ऐसे समय में हठयोग हमें अपने शरीर और श्वास के प्रति जागरूक होने का अवसर देता है। यह हमें नियमितता, संयम, धैर्य और आत्म-अनुशासन का महत्व समझाता है।

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका

हठयोग के प्रमुख अभ्यास

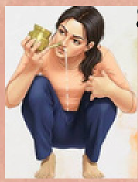

शुद्धि-क्रियाएँ

शरीर को शुद्ध और रोग प्रतिरोधक धमता बढ़ाने में सहायक हैं।

आसन

शरीर को स्थिरता और लचीलापन देते हैं।

बंध

शरीर की ऊर्जा को सही दिशा में प्रवाहित करने में मदद करते हैं।

प्राणायाम

श्वास को नियंत्रित कर मन को शांत करते हैं।

मुद्राएँ

ऊर्जा को संतुलित और जागरूक करने में सहायक हैं।

निष्कर्ष

हठयोग भारतीय योग परंपरा की एक महत्वपूर्ण साधना-पद्धति है। इसका मूल उद्देश्य केवल कठिन आसन करना नहीं, बल्कि शरीर को स्वस्थ, श्वास को संतुलित और मन को एकाग्र एवं शांत बनाने की दिशा में कार्य करना है। यदि योग का अभ्यास नियमितता, सही तकनीक और सावधानी के साथ किया जाए तो यह स्वस्थ जीवनशैली का उपयोगी हिस्सा बन सकता है। हठयोग हमें यह संदेश देता है कि स्वस्थ शरीर, संतुलित श्वास और शांत मन एक बेहतर जीवन की मजबूत आधारशिला हैं।

"नियमित योगाभ्यास अपनाएँ,
शरीर को सक्रिय और मन को संतुलित बनाएँ।"

खेल जगत

हॉकी की दुनिया से परिचय

- शुभम कुमार

खिलाड़ियों की संख्या / Players Count):
कुल खिलाड़ी: प्रत्येक टीम में 11 खिलाड़ी (10 फील्ड खिलाड़ी और 1 गोलकीपर) मैदान पर खेलते हैं।
अतिरिक्त खिलाड़ी (Substitutes): टीम में 5 से 7 अतिरिक्त खिलाड़ी होते हैं। हॉकी में 'रोलिंग सब्स्टीट्यूशन' का नियम होता है, यानी मैच के दौरान खिलाड़ी कभी भी अंदर-बाहर आ-जा सकते हैं।

खेल का मैदान और उपकरण / Ground & Equipment):
मैदान का आकार: हॉकी मैदान 100 गज (91.4 मीटर) लंबा और 60 गज (55 मीटर) चौड़ा होता है।
उपकरण: खिलाड़ी घुमावदार हॉकी स्टिक और एक छोटी, ठोस गेंद का उपयोग करते हैं।
अंपायर (Umpires): खेल में सही निर्णय और नियमों के पालन के लिए मैदान पर 2 मुख्य अंपायर होते हैं।

खेल के बुनियादी नियम / Basic Rules):
समय सीमा: मैच 60 मिनट का होता है, जो 15-15 मिनट के 4 क्वार्टर में बंटा होता है।
स्टिक का नियम: गेंद को केवल हॉकी स्टिक के सपाट (flat) हिस्से से ही मारा या धकेला जा सकता है।
गोल करना (Scoring Goal): गोल केवल तभी मान्य होता है जब गेंद विपक्षी टीम के 'शूटिंग सर्कल' (D-एरिया) के अंदर से स्टिक द्वारा हिट की गई हो।

फाउल और कार्ड्स / Fouls & Cards):
मैदान पर अनुशासन बनाए रखने के लिए मुख्य नियम: फुट फाउल: गोलकीपर के अलावा कोई भी खिलाड़ी गेंद को पैर या शरीर से नहीं छू सकता।
हरा कार्ड (Green Card): 2 मिनट के लिए मैदान से अस्थायी निलंबन (चेतावनी)।
पीला कार्ड (Yellow Card): गंभीर फाउल पर 5 से 10 मिनट का निलंबन।
लाल कार्ड (Red Card): बहुत गंभीर गलती पर पूरे मैच से बाहर।

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका

- सोनी वर्षा

निजी सुंदरता और आत्म-संतोष (अपनी तुलना किसी से न करें)

भाग १: उदास कौवा और तोता

एक समय की बात है, एक जंगल में एक मोटा और काला कौवा रहता था। वह हमेशा उदास रहता था और सोचता था- "मैं इतना काला और मोटा क्यों हूँ?"

एक दिन उसकी नज़र एक सुंदर से तोते पर पड़ी। कौवा उड़ता-उड़ता तोते के पास गया और बोला-"प्यारे मित्र तोते! तुम कितने सुंदर हो! तुम हरे रंग के हो और तुम्हारी चोंच लाल-लाल है। वाह। तुम बहुत सुंदर लगते हो... काश में तुम्हारी तरह होता। देखो मित्र, मैं कितना काला और मोटा हूँ।"

तोते ने मुस्कुराकर उत्तर दिया "प्यारे मित्र कौवे । तुम जैसे हो, वैसे ही बहुत अच्छे हो। मेरी इस सुंदरता का क्या काम? लोग मुझे कैद करके पिंजरे में डाल देते हैं और अपने मनोरंजन के लिए घर में लटका देते हैं। मैं आजाद रहना चाहता हूँ परंतु लोग मुझे कैदी बना देते हैं। तुम्हें तो कोई कैद नहीं करता, तुम तो हमेशा आजाद रहते हो।"

भाग २: राजा शेर से मुलाकात

कौवे को तोते की बात से भी पूरी संतुष्टि नहीं हुई। वह उड़ता-उड़ता जंगल के राजा शेर के पास पहुँचा और बोला- "शेर राजा। तुम कितने सुंदर और शक्तिशाली हो। तुमसे सब डरते हैं और तुम जंगल के राजा हो। तुम्हारे डर से कोई सामने नहीं आता। और मुझे देखो, में कितना काला और गंदा हूँ, कोई मुझे देखना तक नहीं चाहता।"

शेर ने गरजते हुए शांति से कहा- "नहीं मित्र कौवे ! तुम गलत सोच रहे हो। तुम बहुत भाग्यशाली हो कि तुम पूरी तरह आजाद हो। लेकिन लोग मुझे पकड़कर चिड़ियाघर (Zoo) में बंद कर देते हैं और मनोरंजन का साधन समझते हैं। लोग मुझे पिंजरे में देखने के लिए टिकट खरीद कर आते हैं। कम से कम तुम अपनी जिंदगी पूरी आजादी से तो जीते हो!"

भाग ३: सुंदर मोर का नृत्य और सत्य

कौवे को फिर भी संतुष्टि नहीं हुई। वह उड़ते-उड़ते दूर घने जंगल में एक मोर के पास पहुँचा, जहाँ मोर पंख फैलाकर मनमोहक नृत्य कर रहा था। कौवे ने कहा- "प्यारे मित्र मोर! तुम कितने अद्भुत और सुंदर हो! बादल आते ही तुम कितना सुंदर नाचते हो। और मुझे देखो, लोग मुझे देखना भी पसंद नहीं करते।"

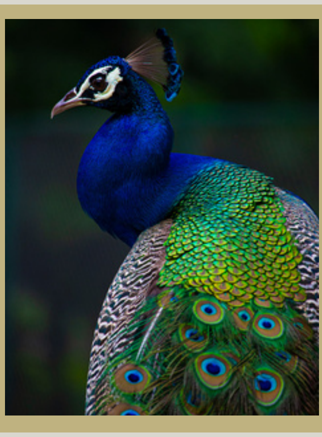

तभी मोर ने उदास होकर कहा- "नहीं प्यारे कौवे मित्र! तुम बहुत भाग्यशाली हो कि लोग तुम्हें कैद नहीं करते। तुम खुले आसमान में अपनी मर्जी से उड़ते हो। तुमने मुझे सुंदर कहा, परंतु इसी सुंदरता के कारण शिकारी आता है, मुझे कैद कर लेता है और मेरे सुंदर पंखों को खींचकर बाजार में बेच देता है। तुम जैसे हो मित्र, वैसे ही प्यारे हो। अपनी तुलना किसी और से क्यों करते हो? जो जैसा है, वह वैसा ही खूबसूरत है। खूबसूरती तन से नहीं, मन से होनी चाहिए।"

मॉरल ऑफ द स्टोरी (कहानी से बच्चों के लिए सीख):
इस प्रेरक कहानी से हमें यह अनमोल शिक्षा मिलती है कि:

आत्म-सम्मान व संतुष्टि: हमें कभी भी अपनी तुलना दूसरों के साथ नहीं करनी चाहिए। ईश्वर ने हर जीव को यूनिक और विशेष बनाया है।

सच्ची खूबसूरती: असली खूबसूरती बाहरी रंग-रूप या तन से नहीं, बल्कि मन, विचारों और व्यवहार से होती है।

अपने हुनर को पहचानें: हर व्यक्ति में कोई न कोई विशेष गुण या हुनर ज़रूर होता है। जरूरत बस इस बात की है कि आप अपने अंदर छिपे हुनर को पहचानें और उसे निखार कर बाहर लाएं।

स्वतंत्रता का महत्व: बाहरी चमक धमक की तुलना में स्वतंत्रता और मानसिक शांति जीवन का सबसे बड़ा धन है। आप जैसे हैं, वैसे ही सर्वश्रेष्ठ और सुंदर हैं!

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका

- मुकेश कुमार शर्मा

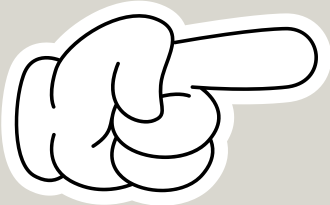

रोचक तथ्य

प्रकृति का सुपरहीरो: बांस

बांस (Bamboo) दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ने वाला पौधा है। अनुकूल परिस्थितियों में यह 24 घंटे में लगभग 35 इंच (3 फीट) तक बढ़ सकता है और सामान्य पेड़ों की तुलना में 35% अधिक ऑक्सीजन देता है।

मस्तिष्क का सुपर -कंप्यूटर

मानव मस्तिष्क में लगभग 86 अरब (86 Billion) न्यूरॉन्स होते हैं। जब भी आप कोई नई गणितीय ट्रिक या भाषा सीखते हैं, तो मस्तिष्क में नए न्यूरोनल कनेक्शन (Synapses) बनते हैं।

पानी की अनोखी अवस्था

अधिकांश तरल जमने पर सिकुड़ते हैं, लेकिन पानी जमने पर फैलता है। इसका घनत्व कम होने से बर्फ पानी पर तैरती है, जिससे भीषण ठंड में भी झीलों के नीचे जलीय जीव सुरक्षित रहते हैं।

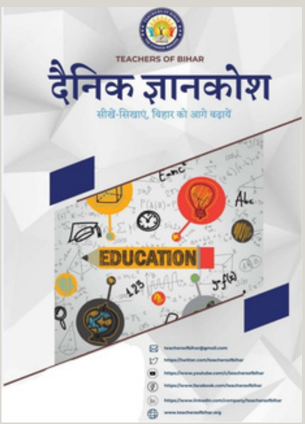

अधिक जानकारी के लिए दिए गए QR कोड कोन स्कैन करें

- मुकेश कुमार शर्मा

Word of the edition

शब्द: RESILIENCE (रेज़िलिएन्स)
अर्थ: कठिनाइयों या असफलताओं के बाद पुनः संभलकर आगे बढ़ने की क्षमता।

वाक्य प्रयोग: "कठिन गणितीय सवालों को हल करते समय छात्रों में Resilience का होना जरूरी है।"

Thought for morning assembly

सोमवार (निरंतरता और अभ्यास):

"महान कार्य ताकत से नहीं, बल्कि निरंतरता और लगन से पूरे होते हैं।"

– सैमुअल जॉनसन

भावार्थ: रोजाना की गई थोड़ी-थोड़ी पढ़ाई परीक्षा के समय बड़े परिणाम लाती है।

बुधवार (सकारात्मक दृष्टिकोण):

"कल के लिए सबसे अच्छी तैयारी यही है कि आप आज अपना सर्वश्रेष्ठ दें।"

– एच. जैक्सन ब्राउन जूनियर

भावार्थ: बीते हुए कल और आने वाले कल की चिंता छोड़कर वर्तमान के कार्य पर पूरा ध्यान लगाएं।

शुक्रवार (जिज्ञासा):

"संदेह और प्रश्न पूछना ही बुद्धिमत्ता की पहली सीढ़ी है।"

भावार्थ: कक्षा में बिना संकोच सवाल पूछने वाला छात्र ही आगे चलकर कुशल विचारक बनता है।

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका

- मुकेश कुमार शर्मा

दिमागी कसरत

दिमाग की बत्ती जलाओ

तार्किक पहेली

सवाल: "मेरे पास शहर हैं पर मकान नहीं, मेरे पास जंगल हैं पर पेड़ नहीं, मेरे पास नदियाँ हैं पर पानी नहीं। बताओ मैं कौन हूँ?"

उत्तर : मानचित्र

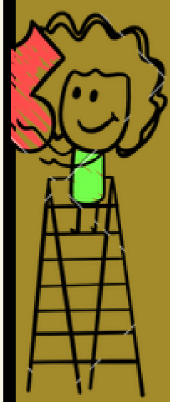

संख्याओं का पैटर्न

सवाल: नीचे दी गई श्रृंखला में प्रश्नवाचक चिन्ह (?) के स्थान पर क्या आएगा?

3,5,9,17,33,?

लॉजिक: प्रत्येक पद में पिछली संख्या को 2 से गुणा करके 1 घटाया गया है:

(3×2) -1 = 5
(5×2) -1 = 9
(9×2) -1 = 17
(17×2) -1 = 33
(33×2)-1 = 65
उत्तर : 65

- मुकेश कुमार शर्मा

स्टडी हैक एवं मैथ्स ट्रिक

स्टडी हैक (ACTIVE RECALL):

पैराग्राफ पढ़ने के बाद किताब बंद करके मुख्य बिंदुओं को बिना देखे रफ कॉपी पर लिखें। यह तकनीक स्मृति को कई गुना मजबूत बनाती है।

मैथ ट्रिक (25 से तेज भाग):

दी गई संख्या को 4 से गुणा करें और दाईं ओर से 2 अंकों के बाद दशमलव (.) लगा दें।

उदाहरण 1:
312 ÷ 25
312×4 = 1248 ÷100 = 12.48

उदाहरण 2:
420 ÷ 25
420×4= 1680÷100 = 16.80

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका
प्रज्ञानिका

- नेहा कुमारी

आगामी कैलेंडर

अक्टूबर

2 — **अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस**
इसका उद्देश्य संघर्षों को बातचीत और शांतिपूर्ण तरीकों से हल करने के लिए लोगों को जागरूक करना है।

11 — **अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस**
इसका उद्देश्य है लड़कियों के नेतृत्व को बढ़ावा देना और उन्हें आत्मनिर्भर तथा सशक्त बनाना।

15 — **विश्व छात्र दिवस**
इसका उद्देश्य है छात्रों में नई सोच, विज्ञान, और तकनीकी ज्ञान के प्रति रुचि पैदा करना ।

31 — **राष्ट्रीय एकता दिवस**
इसे मनाने का मुख्य उद्देश्य देश की एकता, अखंडता और सुरक्षा को सशक्त बनाना ।

नवंबर

11 — **राष्ट्रीय शिक्षा दिवस**
इसका मुख्य उद्देश्य समाज में शिक्षा की भूमिका को रेखांकित करते हुए एक समान और सशक्त राष्ट्र का निर्माण करना है।

14 — **बाल दिवस**
इस दिन देश भर के स्कूलों में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, ताकि बच्चों को अपनी छिपी हुई प्रतिभा दिखा सके।

15 — **जनजातीय गौरव दिवस**
देश के हर नागरिक को आदिवासी समाज के गौरवशाली इतिहास से जोड़कर राष्ट्रीय समावेशिता को मजबूत करना इसका एक मुख्य आधार है।

26 — **संविधान दिवस**
इसका मुख्य उद्देश्य है नागरिकों के बीच न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे संवैधानिक सिद्धांतों का प्रचार करना है।

आगामी कैलेंडर

दिसंबर

1 — विश्व एड्स दिवस
इसका उद्देश्य है एचआईवी (HIV) और एड्स (AIDS) महामारी के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए।

3 — अंतर्राष्ट्रीय विकलांग (दिव्यांग) दिवस
इसका उद्देश्य है समाज में दिव्यांगता से जुड़े मुद्दों और चुनौतियों के प्रति समझ विकसित करना।

7 — भारतीय सशस्त्र सेना झंडा दिवस
इसका उद्देश्य देश के सैनिकों और शहीद जवानों के परिवारों के प्रति सम्मान प्रकट करना है।

10 — मानवाधिकार दिवस
इसका उद्देश्य है लोगों को उनके मानवाधिकारों और मौलिक स्वतंत्रताओं के बारे में जानकरी देना।

यदि आप भी इन अवसरों पर अपने विद्यालय में छात्रों के साथ मिलकर कोई रोचक गतिविधि, प्रतियोगिता या कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं, तो हमें आपकी तस्वीरों का इंतज़ार है! अपनी इन खूबसूरत और रचनात्मक गतिविधियों की तस्वीरों को हमारे साथ साझा करने के लिए नीचे दिए गए स्कैनर (QR Code) को स्कैन करें। चुनिंदा तस्वीरों को मैगजीन के अगले अंक में विशेष रूप से प्रकाशित किया जाएगा।
तो देर किस बात की? अपनी प्रतिभा और प्रयासों को हमारे साथ मंच दीजिए!

अग्रिम अंक में महत्वपूर्ण दिवसों से संबंधित तस्वीरें साझा करने हेतु दिया गया कर कोड स्कैन करें

लिंक:– https://forms.gle/eQZPP9B7JSJBwHhv6

मुजफ्फरपुर, गुरुवार
30.06.2022
प्रभात खबर 04

कैंपस में उग आये थे झाड़, शिक्षक ने बच्चों की अगवानी में खुद की सफाई

धनंजय पांडेय, मुजफ्फरपुर

गर्मी की छुट्टी बिताकर राजकीय बुनियादी विद्यालय बखरी के बच्चे विद्यालय पहुंचे, तो कैंपस से लेकर क्लास रूम तक चमक रहा था. टॉयलेट में भी पूरी तरह सफाई थी. यहां तक कि परिसर में बनी पोषक वाटिका भी चहक रही थी. 25 दिनों के बाद अपने विद्यालय में इस तरह की अगवानी से बच्चे न केवल खुश दिखे, बल्कि भी स्वच्छता के प्रति सजग हो गये. दरअसल, सोमवार को स्कूल खुलना था, तो रविवार को ही विद्यालय के शिक्षक केशव कुमार ने कैंपस से लेकर क्लास रूम तक की सफाई कर दी. सुबह ही हंसिया, फावड़ा व झाड़ू लेकर

स्वच्छता की राह दिखायी

- बुनियादी विद्यालय बखरी का कैंपस 25 दिनों की छुट्टी में बन गया था जंगल
- शिक्षक ने परिसर सहित टॉयलेट व क्लास रूम भी साफ किया

राजकीय बुनियादी विद्यालय बखरी. इनसेट शिक्षक केशव कुमार.

विद्यालय पहुंच गये. परिसर में घास के साथ झाड़ उग गये थे. कचरा भी फैला था. सबको साफ कर एक जगह एकत्र किया. इसके बाद टॉयलेट की हार्पिक से सफाई की. अब केशव के इस काम की सराहना विभाग से लेकर सोशल मीडिया पर भी हो रही है.

बच्चों को दिक्कत न हो, इसलिए की पहल : केशव कुमार का कहना है कि क्षेत्रीय शिक्षा उपनिदेशक तिरहुत प्रमंडल द्वारा निर्गत अवकाश तालिका के अनुसार एक से 25 जून तक ग्रीष्मावकाश था. 26 जून को रविवार की छुट्टी थी. 27 जून को स्कूल खुलना था, लेकिन परिसर में अवांछित पौधे उग आये थे, जिसमें कीड़े-मकोड़ों ने डेरा बना लिया था. बच्चों के लिए यह खतरनाक हो सकता था. इसी कारण बच्चों के स्कूल आने से पहले रविवार को सफाई अभियान चलाया.

विकास मद में दो साल से नहीं आया पैसा : केशव कुमार ने बताया कि वर्ष 2021-22 व 2022-23 में विद्यालय विकास मद में विभाग की ओर से कोई राशि उपलब्ध नहीं करायी गयी है. इस कारण खुद ही सफाई करनी पड़ती है. हालांकि बच्चे भी स्वच्छता के प्रति जागरूक हैं. उनका कहना था कि जब वे खुद टॉयलेट साफ करने जाते हैं, तो हार्पिक डालने के बाद पानी गिराने के लिए बच्चों की कतार लग जाती है.

स्वच्छता में पहले स्थान पर है स्कूल : स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार के मानकों के अनुसार यह विद्यालय मुरौल प्रखंड में सबसे अधिक 90 प्वॉइंट के साथ प्रथम स्थान पर है. केशव ने बताया कि उनके विद्यालय में आठ टॉयलेट हैं, जो हमेशा साफ रहते हैं. साबुन बैंक बना है. शिक्षकों के साथ बच्चे भी स्वच्छता के प्रति सजग हैं. पोषक वाटिका में सब्जी की खेती की गयी है.

2002 तक पढ़े, 2014 से पढ़ाने आ गये : केशव कुमार ने इसी स्कूल से आठवीं तक की पढ़ाई की. वर्ष 2008 में आठवीं पास की और 2014 में शिक्षक बनकर आ गये. इस कारण विद्यालय से ज्यादा लगाव है. पहली से आठवीं कक्षा तक 412 बच्चों का नामांकन है और 11 शिक्षक नियुक्त हैं.

अगले वर्ष से सभी सरकारी विद्यालयों में कंप्यूटर की पढ़ाई : सम्राट चौधरी

- राजकीय मध्य विद्यालय रामजीचक (दानापुर) में अभिभावक-शिक्षक संगोष्ठी में शामिल हुए मुख्यमंत्री
- विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों से संवाद कर विद्यालय की व्यवस्थाओं की ली जानकारी

जागरण संवाददाता, पटना : मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी शनिवार को राजकीय मध्य विद्यालय रामजीचक (दानापुर) में निपुण पथ पढ़ना, लिखना एवं गणना की थीम पर आयोजित अभिभावक-शिक्षक संगोष्ठी (पीटीएम) में शामिल हुए। इस अवसर पर सीएम ने शिक्षा विभाग को निर्देश दिया कि अगले वर्ष से सभी सरकारी विद्यालयों में कंप्यूटर शिक्षा को अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराने की दिशा में आवश्यक योजना तैयार की जाए।

उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीक से जोड़ना समय की आवश्यकता है। इसके लिए दो-तीन स्कूलों पर एक इंस्ट्रक्टर की व्यवस्था सुनिश्चित करें ताकि विद्यार्थियों को कंप्यूटर की शिक्षा नियमित रूप से मिल सके। कार्यक्रम में शिक्षा मंत्री मिथिलेश तिवारी, सहकारिता मंत्री राम कृपाल यादव मौजूद रहे। सीएम ने अच्छे अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया तथा उनके अभिभावकों को 'पेरेंट्स आफ द मंथ के लिए सम्मानित किया।

मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी राजकीय मध्य विद्यालय रामजीचक (दानापुर) में अभिभावक-शिक्षक संगोष्ठी में हुए शामिल। साथ में शिक्षा मंत्री मिथिलेश तिवारी, सहकारिता मंत्री रामकृपाल यादव व अन्य। • आइपीआरडी

मुख्यमंत्री ने कहा कि पीटीएम का उद्देश्य सरकारी विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता को और बेहतर बनाना, शिक्षकों की उपलब्धता एवं विद्यार्थियों की शत-प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित करना तथा विद्यालयों में आवश्यकतानुसार सुविधाओं का विस्तार करना है।

संबंधित खबर » पेज 4

गूगल फार एजुकेशन के इंडिया हेड के साथ शिक्षा मंत्री मिथिलेश ने की बैठक। • सौ : विभाग

स्कूलों में एआइ आधारित पाठ्यक्रम की होगी शुरुआत

शिक्षकों को एआइ और आधुनिक डिजिटल तकनीकों के प्रभावी शैक्षणिक उपयोग के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना : बिहार में स्कूली और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एआइ आधारित पाठ्यक्रम की शुरुआत होगी। इस संबंध में शिक्षा मंत्री मिथिलेश तिवारी ने मंगलवार को गूगल फार एजुकेशन के इंडिया हेड संजय जैन और नीति वर्मा के साथ मंगलवार को बैठक की। बैठक में बिहार की शिक्षा व्यवस्था को एआइ, डिजिटल तकनीक और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल पर चर्चा हुई।

बिहार में गूगल एआइ एजुकेटर ट्रेनिंग सीरीज को स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा तक विस्तारित करने पर सैद्धांतिक सहमति बनी। इसके माध्यम से शिक्षकों को एआइ और आधुनिक डिजिटल तकनीकों के प्रभावी शैक्षणिक उपयोग के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा। गूगल की ओर से बिहार शिक्षा विभाग को निःशुल्क टीचर कैपेसिटी बिल्डिंग एवं ट्रेनिंग उपलब्ध कराने की दिशा में भी सहयोग किया जाएगा।

तैयारी | एआई संवर्द्धन के लिए गूगल इंडिया के साथ होगा समझौता, चयनित शिक्षकों को राजकीय पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा

स्मार्ट बनेंगे सूबे के शिक्षक, गूगल करेगा मदद

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। सूबे के शिक्षक स्मार्ट बनेंगे। इसके लिए गूगल उनकी मदद करेगा। शिक्षक दिवस पर श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में आयोजित होने वाले राज्यस्तरीय समारोह में शिक्षकों के एआई संवर्द्धन के लिए गूगल इंडिया के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किया जाएगा। मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और शिक्षा मंत्री मिथिलेश तिवारी की मौजूदगी में एससीईआरटी के निदेशक और गूगल के प्राधिकृत प्रतिनिधि समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करेंगे। इस समझौते के माध्यम से शिक्षकों के एआई संबंधी ज्ञान और कौशल को बढ़ाने की दिशा में काम किया जाएगा। गुरुवार को शिक्षा मंत्री मिथिलेश तिवारी की मौजूदगी में विकास भवन स्थित सभागार में हुई बैठक में समारोह की तैयारियों को अंतिम रूप दिया गया। समारोह का उद्घाटन सीएम सम्राट चौधरी करेंगे। समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में दोनों उपमुख्यमंत्री भी मौजूद रहेंगे। समारोह की अध्यक्षता शिक्षा मंत्री मिथिलेश तिवारी करेंगे। इस दौरान हर जिले से चयनित एक-एक शिक्षक को राजकीय पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। समारोह को राज्य के विद्यालयों तक पहुंचाने के लिए इसका सीधा प्रसारण भी किया जाएगा। शिक्षक और विद्यार्थी भी सीधे जुड़ सकेंगे। समारोह के दूसरे सत्र में स्कूली बच्चे विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देंगे और अपनी प्रतिभा के माध्यम से शिक्षकों के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त करेंगे।

- श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में शिक्षकों के एआई संवर्द्धन के लिए होगा कार्यक्रम

चार शिक्षा अधिकारियों को एनआईईपीए ने सम्मानित किया

पटना। राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (एनआईईपीए), नई दिल्ली ने शैक्षिक प्रशासन में नवोन्मेष एवं नवाचार तथा अच्छी कार्यप्रणालियों को प्रोत्साहित करने के लिए बिहार के चार शिक्षा अधिकारियों को सम्मानित किया गया। सम्मान पाने वाले अधिकारियों में पटना के जिला शिक्षा पदाधिकारी योगेश कुमार, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद के राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी मो. महताब रहमानी, राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी कौशल कुमार तथा मुजफ्फरपुर के मोतीपुर प्रखंड के प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी मनोज कुमार शामिल हैं। समारोह का आयोजन नई दिल्ली में गुरुवार को किया गया। कार्यक्रम में एनआईईपीए के कुलपति प्रो. रमा शंकर दुबे, पूर्व निदेशक, एनसीईआरटी, शिक्षाविद एवं लेखक प्रो. जेएस राजपूत तथा एनआईईपीए की प्रतिकुलपति प्रो. शशिकला वंजारी सहित शिक्षा प्रशासन के क्षेत्र से जुड़े पदाधिकारी एवं शिक्षाविद उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान

रिपोर्ट : बिहार संसाधन में पीछे पर पढ़ाई में कई राज्यों से निकला आगे

- शिक्षा मंत्रालय की परफॉर्मेंस ग्रेडिंग इंडेक्स रिपोर्ट आई
- राज्य आधारभूत संरचना और सुविधा में खा रहा मात

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय की रिपोर्ट ने साबित कर दिया है कि अभाव में बिहारी प्रतिभा अपनी चमक बिखेरने में सक्षम हैं। इसके अनुसार बिहार कम संसाधन होने के बावजूद कई बड़े राज्यों से पढ़ाई-लिखाई के मामले में आगे है।

शिक्षा मंत्रालय की 2025-26 की परफॉर्मेंस ग्रेडिंग इंडेक्स रिपोर्ट में बिहार पढ़ाई के मामले में आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे शिक्षा के मॉडल माने जाने वाले राज्यों से काफी आगे है। इस सेक्टर में अर्थात लर्निंग आउटकम में बिहार को 81.9 अंक मिले हैं। यह स्कोर आंध्र प्रदेश (68.6), कर्नाटक (72.7) और तमिलनाडु (55.1) से बेहतर है। हालांकि स्कूलों के बुनियादी ढांचे इंफ्रास्ट्रक्चर और सुविधाओं के मामले में बिहार देश के सबसे कमजोर राज्यों में शामिल है। 190 में केवल 64.8 अंक मिले हैं। राज्य के सरकारी स्कूल अभी भी स्मार्ट क्लास, आईसीटी लैब, विज्ञान प्रयोगशाला, पुस्तकालय, सुरक्षित पेयजल, सोलर पैनल, वर्षा जल संचयन, सैनिटरी पैड वेंडिंग मशीन और अन्य बुनियादी सुविधाओं के मामले में काफी पीछे हैं।

यह रिपोर्ट बताती है कि संसाधनों की कमी के बावजूद बिहार के विद्यार्थी सीखने के परिणामों में इन बड़े राज्यों से आगे दिखायी दे रहे हैं। बिहार के सरकारी स्कूलों में भवन, लैब, डिजिटल सुविधाएं और आधुनिक संसाधनों की कमी लंबे समय से चिंता का विषय है। इसके बावजूद सीखने के परिणाम अपेक्षाकृत बेहतर रहना यह संकेत देता है कि शिक्षकों के प्रयास, छात्रों की प्रतिस्पर्धी मानसिकता और बुनियादी शिक्षण व्यवस्था का असर अभी भी दिखायी दे रहा है। हालांकि, विशेषज्ञों का मानना है कि यदि स्कूलों का आधारभूत ढांचा मजबूत हो जाये तो बिहार का प्रदर्शन और बेहतर हो सकता है।

स्कूल शिक्षा का छह आधार पर हुआ मूल्यांकन

रिपोर्ट में स्कूल शिक्षा का मूल्यांकन छह आधार पर किया गया है। इनमें डोमेन-लर्निंग आउटकम, एक्सेस, इंफ्रास्ट्रक्चर, इक्विटी, गवर्नेंस और शिक्षक शिक्षा एवं प्रशिक्षण को शामिल किया गया है। रिपोर्ट का निष्कर्ष बताता है कि बिहार की सबसे बड़ी चुनौती अब भी स्कूलों के आधारभूत ढांचे को मजबूत करना है। स्पष्ट है कि आंध्र प्रदेश, कर्नाटक व तमिलनाडु का स्कूल इंफ्रास्ट्रक्चर बिहार से कहीं बेहतर है, लेकिन सीखने के परिणामों में बिहार उनसे आगे निकल गया है। शिक्षा मंत्रालय के स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग द्वारा शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए जारी पीजीआइ 2.0 रिपोर्ट में बिहार को आकांक्षी-1 ग्रेड मिला है। राज्य ने 1000 में 564.8 अंक हासिल किये हैं।

नयी नीति. बिना एडिटिंग का क्लासरूम वीडियो होगा चयन का आधार

राज्य के 37 हजार स्कूलों में चुने जायेंगे 'विषय मार्गदर्शक'

15 तक आवेदन का मौका

संवाददाता, पटना

राज्य के 37 हजार स्कूलों में कार्यरत 1.50 लाख शिक्षकों में से विभिन्न विषयों के 'विषय मार्गदर्शक (सब्जेक्ट मेंटर)' चुने जायेंगे. इच्छुक शिक्षक 15 अगस्त तक ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे. चयनित शिक्षकों का राज्य स्तरीय पैनल तैयार किया जायेगा. माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने संबंधित लोगों व संस्थानों को निर्देश जारी कर दिया है. चयन प्रक्रिया में शिक्षकों की रुचि, प्रतिभा, कक्षा शिक्षण, विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता, छात्र-शिक्षक फीडबैक और नवाचारपूर्ण शिक्षण शैली का आकलन किया जायेगा.

आवेदनकर्ताओं को 10 मिनट का बिना एडिटिंग क्लासरूम वीडियो अपलोड करना होगा. इसमें शिक्षक कक्षा में विद्यार्थियों को पढ़ाते हुए दिखायी दें और छात्रों की उपस्थिति व शिक्षक-विद्यार्थी के बीच संवाद स्पष्ट हो. एडिटिंग किया गया वीडियो स्वीकार नहीं होगा. वीडियो को सोशल साइट पर अपलोड कर उसका शेयरेबल लिंक निर्धारित गूगल फॉर्म में भरना होगा.

17 से अधिक विषयों के शिक्षक कर सकेंगे आवेदन : हिंदी, अंग्रेजी, गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, कंप्यूटर विज्ञान, संस्कृत, उर्दू, वाणिज्य, गृह विज्ञान, मनोविज्ञान और समाजशास्त्र सहित विभिन्न विषयों के शिक्षक आवेदन कर सकेंगे. हर विषय के लिए अलग-अलग मूल्यांकन मानक है.

चयनित विषय मार्गदर्शक विद्यार्थियों में अवधारणात्मक शिक्षा को बढ़ावा देंगे. वे विद्यार्थियों की सीखने में आने वाली कठिनाइयों का समाधान करने तथा विषय चयन और कैरियर मार्गदर्शन में भी सहयोग करेंगे.

रिकॉर्ड समय में सहायक प्राध्यापकों की नियुक्ति को मैनेजमेंट केस स्टडी के रूप में विकसित किया जाए

पटना. बिहार के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल सैयद अता हसनैन (सेवानिवृत्त) ने सोमवार को बिहार लोक भवन के दरबार हॉल में राज्य के 211 नवसृजित डिग्री कॉलेजों के लिये महज एक महीने में सहायक प्राध्यापकों की नियुक्ति प्रक्रिया पूरी करने वाली टीमों से संवाद किया. उन्होंने इस उपलब्धि को टीमवर्क, प्रभावी नेतृत्व, पारदर्शिता और जनसेवा के प्रति समर्पण का उत्कृष्ट उदाहरण बताते हुए सभी अधिकारियों, संस्थानों और सहयोगी टीमों को बधाई दी. राज्यपाल ने सुझाव दिया कि इस भर्ती प्रक्रिया को किसी प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थान द्वारा मैनेजमेंट केस स्टडी के रूप मे विकसित किया जाये, ताकि यह प्रशासनिक नवाचार, नेतृत्व और समस्या समाधान का प्रेरक मॉडल बन सके.

शिक्षा विभाग से एमओयू... बच्चों को एआई, गणित, विज्ञान में दक्ष बनाएंगी

सरकारी स्कूलों के छात्रों में सीखने की क्षमता बढ़ाएंगी सात संस्थाएं

पॉलिटिकल रिपोर्टर | पटना

बिहार के सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों को एआई, भाषा, गणित, विज्ञान की जानकारी देने के लिए 7 संस्थाएं सहयोग करेंगी। इसके लिए शास्त्रीनगर स्थित राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय में शिक्षा विभाग ने उक्त संस्थाओं से समझौता किया है। इस दौरान सीएम सम्राट चौधरी, शिक्षा मंत्री मिथिलेश तिवारी, विधायक संजीव चौरसिया मौजूद रहे। ये संस्थाएं पहली से 12वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों में सीखने की गुणवत्ता में सुधार, शिक्षकों को सहयोग तथा विद्यालयों की समीक्षा व्यवस्था को सशक्त बनाएंगी।

संस्थाएं विद्यार्थियों की सीखने संबंधी कमजोरियों की पहचान करने, उनके नियमित अभ्यास को बढ़ावा देने तथा आईसीटी लैब और स्मार्ट क्लास के बेहतर उपयोग में सहयोग करेंगी। सभी अपने आंतरिक संसाधनों से शिक्षा विभाग के साथ काम करेंगी और इसके लिए विभाग को कोई राशि नहीं देनी होगी। इससे पहले बिहार स्कूल लाइव क्लासेज की शुरुआत के मौके पर शिक्षा मंत्री मिथिलेश तिवारी ने मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के साथ विद्यालय की छात्राओं से संवाद स्थापित किया तथा उनकी जिज्ञासाओं और अनुभवों को सुना। उत्कृष्ट छात्राओं को प्रमाण पत्र और हॉकी खिलाड़ियों के बीच किट वितरण किया।

शास्त्रीनगर कन्या विद्यालय में कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी।

कैसे सहयोग करेंगी सातों संस्थाएं

- वाधवानी एआई पहली से 8वीं कक्षा तक के बच्चों की पढ़ने की क्षमता और गति में सुधार के लिए सहयोग करेगी।
- खान एकेडमी इंडिया छठी से 10वीं कक्षा के विद्यार्थियों की गणित और विज्ञान शिक्षा को मजबूत बनाने में सहायता करेगी।
- प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन कक्षा 4 से 6 तक के बच्चों की भाषा और गणित की बुनियादी समझ को मजबूत करेगा।
- एकस्टेप फाउंडेशन पहली से 5वीं कक्षा तक के बच्चों और शिक्षकों के लिए एआई आधारित शिक्षण संसाधन विकसित करेगी।
- पीआई जैम फाउंडेशन छठी से 9वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए एआई आधारित पाठ्यक्रम और शिक्षण सामग्री विकसित करेगा।
- मंत्रा फॉर चेंज पहली से 8वीं कक्षा तक के विद्यालयों में मेंटरिंग और समीक्षा व्यवस्था को सशक्त बनाने में सहयोग करेगी।
- शिक्षालोकम फाउंडेशन पहली से 12वीं तक के विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों से एआई टूल के जरिए फीडबैक प्राप्त कर शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने में सहयोग करेगा।

डिजिटल शिक्षा से संवरेगा बिहार का भविष्य

मुख्यमंत्री ने पटना स्थित राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय में लाइव क्लास का किया शुभारंभ

आधुनिक शिक्षण प्रणाली

10 सरस्वती विद्या निकेतन विद्यालयों में जेईई एवं नीट के लिए निश्शुल्क अनुशिक्षण कार्यक्रम की भी हुई शुरुआत

- विद्यालय में दो अत्याधुनिक स्मार्ट क्लासरूम का लोकार्पण
- प्रदेश के सभी हाई स्कूलों में लाइव क्लासेज शुरू करने का निर्देश

जागरण संवाददाता, पटना: मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने गुरुवार को कहा कि प्रदेश सरकार का लक्ष्य राज्य के हर विद्यार्थी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आधुनिक तकनीक और प्रतियोगी परीक्षाओं की बेहतर तैयारी के समान अवसर उपलब्ध कराना है। सरकार का संकल्प है कि स्मार्ट क्लास, लाइव लर्निंग, डिजिटल शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षा उन्मुख शिक्षण के माध्यम से राज्य के प्रत्येक विद्यार्थी को बेहतर भविष्य के लिए सशक्त बनाया जाए। इसके पहले शिक्षा मंत्री मिथिलेश तिवारी की मौजूदगी में सीएम ने राजधानी के शास्त्रीनगर स्थित राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में बिहार स्कूल लाइव क्लासेज का शुभारंभ किया। बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा संचालित आनलाइन कोचिंग क्लासेज के तहत पटना के 10 सरस्वती विद्या निकेतन विद्यालयों (माडल स्कूल) में इंजीनियरिंग (जेईई) एवं मेडिकल (नीट) प्रवेश परीक्षा के लिए निश्शुल्क अनुशिक्षण कार्यक्रम की भी शुरुआत हुई।

जिलाधिकारी कुंदन कुमार ने बिहार स्कूल लाइव क्लासरूम की पृष्ठभूमि तथा शैक्षणिक कार्यकलाप को प्रस्तुतिकरण के माध्यम से मुख्यमंत्री को दिखाया। सीएम ने प्रदेश के हाई स्कूलों में बिहार स्कूल लाइव क्लासेज की शुरुआत करने का निर्देश दिया। इस दौरान छात्राओं ने बिहार स्मार्ट लाइव क्लास रूम के तहत पढ़ाई की शुरुआत की। कार्यक्रम के दौरान राजधानी के 10 चयनित माडल स्कूलों के विद्यार्थियों को लाइव क्लास व्यवस्था से जोड़ा गया। साथ ही विद्यालय में स्थापित दो अत्याधुनिक स्मार्ट क्लास रूम तथा इंटरएक्टिव पैनल आधारित आधुनिक शिक्षण व्यवस्था का लोकार्पण किया गया। मुख्यमंत्री ने बायोलाजी लैब, फिजिक्स लैब, आइएसएम लैब, आइसीटी लैब, स्पोर्ट्स रूम, म्यूजिक रूम सहित विभिन्न भागों का निरीक्षण किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने छात्रों से बातचीत की और शैक्षणिक व्यवस्था की जानकारी ली।

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले अभ्यर्थियों को सम्मानित किया गया, इस दौरान उन्हें मुख्यमंत्री ने उत्कृष्टता प्रमाण पत्र प्रदान किया। हाकी खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली शास्त्री नगर स्थित राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं को मुख्यमंत्री ने सम्मानित करते हुए किट वितरित की।

स्मार्ट क्लास के जरिए शिक्षा देने का हुआ शुभारंभ • आइपीआरडी

इंजीनियर एवं डाक्टर बनने का स्वप्न होगा साकार

कार्यक्रम के दौरान छात्रा रोशनी राज ने कहा कि लाइव क्लास से 10 से 12 तक पढ़ा जा सकता है। बुनियादी बातें साफ हो जाती है। कुछ सेकेंड में प्रश्न के उत्तर हल कर दिए जाते है। बोर्ड परीक्षा की तैयारी आसान हो जाती है। सभी विषयों की पढ़ाई के लिए अलग-अलग शिक्षक की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती। राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय की 11वीं की छात्रा काजल कुमारी ने कहा कि हमारे स्कूल में जेईई और नीट की आनलाइन कोचिंग शुरू होने वाली है। इससे हम स्कूल में ही क्लास कर सकते है। 70 प्रतिशत बच्चे ऐसे है, जो जेईई-नीट के लिए कोचिंग फीस नहीं दे सकते, ऐसे में उनका इंजीनियर एवं डाक्टर बनने का स्वप्न साकार होगा।

संबंधित खबर » पेज 9

सुरक्षित शनिवार मासिक सुरक्षा क्विज में शिक्षकों ने बढ़-चढ़कर लिया भाग, 2500 से अधिक शिक्षकों को मिला डिजिटल प्रमाण पत्र

» बिहार की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी टीचर्स ऑफ बिहार ने आयोजित किया आनलाइन एक्सक्लूसिव क्विज

खबरों की तह तक

पटना। सुरक्षित शनिवार एवं बैगलेस-डे के अंतर्गत टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा आयोजित "मासिक सुरक्षा क्विज" में राज्य के शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यालयों में सुरक्षा जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित इस क्विज में बाढ़ एवं जल सुरक्षा, वज्रपात से बचाव, साँप-बिच्छू एवं विषैले जीव-जंतुओं से सुरक्षा तथा नाव दुर्घटना एवं डूबने से बचाव जैसे महत्वपूर्ण विषयों को शामिल किया गया। क्विज में कुल 20 प्रश्न पूछे गए, जिसमें शिक्षकों ने अपनी सुरक्षा संबंधी जानकारी एवं जागरूकता का प्रदर्शन किया। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 2500 से अधिक शिक्षकों को डिजिटल प्रशंसा प्रमाण पत्र प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया। इस अवसर पर टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने कहा कि सुरक्षित शनिवार कार्यक्रम बच्चों एवं शिक्षकों में आपदा प्रबंधन तथा सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने का प्रभावी माध्यम है। डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से इस तरह की गतिविधियों को और व्यापक बनाया जा रहा है। वहीं इवेंट लीडर केशव कुमार एवं क्विज क्रिएटर पप्पू कुमार पंकज ने बताया कि शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी से यह क्विज सफल रहा। आने वाले समय में भी सुरक्षा एवं शैक्षणिक जागरूकता से जुड़ी गतिविधियों का आयोजन निरंतर किया जाएगा। प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने कहा कि टीचर्स ऑफ बिहार शिक्षकों को तकनीक से जोड़ते हुए नवाचार एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर कार्य कर रहा है। सुरक्षित शनिवार जैसी पहल विद्यालयों को सुरक्षित एवं जागरूक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उन्होंने सभी शिक्षक साथियों से अपील की कि वे सुरक्षित शनिवार की गतिविधियों को विद्यालय स्तर पर प्रभावी रूप से लागू करें और बच्चों को सुरक्षित व्यवहार के लिए प्रेरित करें।

मेरा विद्यालय, मेरा अभिमान का जिम्मा बीएसईबी को

- आइटी आधारित सिस्टम से पूरी व्यवस्था होगी संचालित
- दो से तीन महीने के अंदर आरंभ होगा कार्यक्रम

राज्य ब्यूरो, जागरण • पटना : मेरा विद्यालय, मेरा अभिमान का जिम्मा शिक्षा विभाग ने बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (बीएसईबी) को सौंपा है। यह योजना पूरी तरह सूचना प्रौद्योगिकी (आइटी) आधारित सिस्टम के माध्यम से संचालित होगी। दो से तीन महीने के अंदर मेरा विद्यालय, मेरा अभिमान कार्यक्रम आरंभ होगा।

क्या है मेरा विद्यालय, मेरा अभिमान : मेरा विद्यालय, मेरा अभिमान कार्यक्रम पूर्ववर्ती विद्यार्थियों के लिए है। किसी भी विद्यालय के पूर्ववर्ती विद्यार्थी अपने उस विद्यालय को और बेहतर बनाने के लिए कुछ करना चाहते हैं, जहां से वह पढ़कर निकले हैं। संबंधित स्कूल से पढ़कर निकलने के बाद वे अब इस स्थिति में हैं कि अपने गांव या फिर शहर के विद्यालय के लिए कुछ कर सकें। उनके लिए मेरा विद्यालय, मेरा अभिमान कार्यक्रम आरंभ किया जा रहा।

कार्यालयों का चक्कर लगाने की जरूरत नहीं, पोर्टल से संचालित होगी व्यवस्था : पूर्व में यह बात सार्वजनिक रूप से आती रही है कि अपने विद्यालय के किसी पूर्ववर्ती छात्र ने कुछ करने की योजना बनाई और विभाग को इस बारे में लिखित प्रस्ताव भी दिया पर लंबी अवधि तक इस दिशा में कोई कार्रवाई नहीं हुई। इसके बाद मामला दब कर रह गया। शिक्षा मंत्री मिथिलेश तिवारी ने इस संबंध में बताया कि मेरा विद्यालय, मेरा अभिमान कार्यक्रम पोर्टल के माध्यम से संचालित होगा। इसके लिए किसी तरह के आवेदन कार्यालय को नहीं भेजना है। पोर्टल पर यह जानकारी देनी है कि किस विद्यालय के पूर्ववर्ती विद्यार्थी अपने विद्यालय के लिए क्या करना चाहते हैं। उन्हें अपने बारे में यह जानकारी देनी है कि उन्होंने जिस विद्यालय में पढ़ाई की उसका वर्ष क्या था।

मिथिलेश तिवारी। • जागरण आर्काइव

पूर्ववर्ती विद्यार्थी को आनलाइन प्रस्ताव पर हुए निर्णय की मिल जाएगी जानकारी

पूर्ववर्ती विद्यार्थी द्वारा मेरा विद्यालय, मेरा अभिमान के तहत जो प्रस्ताव दिया जाएगा उस पर शिक्षा विभाग के संबंधित अधिकारी ने क्या निर्णय लिया उसकी सूचना आनलाइन उपलब्ध हो जाएगी। संबंधित पूर्ववर्ती विद्यार्थी के अलावा उक्त विद्यालय के प्रधानाध्यापक और संबंधित जिले के शिक्षा अधिकारी को भी इस बारे में सूचना आनलाइन जाएगी। इसके लिए भी समय सीमा तय रहेगी। सभी तरह के अनापत्ति भी पोर्टल पर ही मिल जाएंगे। इसके बाद मेरा विद्यालय, मेरा अभिमान कार्यक्रम पर काम आरंभ हो जाएगा। पूर्ववर्ती विद्यार्थी अपने विद्यालय में आइटी सेक्टर, सामान्य पठन-पाठन व आधारभूत संरचना के क्षेत्र में भी अपना योगदान कर सकेंगे।

बच्चों को स्कूल से जोड़ने घर-घर पहुंचेगी शिक्षा दीपक टोली

बरारी/सिटिजलपल न्यूज

कटिहार। बच्चों की स्कूल से बढ़ती दूरी और अनियमित उपस्थिति को रोकने के लिए प्राथमिक विद्यालय बैसागोबिंदपुर ने अनूठी पहल शुरू की है। विद्यालय के मेधावी छात्र-छात्राएं अब शिक्षा दीपक टोली बनाकर घर-घर पहुंचेंगे और बच्चों व अभिभावकों को नियमित रूप से विद्यालय आने के लिए जागरूक करेंगे। अभियान का उद्देश्य बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़े रखना और उनकी नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करना है। प्रधान शिक्षक विपिन कुमार चौधरी की पहल पर विद्यालय में आठ शिक्षा दीपक टोलियों का गठन किया गया है। प्रत्येक टोली में संबंधित क्षेत्र के पांच से दस मेधावी छात्र-छात्राओं को शामिल किया गया है। टोलियों के मार्गदर्शन की जिम्मेदारी शिक्षकों को दी गई है। इन टोलियों के नाम देश के महान व्यक्तित्वों के नाम पर रखे गए हैं। इनमें डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम, मौलाना अबुल कलाम आजाद, डॉ. जाकिर हुसैन, उस्ताद बिस्मिल्लाह खां, महात्मा गांधी, डॉ. भीमराव आंबेडकर, सुभाष चंद्र बोस और डॉ. राजेंद्र प्रसाद के नाम शामिल हैं। टोली के सदस्य अपने-अपने क्षेत्र में भ्रमण कर बच्चों और अभिभावकों से संवाद करेंगे तथा शिक्षा के महत्व और नियमित विद्यालय आने के प्रति जागरूक करेंगे। प्रधान शिक्षक विपिन कुमार चौधरी ने कहा कि बच्चों को स्कूल तक लाने के साथ उन्हें शिक्षा की मुख्यधारा में बनाए रखना भी जरूरी है। इस पहल से मेधावी बच्चों में नेतृत्व क्षमता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना भी विकसित होगी।

चित्र वीथिका

- स्मिता ठाकुर

राजकीय मध्य विद्यालय रामजीचक दानापुर

पीएमश्री मध्य विद्यालय शिवगंज, डेहरी रोहतास

पर्दा कन्या मध्य विद्यालय आरानगर भोजपुर

प्राथमिक विद्यालय चुआड़, डुमराँव बक्सर

मध्य विद्यालय बेलागोपी,गायघाट मुजफ्फरपुर

मध्य विद्यायल दरगाहीगंज , नरपतगंज अररिया

मध्य विद्यालय सिमराहा,फारबिसगंज अररिया

प्राथमिक विद्यालय फरीदपुर, विक्रम पटना

खंड: 2 अंक: 3
जुलाई - सितंबर 2026
त्रैमासिक ई- शैक्षिक पत्रिका

चित्र वीथिका

मध्य विद्यालय कासिमपुर
खगड़िया

प्राथमिक विद्यालय आदिवासी टोला,मधुरा
तिरसकुण्ड ,अररिया

प्राथमिक विद्यालय कोठिया कन्या ,झंझारपुर,
मधुबनी

मध्य विद्यालय भनरा,चाँदन
बाँका

प्राथमिक विद्यालय बक्शीडीह, फलका
कटिहार

उत्क्रमित मध्य विद्यालय बरहरवा खास
कोटवा,पूर्वी चंपारण

नव प्राथमिक विद्यालय बलरा
दुसाध टोली,गोपालगंज

राजकीयकृत उच्च माध्यमिक विद्यालय
कुढ़नी मुज़फ़्फ़रपुर

- डॉ० पूनम कुमारी

सिसकियां

"क्यूं रे दीपक ! आज तुम फिर नहाकर नहीं आए!"
"कपड़े कितने अस्त-व्यस्त हैं तुम्हारे......बाल भी नहीं बनाए हो!"
"तुमसे कितनी बार कहा है कि नहाकर, अच्छे से बाल बनाकर विद्यालय आया करो!!!
"तुम्हें समझ नहीं आती???"

"तीसरी कक्षा में चले गए हो ! इतनी भी समझ नहीं है कि विद्यालय कैसे आना चाहिए .....चलो हाथ आगे करो...... बिना छड़ी खाएं तुम्हें समझ नहीं आएगी......"

दीपक ने डरते -सहमते हाथ आगे बढ़ाई.....'सट' की आवाज के साथ अध्यापिका का ग़ुस्सा दीपक के हाथ पर चस्पा हो गया।

चोट दीपक के हाथ पर लगने के बदले उसके दिल पर लगी शायद...... उसके आंखों से गंगा-जमुना बह निकली........
सुबकते हुए उसके मुंह से निकला -"कल शाम को मम्मी का एक्सीडेंट हो गया..... पापा कल से मम्मी के साथ में ही है...............।
उस कक्षा में दो लोगों की सिसकियां काफ़ी देर तक गुंजती रहीं...........

हमारी अन्य लोकप्रिय पत्रिकाएँ

- टीचर्स ऑफ बिहार

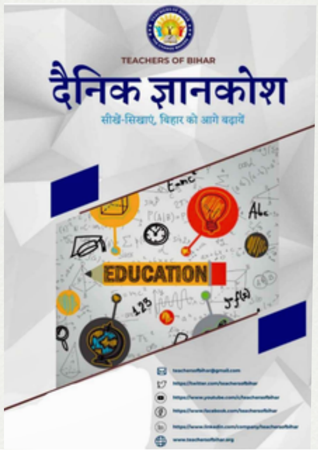

अगर आप एक शिक्षक या शिक्षा के अन्य हितधारक हैं और शिक्षा में अपने नवाचार, अनुभव या विचारों को साझा करना चाहते हैं, तो 'प्रज्ञानिका' आपके लिए एक बेहतरीन मंच है।
इस पत्रिका के माध्यम से आप अपने शैक्षिक प्रयोगों, अध्यापन पद्धतियों और नवाचारों को पूरे देश में पहुँचा सकते हैं।

आपको यह अंक कैसा लगा? अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें -
https://forms.gle/WPHrN8f1wuPsUTBXA

हमसे जुड़ने के लिए दिए गए लिंक पर क्लिक करें या QR कोड स्कैन करें।

PRAGYANIKA
WhatsApp group

व्हाट्सएप से जुड़ने के लिए क्लिक करें

ईमेल: writers.teachersofbihar@gmail.com
वेबसाइट : www.teachersofbihar.org/pragyanika

PRAGYANIKA
WhatsApp group

Facebook Group
@teachersofbihar

X
@teachersofbihar

Instagram
@teachersofbihar

YouTube
@teachersofbihar

@group/teachersofbihar
@teachersofbihar
@teachersofbihar
@teachersofbihar